DEDICATED
with

ETERNAL, INFINITE & IMPERISHABLE
Divine **LOVE**

to

MOST BELOVED Incorporeal God Father **SHIVA**

and

Brahma Baba & Saraswati Mama

सच्ची गीता

व

झूठी गीता

का

CONTRAST

Spiritual Research Index **Section A**

	Page
01 - बाप का निश्चय	5
02 - शिवबाबा रोज़, पढ़ाने के लिए, परमधाम से आते हैं	7
03 - जगदम्बा – मम्मा (ओम राधे) – Part 1	9
04 - जगदम्बा – मम्मा (ओम राधे) – Part 2	10
05 - शंकर का कोई साकार पार्ट है नहीं	11
06 - ‘हर-हर महादेव’, शिव को ही कहेंगे	13
07 - राम फ़ैल हुआ - अंतिम स्टेज में	14
08 - शिवलिंग एक निराकार शिव का ही यादगार है - कोई देहधारी का नहीं	15
09 - सिर्फ दो नम्बर आउट हुए हैं, (ब्रह्मा) बाप (लेखराज) और (सरस्वती) माँ (ओम राधे)	17
10 - मुकर्रर रथ कभी बदली नहीं हो सकता	19
11 - जगदम्बा – मम्मा (ओम राधे) – Part 3	21
12 - ट्रिब्युनल (Tribunal) - सतगुरू के निंदक ठौर न पायें	23
13 - ब्रह्मपुत्रा नदी (ब्रह्मा बाबा)	26
14 - संगमयुगी ब्राह्मणों की दुनिया में राम राज्य (दिन) और रावण राज्य (रात) का ‘शूटिंग’, अर्थात ‘संस्कारों का रिफ्रेशिंग’- Part 1	28
15 - संगमयुगी ब्राह्मणों की दुनिया में राम राज्य (दिन) और रावण राज्य (रात) का ‘शूटिंग’, अर्थात ‘संस्कारों का रिफ्रेशिंग’- Part 2	30
16 - ब्रह्मा - मात-पिता - दोनों हैं	32
17 - ब्रह्मा बाबा ही (निमित्त) देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला (REAL) प्रजापिता है	34
18 - पतित-पावन - त्रेता का राम नहीं	37
19 - ‘ऊंच ते ऊंच भगवान’ - कोई भी देहधारी को नहीं कह सकते	39
20 - भगवान को न स्थूल, न सूक्ष्म शरीर है	41
21 - ‘आत्मा सो परमात्मा’ कहना रांग (wrong) है	43
25 - विनाश काले प्रीत बुद्धि पाण्डव विजयन्ती; और विनाश काले विपरीत बुद्धि कौरव व यादव विनशयन्ती	45
26 - ‘महाभारी, महाभारत लड़ाई, महाकल्याणकारी है’	47
27 - कृष्ण का जन्म राजा के पास होता है	49
28 - सूक्ष्म वतन वासी संपूर्ण ब्रह्मा और स्थूल वतन वासी प्रजापिता ब्रह्मा का पार्ट अलग-अलग है - सिर्फ 1969 के पहले	51
29 - सूक्ष्म वतन का रहस्य	53
30 - त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच	54
31 - महाशिवरात्रि अथवा त्रिमूर्ति शिव जयन्ती	56
32 - साकार ब्रह्मा बाप 1969 में कर्मातीत हुए - तो ‘फालो फादर’	58
36 - नम्बरवन है ब्रह्मा बाबा (लेखराज की आत्मा)	60
37 - संवत (01.01.0001) तब शुरू होता है, जब लक्ष्मी-नारायण तख्त पर बैठते हैं	62
39 - सच्ची गीता व झूठी गीता का संगमयुगी ब्राह्मणों की दुनिया में शूटिंग	65

Page

40 - श्रीनाथ या जगन्नाथ - आत्मा तो एक ही है 67
41 - शिवबाबा तो कभी मुरली हाथ में नहीं उठाते हैं 69
42 - ज्ञान सूर्य अथवा ज्ञान सागर, परमपिता परमात्मा शिव को ही कहा जाता है 71
43 - धोबीघाट 74
46 - एम-ऑब्जेक्ट (aim-object) है - नर से प्रिन्स, वा नर से नारायण बनना - बात एक ही है 76
51 - काली - जगदम्बा (ओम राधे) ही है – Part 4 78
71 - याद की विधि – SM – Part 1 81
72 - याद की विधि – AV – Part 2 83
73 - मनुष्य सृष्टि का बीजरूप 85
79 - 5 मुखी ब्रह्मा - 5 स्वरूप 88
90 - फरूखाबाद 89
91 - निराकार शिव बाप है सदैव पूज्य 91
92 - निराकार शिव, ब्रह्मा (लेखराज) के साधारण तन में आते हैं 93
93 - ‘गांवड़े का छोरा’ 96
94 - कृष्ण और राधे, दोनों अलग-अलग राजधानी के हैं 97
95 - साइंस का हुनर, ब्राह्मण बच्चे ही, यहाँ ही सीखकर, सतयुग में काम में लगाते हैं 99
96 - माया के ईश्वरीय रूप 102
98 - देलवाड़ा मन्दिर 105
99 - जगन्नाथ मन्दिर 108
100 - पवित्र प्रवृत्ति मार्ग – Part 1 110
101 - पवित्र प्रवृत्ति मार्ग – Part 2 113
103 - शिव बाप लिखवाते थे, ब्रह्मा बाबा लिखते थे 116
105 - गुप्त रूप में कामधेनु है ब्रह्मा बाबा - जो ब्रह्मा को नहीं मानते, वह हुआ शूद्र 117

बाप का निश्चय

01] मैं जो हूँ, जैसा हूँ - तुम बच्चों में भी विरले कोई एक्यूरेट जानते हैं!

AV, Original 08.02.1975
बाप का निश्चय - जो है, जैसा है, जिस स्वरूप से पार्ट बजा रहे हैं, उसको वैसा ही जानना और मानना।

SM, Revised 12.09.2019 (Original 13.10.1968)
ऐसे कोई रथ में प्रवेश कर तुमको विश्व का मालिक बनने की युक्ति बताये, यह और कोई हो नहीं सकता। **तब बाप कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, मुझे कोई भी नहीं जानते। मैं जब अपना परिचय दूँ तब जान सकते हैं।**

SM, Revised 12.09.2019 (Original 13.10.1968)
बाप कहते हैं मेरे को विरला कोई जानते हैं। **मैं जो हूँ, जैसा हूँ - तुम बच्चों में भी विरले कोई एक्यूरेट जानते हैं। उनको अन्दर में बहुत खुशी रहती है।**

SM, Revised 07.08.2019
'राम' तो कहा जाता है शिवबाबा को - 'राम-राम' कह राम नाम का दान देते हैं। अब कहाँ राम, कहाँ शिवबाबा। अब शिवबाबा तुम बच्चों को कहते हैं, मामेकम् याद करो। जहाँ से आये हो वहाँ ही फिर जाना है; जब तक बाप को याद कर पवित्र नहीं बनेंगे तो वापिस भी जा नहीं सकेंगे। **तुम्हारे में भी कोई विरले हैं, जो अच्छी रीति बाप को याद करते हैं।**

SM, Original 07.09.1967 (रात्रि क्लास)
जब ब्रह्मा बाबा को ही इतनी मेहनत करनी पड़ती है, तो और ब्रह्माकुमार-कुमारियों का क्या हाल होगा? उनको तो और भी जास्ती मेहनत करनी पड़े। एक होता है मेहनत करना, और एक होता है मोहब्बत में रहना। मोहब्बत में कौन रहेंगे, और मेहनत कौन करेंगे महसूस? **मेहनत वो महसूस करते हैं, जो बाप के असली स्वरूप को पहचान नहीं पाते। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, और जिस रूप में अंत तक पार्ट बजाता हूँ, उस रूप को कोई विरले बच्चे हैं, जो जान पाते हैं।**
अच्छा, good night. ओमशान्ति।

SM, Revised 09.10.2018
भगवान् तो अलग चीज़ है ना। यही मनुष्यों की भूल है, जिस कारण दु:ख भोग रहे हैं। तुम्हारे में भी कोई विरले बाप को जानते हैं। माया घड़ी-घड़ी भुला देती है। **बाप तो बार-बार कहते हैं, तुमको श्रीमत देते हैं कि अपने को आत्मा समझो, और मुझ बाप को याद करो।** यह है श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत। बाप की श्रीमत से मनुष्य नर से नारायण, पतित से पावन बनते हैं।

SM, Revised 22.06.2017
'शिव बाबा' अक्षर शोभा देता है, 'रूद्र बाबा' भी नहीं कहेंगे। कहते ही हैं, 'शिव बाबा'। यह बहुत इजी है। **नाम तो और भी ढेर हैं। परन्तु यह एक्यूरेट है 'शिव बाबा'। शिव माना बिन्दी।** रूद्र माना बिन्दी नहीं। भल कहते भी हैं, 'शिव बाबा', परन्तु समझते कुछ भी नहीं। शिव बाबा और तुम सालिग्राम हो।

SM, Revised 23.12.2016
आत्मा छोटी बिन्दी है। बाप भी बिन्दी है। अपने को छोटी बिन्दी समझ, और बाबा को याद करना बहुत मेहनत है। मोटे हिसाब में तो कह देते – शिवबाबा, हम आपको बहुत याद करते हैं। परन्तु एक्यूरेट बुद्धि में याद रहनी चाहिए। **बड़ा धैर्य व गम्भीरता से याद करना होता है। इस रीति कोई मुश्किल याद करते हैं। इसमें बहुत मेहनत है।**

SM, Revised 26.05.2016

तुम्हारे में भी कोई हैं जो अच्छी रीति याद करते हैं। कई तो कहते हैं, 'बाबा, किसको याद करें? बिन्दी को कैसे याद करें? बड़ी चीज को याद किया जाता है।' अच्छा - परमात्मा, जिसको तुम याद करते हो, वह चीज क्या है? तो कह देते अखण्ड ज्योति स्वरूप है। परन्तु ऐसे नहीं है। अखण्ड ज्योति को याद करना रांग हो जाता है। **याद तो एक्यूरेट चाहिए। पहले एक्यूरेट जानना चाहिए।**

<u>शिवबाबा रोज़, पढ़ाने के लिए, परमधाम से आते हैं</u>

02] ऊंचे ते ऊंचे धाम से, ऊंचे ते ऊंचे भगवन, रोज़ ऊंचे ते ऊंचे बच्चों को पढ़ाने आते हैं; बच्चों के लिए, रोज़ बाप, शिक्षक बन पढ़ाने आते हैं - उनका तो सेकण्ड में आना-जाना होता है!

AV, Original 11.03.1981
सबसे दूरदेशी कौन हैं? आप तो फिर भी साकारी लोक से आये हो, **बाप-दादा आकारी लोक से भी परे, निराकारी वतन से आकारी लोक में आये, फिर साकार लोक में आये हैं। तो सबसे दूरदेशी बाप हुआ, या आप हुए?** इस लोक से हिसाब से, जो सबसे ज्यादा दूर से आये हैं, उन्हों को भी बाप-दादा स्नेह से मुबारक दे रहे हैं। सबसे दूर से आने वाले हाथ उठाओ। जितना दूर से आये हो, जितने मालइ (mile) चलकर आये हो, उतने माइल से पदमगुणा एड (add) करके मुबारक स्वीकार करें।

AV, Original 23.12.1983
आप सब भी दूरदेश से आये हो - तो बापदादा भी दूरदेश से आये हैं। सबसे दूर से दूर, और नज़दीक से नज़दीक, बापदादा का देश है। दूर इतना है - जो इस साकार दुनिया की बाउण्ड्री (boundary) से बहुत दूर है। लोक ही दूसरा है। **आप सभी साकार लोक से आये हैं - और बापदादा साकार लोक से भी परे परलोक से वाया सूक्ष्मवतन ब्रह्मा बाप को साथ लाये हैं। और नज़दीक भी इतना है, जो सेकण्ड में पहुँच सकते हो ना।** आप लोगों को आने में कितने घण्टे लगते हैं, और कितना मेहनत का कमाया हुआ धन देना पड़ा। कितना समय लगा धन इकठठा करने में? और बाप के वतन से आने और जाने में खर्चा भी नहीं लगता है।

AV, Original 18.01.1987
यह अव्यक्त मिलन इस सारे कल्प में अब एक ही बार संगम पर होता है। सतयुग में भी देव मिलन होगा - लेकिन फरिश्तों का मिलन, अव्यक्त मिलन इस समय ही होता है। **निराकार बाप भी अव्यक्त ब्रह्मा बाप के द्वारा मिलन मनाते हैं। निराकार को भी यह फरिश्तों की महफिल अति प्रिय लगती है, इसलिए अपना धाम छोड़ आकारी वा साकारी दुनिया में मिलन मनाने आये हैं।**

AV, Original 31.01.1998
कितना बड़ा भाग्य है, जो स्वयं बाप अपना परमधाम छोड़कर आपको शिक्षा देने के लिए आते हैं। **ऐसे कभी सुना कि भगवान रोज़, अपने धाम को छोड़, पढ़ाने के लिए आते हैं? आत्मायें चाहे कितना भी दूर-दूर से आयें - परमधाम से दूर और कोई देश नहीं है।** है कोई देश? अमेरिका, अफ्रीका दूर है? परमधाम ऊंचे ते ऊंचा धाम है। **ऊंचे ते ऊंचे धाम से, ऊंचे ते ऊंचे भगवन, ऊंचे ते ऊंचे बच्चों को पढ़ाने आते हैं।**

AV, Original 24.02.1998
सबसे दूर देश वाले कौन? बाप या आप? आप कहेंगे - हम बहुत दूर से आये हैं, लेकिन **बाप कहते हैं, मैं आपसे भी दूरदेश से आया हूँ। लेकिन आपको समय लगता है, बाप को समय नहीं लगता है। आप सबको प्लैन या ट्रेन लेनी पड़ती है, बाप को सिर्फ रथ लेना पड़ता है।** तो ऐसे नहीं कि सिर्फ आप, बाप का मनाने आये हैं, लेकिन बाप भी, आदि साथी ब्राह्मण आत्मायें, जन्म के साथी बच्चों का बर्थ डे मनाने आये हैं, क्योंकि बाप अकेला अवतरित नहीं होते, लेकिन ब्रह्मा, ब्राह्मण बच्चों के साथ दिव्य जन्म लेते अर्थात् अवतरित होते हैं।

AV, Original 30.03.1998
कितना आप आत्माओं का भाग्य है, जो स्वयं बाप अपने वतन को छोड़, आप गॉडली स्टूडेन्टस को पढ़ाने आते हैं। **ऐसा कोई टीचर देखा, जो रोज़ सवेरे-सवेरे दूरदेश से पढ़ाने के लिए आवे?** ऐसा टीचर कभी देखा? **लेकिन आप बच्चों के लिए रोज़ बाप, शिक्षक बन, आपके पास पढ़ाने आते हैं, और कितना सहज पढ़ाते हैं। दो शब्दों की पढ़ाई है - आप और बाप** - इन्हीं दो शब्दों में चक्कर कहो, ड्रामा कहो, कल्प वृक्ष कहो, सारी नॉलेज समाई हुई है।

AV, Original 17.02.2011

परमधाम से बापदादा आता है सूक्ष्मवतन से ब्रह्मा बाबा आता है और आके महावाक्य उच्चारण करते हैं - इसलिए मुरली कभी भी एक दिन भी मिस नहीं करना। अपना बापदादा का दिलतख्त छूट जायेगा। इसलिए जो भी मुरली मिस करते हैं वह समझें, हम तीन तख्त के मालिक नहीं, दो तख्त के मालिक भी यथाशक्ति बनेंगे। इसलिए मुरली, मुरली, मुरली। क्योंकि मुरली में रोज के डायरेक्शन होते हैं, चार ही सबजेक्ट के डायरेक्शन होते हैं - तो रोज के डायरेक्शन लेने हैं ना। तो **जो भी मिस करता हो कारणे-अकारणे वह अपना प्रोग्राम बनावे कि कैसे मुरली सुनें। कोई न कोई सैलवेशन बनायें। आजकल साइंस के साधन आपके लिए निकले हैं।** ब्रह्मा बाप में प्रवेशता के 100 साल पहले यह साइंस निकली है - आपके काम में भी आनी है, इसलिए उसको यूज (use) करो फायदा उठाओ।

AV, Original 02.02.2011

तो बापदादा - आज देश विदेश, कितने देशों से सभी बच्चे आके इकट्ठे हुए हैं, लेकिन **सबसे दूर से आने वाला कौन? क्या अमेरिका वाले दूर से आये हैं?** अमेरिका वाले दूर से आये हैं ना! और बाप कहाँ से आया है? **अमेरिका तो इसी लोक में है, लेकिन बापदादा कहाँ से आये हैं? परमधाम से - ब्रह्मा बाप भी सूक्ष्मवतन से आये हैं।** तो कौन दूर से आया? सबसे दूर कौन? यह है बाप और बच्चों के प्यार का नजारा।

SM, Revised 26.09.2019 (Original 25.09.1968)

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति बाप समझाते हैं। **यह तो बच्चे जानते हैं कि रूहानी बाप परमधाम से आकर हमको पढ़ा रहे हैं।** ... बेहद का बाप ही भारत में, इस साधारण तन में आकर तुम बच्चों को समझाते हैं। ...

अब रूहानी बाप हमको पढ़ाने आते हैं। यह भी जानते हो यह कोई ऑर्डनरी बाप नहीं है। यह है रूहानी बाप, जो हमको पढ़ाने आया है। उनका निवास स्थान सदैव ब्रह्मलोक में है। लौकिक बाप तो सबके यहाँ हैं। ...

ऊंच ते ऊंच भगवान कहा जाता है। परन्तु वह कौन है, किसको कहा जाता है, यह कुछ भी समझते नहीं हैं।

SM, Revised 25.07.2015 / 06.07.2020

बाबा कहते हैं - बच्चे, मैं इस बैल पर (रथ पर) सदैव सवारी करूँ, इसमें मुझे सुख नहीं भासता है। मैं तो तुम बच्चों को पढ़ाने आता हूँ। ऐसे नहीं, बैल पर सवारी कर बैठे ही हैं। रात-दिन बैल पर सवारी होती है क्या? उनका तो सेकण्ड में आना-जाना होता है। सदैव बैठने का कायदा ही नहीं। बाबा कितना दूर से आते हैं पढ़ाने के लिए, घर तो उनका वह है ना। सारा दिन शरीर में थोड़ेही बैठेगा, उनको सुख ही नहीं आयेगा। जैसे पिंजड़े में तोता फँस जाता है। मैं तो यह लोन लेता हूँ तुमको समझाने के लिए। तुम कहेंगे ज्ञान का सागर बाबा आते हैं हमको पढ़ाने के लिए। खुशी में रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। वह खुशी फिर कम थोड़ेही होनी चाहिए। यह धनी तो स्थाई बैठे हैं। **एक बैल पर दो की सवारी सदैव होगी क्या? शिवबाबा रहता है अपने धाम में। यहाँ आते हैं, आने में देरी थोड़ेही लगती है। रॉकेट देखो कितने तीखे होते हैं। आवाज़ से भी तीखे।** आत्मा भी बहुत छोटा रॉकेट है। आत्मा भागती कैसे है, यहाँ से झट गई लण्डन। एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति गाई है। बाबा खुद भी रॉकेट है। **कहते हैं मैं तुमको पढ़ाने के लिए आता हूँ। फिर जाता हूँ अपने घर।** इस समय बहुत बिजी रहता हूँ। दिव्य दृष्टि दाता हूँ, तो भक्तों को राज़ी करना होता है। तुमको पढ़ाता हूँ।

जगदम्बा – मम्मा (ओम राधे) – Part 1

03] मम्मा 1965 के बाद जन्म लेकर पार्ट बजा रही है!

AV, Original 02.02.1969
आप सभी के मन में तो होगा ही कि हमारी मम्मा कहाँ गयी? **अभी यह राज इस समय स्पष्ट करने का नहीं है। कुछ समय के बाद सुनाएंगे की वह कहाँ, और क्या कर रही है। स्थापना के कार्य में भी मददगार है; लेकिन भिन्न नाम रूप से।**

See link -
http://pbks.info/Streaming/MP3/bma/orgl/1968/may/31-5-68.pdf
SM, Original 31.05.1968 (beginning of page 4)
इसलिए ग़रीब बहुत आते हैं। जो दो कणा भी देते हैं, तो भी मिलता बहुत है। **मम्मा का मिसाल है। जल्दी ही चले जाते हैं; क्योंकि योग नहीं है। कर्मातीत अवस्था न बनी। बाकी जो कमाई की है, चली नहीं जाती। जन्म हुआ है, तो भी बहुत ऊँच घर में। जहां सर्विस कर रही है।** इनके चरित्र ही ऐसे हैं। फिर भी बहुत ताकत ले गई है ना। बेहद की बाप की ताकत ली। आत्मा में ताकत होगी तो चरित्र भी ऐसे ही चलेंगे।

SM, 01.05.1968 - रात्रि क्लास (beginning of page 1)
जो सपूत बच्चे सर्विसएबुल हैं, उनको जास्ती याद करते हैं। यूँ तो सभी बच्चे हैं, उनमें जो जास्ती सर्विस करते हैं। **जैसे मम्मा की आत्मा गई। मम्मा कहने से, शरीर पहले याद आता है। फिर समझा जाता है, आत्मा चली गई। तुम अनुभव सुनाते हो, बाप भी सुनाते हैं। बाप जब आते हैं, तो मम्मा की आत्मा को याद करेंगे। बहुत अच्छी सर्विस करती थी। बहुतों का कल्याण किया। ड्रामा अनुसार उनको शरीर छोड़ना था। जहाँ भी होगी, वहाँ अच्छा ही पार्ट बजाती होगी।**

SM, 07.05.1968 - रात्रि क्लास (end of page 1)
तुम संस्कार ले जाते हो राजयोग की; इसलिए तुम जितना-जितना याद में रह, आप समान बनाते हो, उतना ऊँच जन्म। **जो बच्चे जल्दी गये हैं, सो कर्मातीत अवस्था में नहीं गये; क्योंकि योग में कमी थी। भल अनन्य बच्चे जाते हैं - क्यों गये, योग की कमी ड्रामा में थी। हो सकता है आत्मा में संस्कार ऐसे हैं। एक तो जन्म अच्छा, और फिर आत्मा में संस्कार - गई, तो आत्मा की एक्टिविटी ऊँच होगी। जहां भी जावेंगे, प्रभाव रहता है। ताकत भी रहती है, ज्ञान और योग की।**

SM, Revised 30.08.2003
मम्मा का भी कोई कार्य अर्थ इस समय जाने का था, यह भी ड्रामा है। कोई भी अपनी अवस्था अनुसार शरीर छोड़े, तो उनका कल्याण है। बहुत अच्छे घर में जन्म लेकर के वहां भी कुछ अपनी ख़ुशी देंगे।

जगदम्बा – मम्मा (ओम राधे) – Part 2

04] जगदम्बा कुमारी है; भारत में वन गवर्मेन्ट की स्थापना करने वाली हेड है; स्वर्ग का द्वार खोलती है; उनके द्वारा शिवबाबा से 21 जन्मों का वर्सा मिलता है!

SM, Revised 28.12.2018
बाप बैठ समझाते हैं, **यह जगदम्बा कौन है, यह है भारत की सौभाग्य विधाता, इनकी शिव शक्ति सेना भी मशहूर है। हेड (Head) है जगदम्बा अर्थात् भारत में वन गवर्मेन्ट की स्थापना करने वाली हेड।** भारत माता शक्ति अवतारों ने भारत में वन गवर्मेन्ट स्थापन की है, श्रीमत के आधार पर।

SM, Revised 20.12.1988
वास्तव में स्वर्ग का द्वार खोलती है यह जगदम्बा, फिर पहले वह खुद ही जगत की मालिक बनती है, तो जरूर माँ के साथ तुम बच्चे भी हो।

SM, Revised 27.10.1996
वह जगदम्बा मम्मा है ना? उनसे तुम स्वर्ग का वर्सा लेते हो। देने वाला है शिवबाबा, जो ब्रह्मा-सरस्वती द्वारा देते हैं।

SM, Revised 26.07.2018
फिर गाया जाता है, 'जगदम्बा आदि देवी और ब्रह्मा आदि देव'। एडम-ईव - यह दोनों अब काले हैं, फिर गोरे बनने हैं। **दुनिया इन बातों को नहीं जानती। काली, दुर्गा, अम्बा - सब एक के ही नाम हैं। सच्चा नाम सरस्वती है।**

SM, Revised 08.07.1993
जगदम्बा की बड़ी महिमा है। अम्बा बड़ी मीठी लगती है क्योंकि कुमारी है।

SM, Revised 23.08.2018
भारत में कुमारियों की बहुत मान्यता है, पूजते हैं। **जगदम्बा भी कुमारी है ना। कुमारी को फिर जगदम्बा कहना, इसका भी अर्थ चाहिए ना।**

SM, Revised 14.05.2018
यह तो बड़ा बाप है। बेहद का घर है। **यह मात-पिता है, फिर तुम बच्चों को सम्भालने के लिए जगदम्बा को निमित्त रखा है।** कुमारी मम्मा में ज्ञान-योग की ताकत भरी हुई है।

SM, Revised 01.05.2017
तुम जानते हो अभी का यह जन्म भविष्य के जन्म से भी ऊंच हैं। यहाँ, हम ईश्वरीय औलाद बने हैं। सतयुग में दैवी औलाद होंगे। यहाँ की महिमा जास्ती है। **जगदम्बा से 21 जन्मों का वर्सा मिलता है। लक्ष्मी से क्या मिलता है? इन बातों को नया कोई समझ न सके।**

शंकर का कोई साकार पार्ट है नहीं

05] शंकर का हड्डी मास का शरीर नहीं है; शंकर जन्म-मरण से न्यारा है; शंकर का कोई साकार पार्ट है नहीं; शंकर की कोई बॉयोग्राफी नहीं है; शंकर को 'बाबा' नहीं कहेंगे; 'भोलानाथ' - शंकर को नहीं कहेंगे; शंकर तो साकार में आते नहीं; शिव बाप, शंकर में नहीं आते!

SM, Revised 31.01.2013 / 13.01.2018
ब्रह्मा विष्णु शंकर को भी हड्डी मास नहीं है, फिर उन्हों के चित्र कैसे बनाते हैं? शिव का भी चित्र बनाते हैं। है तो वह स्टॉर। उनका भी रूप बनाते हैं। **ब्रह्मा विष्णु शंकर तो सूक्ष्म हैं। जैसे मनुष्यों का बनाते हैं, वैसे शंकर का तो बना न सकें क्योंकि उनका हड्डी मास का शरीर तो है नहीं।**

SM, Revised 16.05.2020
अभी तुम जानते हो विनाश तो ड्रामा अनुसार होना ही है। आपस में लड़कर विनाश हो जायेंगे। बाकी शंकर क्या करते हैं? यह ड्रामा अनुसार नाम रख दिया है। तो समझाना पड़ता है - ब्रह्मा-विष्णु-शंकर तीन हैं; स्थापना के लिए ब्रह्मा को रखा है, पालना के लिए विष्णु को, विनाश के लिए शंकर को रख दिया है। वास्तव में यह बना बनाया ड्रामा है। **शंकर का पार्ट कुछ भी है नहीं। ब्रह्मा और विष्णु का पार्ट तो सारे कल्प में है।** ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। ब्रह्मा के भी 84 जन्म पूरे हुए, तो विष्णु के भी पूरे हुए। **शंकर तो जन्म-मरण से न्यारा है, इसलिए शिव और शंकर को फिर मिला दिया है।** वास्तव में शिव का तो बहुत पार्ट है, पढ़ाते हैं।

SM, Revised 11.05.2020
ऊंच ते ऊंच है बाप, पीछे है ब्रह्मा और विष्णु। **शंकर का इतना कोई पार्ट है नहीं। विनाश तो होना ही है। बाप तो विनाश उनसे कराते हैं, जिस पर कोई पाप न लगे। अगर कहें भगवान विनाश कराता है, तो उस पर दोष आ जाए, इसलिए यह सब ड्रामा में नूँध है।**

SM, Revised 22.10.2019 (Original 25.11.1968)
पार्ट बजाने के लिए तो सब यहाँ आते हैं। यह भी समझाया है, विष्णु के दो रूप हैं। **शंकर का तो कोई पार्ट है नहीं। यह सब बाप बैठ समझाते हैं।**

SM, Revised 19.07.2019
शंकर के लिए भी बताया है, उनका कोई पार्ट है नहीं। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा, यह 84 का चक्र है। शंकर फिर कहाँ से आया। उनकी रचना कहाँ है। बाप की तो रचना है, वह सब आत्माओं का बाप है, और ब्रह्मा की रचना हैं सब मनुष्य। **शंकर की रचना कहाँ है? शंकर से कोई मनुष्य दुनिया नहीं रची जाती।**

SM, Revised 02.07.2019
शंकर का तो कुछ भी पार्ट है नहीं। उनकी बॉयोग्राफी नहीं है, शिवबाबा की तो बायोग्राफी है।

SM, Revised 19.10.2018
बाप समझाते हैं - कहते भी हैं, निराकार शिवबाबा। **ब्रह्मा को भी 'बाबा' कहते हैं, विष्णु वा शंकर को 'बाबा' नहीं कहेंगे। शिव को हमेशा 'बाबा' कहते हैं। शिव का चित्र अलग, शंकर का चित्र अलग है।**

SM, Revised 29.09.2017
ब्रह्मा को प्रजापिता कहते हैं। विष्णु को प्रजापिता नहीं कहेंगे। ब्रह्मा द्वारा तो एडाप्ट किया जाता है। विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण के तो बच्चे पैदा होते हैं, जो तख्त पर बैठते हैं। **शंकर को भी प्रजापिता नहीं कहेंगे।**

SM, Revised 13.05.2017
शंकर का पार्ट सूक्ष्मवतन तक है। यहाँ स्थूल सृष्टि पर आकर पार्ट बजाने का नहीं है, न पार्वती को अमरकथा सुनाते हैं। यह सब भक्ति मार्ग की कथायें हैं।

SM, Revised 07.11.2016
मुख्य बात ही एक है ऊंचे ते ऊंचे भगवान की। **'ऊंचे ते ऊंचा' ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को नहीं कहेंगे। ऊंचे ते ऊंच बाप से ही वर्सा मिलता है। वही पतित-पावन है। यह बात पक्की कर लो। 'गॉड इज वन'!**

SM, Revised 08.11.1997
'भोलानाथ' शंकर को नहीं कहेंगे क्योंकि शंकर आदि-मध्य-अंत का राज़ नहीं समझाते हैं। वह तो भोलानाथ ही बताते हैं। भोलानाथ वर्सा देते हैं - शंकर वर्सा नहीं देते। ऐसे भी नहीं शंकर कोई शांति देते हैं। नहीं! शांति देने के लिए भी साकार में आकर समझाना पड़े। शंकर तो साकार में आते नहीं।*

SM, Original 09.07.1964
बाप कहते हैं, मैं इनमे प्रवेश करता हूँ, तुम्हारे में प्रवेश नहीं करता। **विष्णु व शंकर में तो नहीं आवेगा; प्रजापिता ब्रह्मा में, यहाँ आना है।**
See page 2, first 2 lines from top: http://pbks.info/Streaming/MP3/bma/scan/139.pdf

'हर-हर महादेव', शिव को ही कहेंगे

06] 'हर-हर महादेव', शिव को ही कहेंगे - न की शंकर को; 'देव-देव महादेव', माना शिव - ब्रह्मा-विष्णु-शंकर से भी ऊंच है; शंकर महादेव नहीं है - 'दु:ख हर्ता' तो शिव बाप ही है, न की शंकर!

SM, Revised 20.07.2018
गाते हैं – 'हर-हर', अर्थात् दु:ख को हरो। भगवान् के लिये ही गाते हैं। परन्तु भगवान् का पता न होने कारण - ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के लिये कह देते हैं, 'देव-देव महादेव'। शिव को भूल, शंकर के लिये कह देते, 'हर-हर महादेव ..'। ब्रह्मा और विष्णु को 'महादेव' नहीं कहेंगे। वह तो दोनों स्थूल पार्ट में आते हैं। **शंकर सूक्ष्मवतन में ही रहता है। दु:ख हरने वाला पतित-पावन तो एक निराकार (शिव) भगवान् है।** शंकर को 'पतित-पावन' नहीं कहेंगे। महिमा सारी एक (शिव) की है।

SM, Revised 08.01.2019 (Original 30.01.1968)
मनुष्यों ने तो शिव और शंकर को मिलाकर एक कर दिया है। कहते हैं, शंकर ने आँख खोली तो विनाश हो गया। अब विनाश तो बाम्बस से, नैचुरल कैलेमिटीज़ से होता है। **'शिव शंकर महादेव' कहते हैं। यह चित्र कोई यथार्थ नहीं है।**

SM, Revised 31.10.2018
मेरे नाम तो ढेर रख दिये हैं। **कहते हैं, 'हर-हर महादेव'; सबके दु:ख काटने वाला, वह भी मैं ही हूँ, शंकर नहीं है।**

SM, Revised 16.10.2018
बाप है पार करने वाला, उनको 'खिवैया, बागवान' भी कहा जाता है। तुमको कांटे से फूल बनाकर स्वर्ग में भेज देते हैं। फिर स्वर्ग में तुम कभी दु:ख नहीं देखेंगे, इसलिए उनको कहते हैं, 'दु:ख हर्ता, सुख कर्ता'। **'हर-हर महादेव' कहते हैं ना। शिव को ही कहेंगे।** यह है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी बाप।

SM, Revised 31.08.2018
वास्तव में महिमा एक शिव की है। वह महिमा गाते हैं, **'देव-देव महादेव', माना तुम (शिव) ब्रह्मा, विष्णु, शंकर से भी ऊंच हो। भक्ति मार्ग में तो कोई अर्थ समझ न सके।**

SM, Revised 15.06.2018 (Original 23.06.1964)
बच्चे जानते हैं आधा-कल्प के दु:ख दूर करने वाला आया हुआ है। **'हर-हर महादेव' कहते हैं। अब वह (शंकर) महादेव नहीं है, दु:ख तो (शिव) बाप ही हरेंगे। दु:ख हर कर सुख देने वाला, बाप है।**

SM, Revised 07.10.2017
'गाड इज वन'। दूसरे नाम निशान नहीं। ऊंचे ते ऊंचा है ही एक शिवबाबा। फिर कहते हैं, 'त्रिमूर्ति ब्रह्मा'। त्रिमूर्ति में ब्रह्मा को जास्ती रखते हैं। **'त्रिमूर्ति शंकर' नहीं कहेंगे।* गाया भी जाता है, 'देव-देव महादेव'। पहले ब्रह्मा आता है। इन तीन देवताओं में नम्बरवन है ब्रह्मा। ब्रह्मा को ही गुरू कहते हैं। *शंकर को वा विष्णु को कभी गुरू नहीं कहेंगे।** त्रिमूति में मुख्य ब्रह्मा है।

SM, Revised 23.05.2017
शिवबाबा को कहते हैं, 'बम-बम महादेव'। 'बम-बम' अर्थात् 'शंखध्वनि कर हमारी झोली भर दो'। नॉलेज बुद्धि में रहती है ना। आत्मा में ही संस्कार हैं।

राम फ़ैल हुआ - अंतिम स्टेज में

07] अंतिम स्टेज में, राम फ़ैल (fail) हुआ; अंतिम स्टेज में, राम ने पूरी जीत नहीं पाई; इसीलिए राम चंद्रवंशी में राज्य पद पाते हैं; राम की आत्मा यहाँ (संगम युग में, FINAL) इम्तहान में ना पास होती है, इसीलिए राम को बाण की निशानी दी है!

SM, Original 20.05.1964
राम को भी पहले लक्ष्मी-नारायण का दास-दासी बनना पड़े, क्योंकि लक्ष्मी-नारायण फ़ुल्ल (full) पास हुए। वह (राम) फ़ैल (fail) हुआ; इसीलिए उनको क्षत्रिय कहते हैं। शास्त्र-वादियों ने फिर हिंसा की निशानी दे दी है।

SM, Original 08.06.1964
रामचंद्र को क्षत्रियपन की निशानी दी है। बरोबर युद्ध के मैदान में था; परन्तु पूरी जीत न पाने कारण फ़ैल (fail) हो गया, इसीलिए सूर्यवंशी बन न सका। … **परन्तु ना पास हुए हैं, इसीलिए तो पास हुए जो लक्ष्मी-नारायण हैं, उनके आगे भरी धोते हैं।**

SM, Revised 16.09.1982 / 11.10.1987
वैसे बच्चों को निश्चय है हम नर से नारायण, नारी से श्री लक्ष्मी बनेंगे। **हम फ़ैल (fail) नहीं होंगे जो क्षत्रिय बने। राम फ़ैल (fail) हुआ, 33 मार्क्स से भी कम मार्क्स मिले, तो चंद्रवंशी में चले गए।**

SM, Revised 15.02.2020
पढ़ाने वाला तो एक ही है। हर एक की अपनी-अपनी तकदीर है। कोई तो स्कॉलरशिप ले लेते हैं, कोई फेल हो जाते हैं। **राम को बाण की निशानी क्यों दी है? क्योंकि नापास हुआ। यह भी गीता पाठशाला है** - कोई तो कुछ भी मार्क्स लेने लायक नहीं। मैं आत्मा बिन्दी हूँ, बाप भी बिन्दी है, ऐसे उनको याद करना है। जो इस बात को समझते भी नहीं हैं, वह क्या पद पायेंगे?

SM, Revised 16.09.2019 (Original 09.10.1968)
अब रामचन्द्र की पूजा करते हैं, उनको यह भी पता नहीं है कि राम कहाँ गया। **तुम जानते हो कि श्रीराम की आत्मा तो जरूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी। यहाँ इम्तहान में ना पास होती है। परन्तु कोई न कोई रूप में होगी तो जरूर ना। यहाँ ही पुरूषार्थ करते रहते हैं।** इतना नाम बाला है राम का, तो जरूर आयेंगे, उनको नॉलेज लेनी पड़ेगी।

[पुरुषार्थी स्टेज का यादगार नहीं बनता। अंतिम स्टेज का यादगार बनता है।]

शिवलिंग एक निराकार शिव का ही यादगार है - कोई देहधारी का नहीं

08] सोमनाथ का मंदिर भी निराकार शिव का ही यादगार है - कोई देहधारी का नहीं; शिवलिंग भी निराकार शिव का ही यादगार है; वास्तव में, शिव है बिन्दी - बड़ा रूप सिर्फ पूजा करने के लिए बनाया है!

AV, Original 16.02.1988
आज के दिन, भक्त आत्माओं के पास, बाप के बिन्दु रूप की विशेष स्मृति रहती है। **शिव जयन्ति वा शिवरात्रि कोई साकार रूप का यादगार नहीं है। लेकिन निराकार बाप ज्योति-बिन्दु जिसको 'शिवालिंग' के रूप में पूजते हैं, उस बिन्दु का महत्त्व है।** आप सभी के दिल में भी बाप के बिन्दु रूप की स्मृति सदा रहती है। तो आप भी बिन्दु और बाप भी बिन्दु, तो आज के दिन भारत में हर एक भक्त आत्मा के अन्दर विशेष बिन्दु रूप का महत्त्व रहता है। बिन्दु जितना ही सूक्ष्म है, उतना ही शक्तिशाली है। इसलिए बिन्दु बाप को ही शक्तियों के, गुणों के, ज्ञान के सिन्धु कहा जाता है।

AV, Original 10.11.1983
कई मन्दिरों में बापदादा के कम्बाइण्ड यादगार, शिव की प्रतिमा के साथ उसी प्रतिमा में मनुष्य आकार भी दिखाते हैं। यह बापदादा का कम्बाइण्ड यादगार है।

SM, Original 11.12.1968 (Page 2)
पारलौकिक बाप आकर नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। उनकी भक्तिमार्ग में कितनी पूजा करते हैं, याद करते हैं। शिव के मंदिर तो बहुत हैं। बच्चे कहते हैं, सर्विस नहीं है। अरे, शिव के मंदिर तो जहाँ-तहाँ हैं, **वहाँ जाकर तुम पूछ सकते हो - इनको क्यों पूजते हैं? यह शरीरधारी तो नहीं है। यह है कौन? कहेंगे- परमपिता परमात्मा। इन बिगर और कुछ कहेंगे नहीं। तो बोलो - यह परमात्मा, बाप है ना!** इनको 'खुदा' भी कहते हैं, 'अल्लाह' भी कहते हैं। अक्सर करके, परमपिता परमात्मा कहा जाता है। उनसे क्या मिलने का है, यह कुछ भी पता है नहीं।

SM, Original 24.11.1966
सोमनाथ का मंदिर भी शिव का ही है। सोमरस पिलाया था, उनकी निशानी है। शिवबाबा की कितनी इज्जत रखी है। यह अब तुम जानते हो - शिव ने आकर क्या किया - क्यों उनका यादगार मंदिर बनाया है।

SM, Revised 14.07.2020
ज्ञान का सागर है। वह तो कह देते नाम-रूप से न्यारा है। अरे, ज्ञान का सागर तो जरूर ज्ञान सुनाने वाला होगा ना। **इनका रूप भी लिंग दिखाते हैं, फिर उनको नाम-रूप से न्यारा कैसे कहते!** सैकड़ों नाम रख दिये हैं। बच्चों की बुद्धि में यह सारा ज्ञान अच्छी रीति रहना चाहिए।

SM, Revised 06.06.2020
भल कहते भी हैं, 'भगवान गॉड फादर है, रचता है', परन्तु जानते नहीं हैं। **शिवलिंग का चित्र भी है, परन्तु इतना बड़ा तो वह है नहीं। यथार्थ रीति न जानने के कारण बाप को भूल जाते हैं।**

SM, Revised 12.08.2019
उस सुखधाम का मालिक तो बेहद का बाप ही बनायेंगे। उनका कोई चित्र नहीं, और सबके चित्र हैं। उनकी आत्मा का नाम फिरता है क्या? उनका नाम ही है शिव। और सबको आत्मा ही आत्मा कहते। बाकी शरीर का नाम पड़ता है। **शिवलिंग है निराकार। ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर .. यह शिव की महिमा है।**

SM, Revised 02.08.2018
शिव के मन्दिर में जाते हैं, परन्तु वहाँ तो इतना बड़ा शिवलिंग देखते हैं। यह थोड़ेही समझते हैं कि हमारा बाबा बिन्दी है। **जो बच्चे शिवबाबा को इतना बड़ा समझ याद करते हैं, वा करते होंगे - वह भी भोले हैं, क्योंकि वह भी रांग (WRONG) है। बाप समझाते हैं कि मैं बिन्दी हूँ** …

SM, Revised 26.06.2018
तुम बच्चे जानते हो, **हम आत्माओं के बाप का यहाँ यादगार है। वह निराकार हम आत्माओं का बाप है। हम साकार हैं। निराकार का भी यादगार है। तो जरूर आया होगा ना।** पतित को पावन बनाने वाला, पुराने को नया बनाने वाला। … 'गॉड इज क्रियेटर'। … 'गॉड इज वन'। 'वर्ल्ड इज वन'।

SM, Revised 06.06.2018
बाप बैठ समझाते हैं, मैं हूँ तुम आत्माओं का बाप। मेरा अवतरण भारत में ही होता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी अपना सूक्ष्म शरीर है। मेरा अवतरण भारत में ही होता है। **यादगार में शिवलिंग दिखाते हैं, लेकिन मेरा कोई इतना बड़ा रूप नहीं है। मैं हूँ स्टार।**

SM, Revised 12.05.2018
बाप है ऊंच ते ऊंच। बाकी सब हैं रचना। ब्रह्मा, विष्णु, **शंकर को परमात्मा नहीं कहेंगे।** सुप्रीम सोल एक ही बाप है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर - वह हुए सूक्ष्मवतनवासी। **चित्रों में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के आगे शिवलिंग रखते हैं क्योंकि बच्चे हैं ना। यह भी वह नहीं जानते। अभी तुम बच्चों को दिव्य दृष्टि मिली है।**

SM, Revised 22.01.2018
आत्मा तो बहुत छोटी स्टार मिसल भ्रकुटी के बीच में है। कोई इतना बड़ा ज्योतिर्लिंगम् नहीं है, जैसे मन्दिरों में रखा हुआ है। नहीं! जैसे आत्मा वैसे परमात्मा बाप है। ... तो इन बातों को अच्छी रीति समझना है। **मन्दिरों में लिंग रखा हुआ है, इसलिए समझाने के लिए हम भी शिवलिंग दिखाते हैं।**

SM, Revised 20.09.2016
समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए। मन्दिरों में जाकर समझाना चाहिए - यह शिवबाबा का यादगार है, जो शिवबाबा हमको पढ़ा रहे हैं। **शिव है वास्तव में बिन्दी। परन्तु बिन्दी की पूजा कैसे करें - फल, फूल आदि कैसे चढ़ाये जायें - इसलिए बड़ा रूप बनाया है।** इतना बड़ा रूप कोई होता नहीं। गाया भी जाता है भ्रकुटी के बीच चमकता है अजब सितारा... **बड़ी चीज हो, तो साइंस वाले झट उनको पकड़ लें।** बाबा समझाते हैं उनको परमपिता परमात्मा का पूरा परिचय मिला नहीं है - जब तक तकदीर खुले - अभी तकदीर ही नहीं खुली है। **जब तक बाप को न जानें, यह न समझें कि हमारी आत्मा बिन्दी समान है; शिवबाबा भी बिन्दी है, हम बिन्दी को याद करते हैं - ऐसे समझ याद करें, तब विकर्म विनाश हों।**

सिर्फ दो नम्बर आउट हुए हैं, (ब्रह्मा) बाप (लेखराज) और (सरस्वती) माँ (ओम राधे)

09] ब्रह्मा बाबा और सरस्वती मम्मा से ऊंच, दूसरा कोई जा न सके; सिर्फ दो नम्बर आउट हुए हैं - लेखराज और ओम राधे; ब्रह्मा-सरस्वती नम्बरवन में हैं; ब्रह्मा और मम्मा नम्बरवन पास (PASS) होते हैं; सारा मनुष्य सृष्टि में पहले नम्बर में हैं ब्रह्मा-सरस्वती!

SM, Revised 24.12.2018
जो बहुत सर्विस करेंगे, प्रजा बनायेंगे, वह पद भी अच्छा पायेंगे। (ब्रह्मा)बाबा-(सरस्वती)मम्मा से भी ऊंच चला जाना चाहिए। परन्तु जैसे (शिव) बाबा कहते हैं, वह दोनों क्रिश्चियन (अमेरिका और रूस) अगर आपस में मिल जाएं, तो विश्व के मालिक बन जायें; **ऐसे जोड़ा कोई निकले जो माँ-बाप से ऊंच जाये, सो है नहीं। जगत अम्बा (सरस्वती मम्मा), जगत पिता (ब्रह्मा बाबा) ही नामीग्रामी है। इन जैसी सर्विस कर नहीं सकेंगे।** यह निमित्त बने हुए हैं, इसलिए कभी हार्टफेल नहीं होना चाहिए। अच्छा, मम्मा-बाबा जैसा नहीं, तो सेकेण्ड नम्बर तो बन सकते हो। सर्विस पर मदार है।

AV, Original 31.10.2006
इसीलिए चाहे कोई नये भी हैं, लेकिन अभी भी तीव्र पुरूषार्थ करे - पुरूषार्थ नहीं, तीव्र (पुरूषार्थ) - तो आगे जा सकता है। क्योंकि नम्बर आउट नहीं हुआ है। **सिर्फ दो नम्बर आउट हुए हैं, (ब्रह्मा) बाप (लेखराज) और (सरस्वती) माँ (ओम राधे)। अभी कोई भी भाई बहन का तीसरा नम्बर आउट नहीं हुआ है।**

SM, Revised 14.07.2020
कृष्ण की इतनी महिमा क्यों है? क्योंकि सबसे जास्ती ब्युटीफुल बनते हैं। नम्बरवन में कर्मातीत अवस्था को पाते हैं, इसलिए नम्बरवन में गायन है। …
एक 'किंग ऑफ फ्लावर' होता है, **तो यह ब्रह्मा और सरस्वती 'किंग-क्वीन फ्लावर' ठहरे। ज्ञान और याद, दोनों में तीखे हैं। तुम जानते हो हम देवता बनते हैं। मुख्य 8 रत्न बनते हैं। पहले-पहले है फूल (शिव)। फिर युगल दाना, ब्रह्मा-सरस्वती।**

SM, Revised 11.05.2020
जगत अम्बा नम्बरवन में जाती है (ब्रह्मा बाबा के साथ-साथ)। हम भी उनको फालो करेंगे। जो बच्चे अभी मात-पिता (सरस्वती मम्मा और ब्रह्मा बाबा) के दिल पर चढ़ते हैं, वही भविष्य में तख्तनशीन बनेंगे।

SM, Revised 18.09.2018
तुम जानते हो मम्मा-बाबा, जिसको ब्रह्मा-सरस्वती कहते हो, वह नम्बरवन में हैं।

SM, Revised 21.06.2018
अब बाप कहते हैं, यह ब्रह्मा बच्चा हमको बहुत याद करता है। ज्ञान भी धारण करते हैं। **यह (ब्रह्मा) और मम्मा, नम्बरवन पास हो, फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं, इनकी डिनायस्टी बनती है।**

SM, Revised 16.06.2018
ब्रह्मा मुख वंशावली में सरस्वती नम्बरवन चली गई (ब्रह्मा बाबा के साथ-साथ)। **जगत अम्बा का बड़ा भारी मेला लगता है क्योंकि बाल ब्रह्मचारी पवित्र है।** पवित्रता से कितना नाम बाला हो जाता है।

SM, Revised 09.01.2018
सभी आत्मायें वहाँ रहती हैं। उनमें भी, पहला नम्बर आत्मा किसकी है, जो नम्बरवन में जाते हैं? **सरस्वती की आत्मा वा ब्रह्मा की आत्मा नम्बरवन पढ़ती है।**

SM, Revised 02.05.2016
यह मनुष्य सृष्टि का सिजरा है। **पहले नम्बर में हैं ब्रह्मा-सरस्वती - आदि देव, आदि देवी।** पीछे फिर अनेक धर्म होते जाते हैं।

SM, Revised 20.11.2019 (Original 03.12.1968)
मैं तो विचित्र हूँ। तुम सभी चित्र वाले हो। मुझे रथ तो जरूर चाहिए ना। घोड़े गाड़ी में तो नहीं आयेंगे ना। **बाप कहते हैं, मैं इस तन में प्रवेश करता हूँ, जो नम्बरवन है** वही फिर नम्बर लास्ट बनते हैं।

SM, Revised 04.11.2019 (Original 03.01.1969)
तो बाप समझाते हैं, मैं उनके तन में आता हूँ, जो बहुत जन्मों के अन्त में है, पूरा 84 जन्म लेते हैं। **राजाओं का राजा बनाने के लिए, इस भाग्यशाली रथ में प्रवेश करना होता है। पहले नम्बर में है श्रीकृष्ण।** वह है नई दुनिया का मालिक।

SM, Revised 23.08.2019
भगवान तो एक ही है। कृष्ण की महिमा ही अलग है। **पहला नम्बर देवता हैं 'राधे-कृष्ण', जो स्वयंवर के बाद फिर 'लक्ष्मी-नारायण' बनते हैं।**

मुकर्रर रथ कभी बदली नहीं हो सकता

10] मुरली या वाणी, ब्रह्मा के (साकार या आकार) मुकर्रर तन द्वारा जो चली है, वही मुरली है - उसी मुरली या वाणी में ही जादू है; ड्रामा अनुसार शिव बाबा का मुकर्रर रथ सिर्फ ब्रह्मा (लेखराज) है - और किसी द्वारा (साकार या आकार में) शिव बाबा श्रीमत दे नहीं सकता; निराकार शिवबाबा का अकाल तख्त (साकार या आकार में) ब्रह्मा की भ्रकुटी है; निराकार शिवबाबा का मुकर्रर रथ कभी बदली नहीं हो सकता - दूसरे को चांस मिल नहीं सकता!

AV, Original 21.01.1969
क्लास जैसे चलती है, वैसे ही चलेगी। क्या सुनायेंगे? **जो ब्रह्मा का तन मुकरर है, तो मुरली उसी के तन द्वारा जो चली है, वही मुरली है** …
बापदादा की मुरली में ही जादू है। इसलिए जो भी मुरलियाँ चल चुकी हैं, वह सभी रिवाइज करनी हैं।

SM, Revised 16.03.2020
शरीर तो उनका मुकरर यह है ना। फिर दूसरे का हम सुनें ही क्यों?

SM, Revised 30.12.2019 (Original 12.01.1969)
विचित्र बाप ही विचित्र नॉलेज देते हैं। **विचित्र निराकार को कहा जाता है।** निराकार कैसे यह नॉलेज देते हैं। बाप खुद समझाते हैं, मैं कैसे इस तन में आता हूँ। फिर भी मनुष्य मूँझते हैं। 'क्या, एक इसी तन में आयेगा?' **परन्तु ड्रामा में यही (ब्रह्मा का साकार व आकार) तन निमित्त बनता है। ज़रा भी चेन्ज हो नहीं सकती।**

SM, Revised 20.08.2018
बाप समझाते हैं, यह रथ भी ड्रामा अनुसार मेरा मुकरर किया हुआ है। और किसी में मैं आ भी नहीं सकता हूँ। तुम भी कहते हो - बाबा, कल्प पहले भी हम आपसे इस ही मकान में, इसी ड्रेस में मिले थे, और आपसे वर्सा लिया था।

SM, Revised 31.07.2018
शिवबाबा की मत भी तो इनसे मिलती है ना? **बाबा ने समझाया - अकालमूर्त का यह रथ, अथवा तख्त, ख़ास मुकरर है।** बाबा कहते हैं - मैं इनके रथ, अथवा तख्त, का आधार लेता हूँ। बाकी, मैं किसी में भी, कभी भी प्रवेश कर, अपनी सर्विस कर लेता हूँ।

SM, Revised 19.07.2018
जरूर अनुभवी रथ चाहिये। **ड्रामा अनुसार हमारा यह रथ मुकरर है।** ऐसे नहीं कि फिर दूसरे कल्प में और रथ लूँगा। ब्रह्मा द्वारा ही स्थापना करेंगे।

SM, Revised 07.05.2018
बाबा कहते हैं, यह मेरा रथ है। 'लैण्ड लेडी' कहो या 'लैण्ड लॉर्ड' कहो - यह बड़ा विचित्र है। कैसे शिवबाबा आते हैं, कहते हैं, **यह 'लैण्ड लैडी' भी है, तो प्रजापिता भी है।** मुझ निराकार को शरीर जरूर चाहिए। हरेक को अपना-अपना रथ है। मैं कैसे रथी बनूँ। मुझे तो आना पड़ता है, पतित दुनिया में। कृष्ण तो पावन था। **ड्रामा में यह रथ मुकरर है।**

SM, Revised 04.12.2017
अभी ऊंचे ते ऊंच बाप की तुमको श्रीमत मिलती है। देते हैं ब्रह्मा के तन द्वारा, **यह बाबा का शरीर मुकरर है!**

SM, Revised 19.10.2017
तो ब्राह्मणों का बाप है - ब्रह्मा और शिव। बाप साधारण रूप में आते हैं। **यह रथ मुकरर है, भाग्यशाली रथ।** …
शिवबाबा का अकालतख्त यह ब्रह्मा है, जिसमें अकालमूर्त परमात्मा आकर बैठते हैं। आत्मा भी अकालमूर्त है। आत्मा का तख्त यह भ्रकुटी है। … तो यह भ्रकुटी, ब्रह्मा और शिवबाबा, दोनों का तख्त है।

SM, Revised 12.10.2017
सतयुग में यही नारायण था - अब फिर इनके तन में आया हूँ, इनको ही नर से नारायण बनाता हूँ। **नम्बरवन पूज्य भी यह था, अब नम्बरवन पुजारी भी यह बना है।** फिर इनका ही आलराउन्ड पार्ट है। **यह मेरा मुकरर तन है। यह चेन्ज नहीं हो सकता।** ऐसे नहीं कब दूसरे को चांस दूँ। यह ड्रामा बना बनाया है। इसमें चेन्ज नहीं हो सकती।

SM, Revised 03.12.2016
बाप ही पावन बनाने के लिए श्रीमत देते हैं, मुझे याद करो। परन्तु वह निराकार है, तो जरूर साकार में आकर श्रीमत देंगे। **बाप कहते हैं - यह मेरा शरीर भी मुकरर है। यह बदली हो नहीं सकता। यह भी नूँध है।**

SM, Original 08.01.1967
मैं इस तन में प्रवेश करता हूँ। यह मुकरर तन है। दुसरे कोई में कभी आते ही नहीं हैं।

[दादी गुलज़ार का तन सिर्फ निमित्त है - दादी गुलज़ार का तन को ‘मुकर्रर रथ’ नहीं कहेंगे।]

जगदम्बा – मम्मा (ओम राधे) – Part 3

11] शिवबाबा, ब्रह्मा-सरस्वती द्वारा, बच्चों को स्वर्ग का वर्सा देते हैं; अर्थात, बाप-दादा - मम्मा सरस्वती, जगत अम्बा द्वारा स्वर्ग का वर्सा देते हैं; भारत में वन गवर्मेन्ट की स्थापना करने वाली निमित्त हेड (head) है जगदम्बा (ओम राधे); जगत अम्बा बाल ब्रह्मचारी पवित्र है; 'भारत माता शक्ति अवतार', अन्त का यही नारा है; अब अव्यक्त रूप से निमित्त शक्ति का पार्ट है!

SM, Revised 11.05.2020
जगत अम्बा नम्बरवन में जाती है (ब्रह्मा बाबा के साथ-साथ)। हम भी उनको फालो (follow) करेंगे। जो बच्चे अभी मात-पिता (सरस्वती मम्मा और ब्रह्मा बाबा) के दिल पर चढ़ते हैं, वही भविष्य में तख्तनशीन बनेंगे।

SM, Revised 07.01.2020
यह दादा (ब्रह्मा), माँ भी है। वह (शिव) बाप तो अलग है; बाकी, यह (ब्रह्मा) माँ भी है। **परन्तु यह मेल (male) का चोला होने कारण, फिर (सरस्वती) माता मुकरर की जाती है** …

SM, Revised 30.05.2019
ब्रह्मा बैठा है, तुम जानते हो (ब्रह्मा) बाप भी है, और बड़ी मम्मा भी तो यह (ब्रह्मा) है। परन्तु मेल (male) है, **इसलिए (सरस्वती) मम्मा को मुकरर किया जाता है, कि तुम इन माताओं को सम्भालो।**

SM, Revised 16.06.2018
ब्रह्मा मुख वंशावली में सरस्वती नम्बरवन चली गई (ब्रह्मा बाबा के साथ-साथ)। **जगत अम्बा का बड़ा भारी मेला लगता है क्योंकि बाल ब्रह्मचारी पवित्र है।** पवित्रता से कितना नाम बाला हो जाता है।

SM, Revised 21.06.2018
यह ब्रह्मा तुम्हारी बड़ी मम्मा है। **वह मम्मा सरस्वती, जगत अम्बा है - ब्रह्मा की बेटी।** बड़ी मम्मा (ब्रह्मा) पालना तो नहीं कर सकती, इसलिए वह जगदम्बा (मम्मा) मुकरर रखी है। इसके (ब्रह्मा के) शरीर को 'जगत अम्बा' नहीं कहेंगे।

SM, Revised 30.06.2017
यह (ब्रह्मा) है बड़ी मम्मा। **फिर माताओं की सम्भाल के लिए (सरस्वती) मम्मा मुकरर की जाती है, वह सबसे तीखी जाती है।** इनका पार्ट है मुख्य। वह है ज्ञान ज्ञानेश्वरी, जगत अम्बा।

SM, Revised 15.05.2017
जगत अम्बा के तुम हो बच्चे। **जो मम्मा की महिमा, सो तुम बच्चों की। जगत अम्बा फिर मुख्य हो जाती है।** …
मम्मा तो यह (ब्रह्मा) भी है। **परन्तु माताओं को सम्भालने के लिए जगत-अम्बा (ओम राधे) मुकरर है।** ड्रामा में नूँध है। सभी से तीखी भी है। उनकी मुरली बड़ी रसीली है।

SM, Revised 17.08.2016
जगत अम्बा, जगत की माता ठहरी। तो जरूर जगत पिता भी चाहिए। ऐसे नहीं कि यह स्त्री-पुरूष (पति-पत्नी) हैं। ब्रह्मा की बेटी है, सरस्वती। ब्रह्मा के सब बच्चे हैं। ब्रह्मा की स्त्री (साकार में पत्नी) नहीं है। **ब्रह्मा की बेटी सरस्वती गाई जाती है। उनको ही 'जगत अम्बा', ब्रह्मा को 'जगत पिता' कहते हैं। सरस्वती है मुख्य, इसलिए सम्भालने के लिए वह मुकरर की जाती है।** उनका पार्ट ही ऐसा है।

SM, Revised 06.05.2016

'तुम मात-पिता …', किसको कहा जाता है - विचार की बात है ना। ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करते हैं, फिर माँ भी जरूर चाहिए। तो जो अनन्य बच्ची होती है, ड्रामा प्लैन अनुसार उनको जगत-अम्बा का टाइटिल दिया जाता है। मेल को जगत-अम्बा नहीं कह सकते, इनको (ब्रह्मा को) जगत पिता कहेंगे। इनका (ब्रह्मा का) प्रजापिता नाम मशहूर है। **अच्छा प्रजा माता कहाँ? तो एडाप्ट किया जाता है माता (ओम राधे) को। आदि देव तो है, फिर आदि देवी (मम्मा) को मुकरर किया जाता है। जगत-अम्बा तो एक ही है - उनकी ही महिमा है। जगत-अम्बा पर कितना मेला लगता है। परन्तु उनके आक्यूपेशन को कोई नहीं जानते।**

SM, Revised 28.12.2018

जो (सरस्वती) मम्मा की महिमा, सो बाप की महिमा, सो दादे की। ... बाप बैठ समझाते हैं, यह जगदम्बा कौन है, यह है भारत की सौभाग्य विधाता, इनकी शिव शक्ति सेना भी मशहूर है। **हेड है जगदम्बा (ओम राधे), अर्थात भारत में वन गवर्मेन्ट की स्थापना करने वाली हेड (head)।** भारत माता शक्ति अवतारों ने भारत में वन गवर्मेन्ट स्थापन की है, श्रीमत के आधार पर।

SM, Revised 16.03.2016

अब तुम गाते हो, 'तुम मात-पिता हम बालक तेरे ..', यह तो एक (शिव) है ना। परन्तु (शिव) बाबा कहते हैं कि मैं कैसे आकर तुमको अपना बनाऊं। मैं तुम्हारा पिता हूँ। तो इनके तन का आधार लेता हूँ। तो यह (ब्रह्मा) हमारी स्त्री भी है, तो बच्चा भी है। इन द्वारा शिवबाबा, बच्चों को एडाप्ट करते हैं, तो यह बड़ी मम्मा हो गई। इनकी कोई माँ नहीं है। **सरस्वती को जगत अम्बा कहा जाता है। उनको तुम्हारी सम्भाल करने के लिए मुकरर किया। सरस्वती ज्ञान ज्ञानेश्वरी, यह है छोटी मम्मा। यह बड़ी गुह्य बातें हैं।**

SM, Revised 27.10.1996

वह जगदम्बा (सरस्वती) मम्मा है ना? उनसे तुम स्वर्ग का वर्सा लेते हो। **देने वाला है शिवबाबा, जो ब्रह्मा-सरस्वती द्वारा देते हैं।**

AV, Original 21.01.1969

तो विचार सागर मंथन करो, हलचल का मंथन न करो। जो शक्ति ली है, उनको प्रत्यक्ष में लाओ। **'भारत माता शक्ति अवतार', अन्त का यही नारा है। 'सन शोज फादर'। ड्रामा की नूंध, करायेगी!**

AV, Original 18.05.1969

अन्तिम नारा भी 'भारत माता शक्ति अवतार' का गायन है। 'गोपी माता' थोड़ेही कहते हैं। अब शक्ति रूप का पार्ट है। **गोपीकाओं का रूप साकार में था (1969 के पहले)। अब अव्यक्त रूप से शक्ति का पार्ट है।** हर एक जब अपने शक्ति रूप में स्थित होंगे, तो इतने सभी की शक्ति मिलाकर कमाल कर दिखायेगी। …

अगर आप हरेक शक्ति रूप में स्थित हो जाओ, तो आप के जो भूले भटके भक्त हैं, न चाहते भी चकमक (चुम्बक) के आगे आ जायेंगे, देरी नहीं लगेगी!

ट्रिब्युनल (Tribunal) - सतगुरू के निंदक ठौर न पायें

12] सतगुरू के निंदक ठौर न पायें; यह अभी (संगम युग) की बात है; सतगुरू एक ही निराकार शिव है; इसमें (शिव)बाप-(ब्रह्मा)दादा - दोनों आ जाते हैं; आपस में कभी भी लड़ना-झगड़ना नहीं चाहिए; बी.के. (B.K.) की निंदा कराने वाले का भी पाप बहुत भारी है; अंत में इन सभी के लिए ट्रिब्युनल बैठेगी; सज़ा भी खावेंगे - फिर बहुत पछतावेंगे, रोएँगे - परन्तु उस समय कुछ हो नहीं सकेगा!

SM, Original 28.06.1964

जैसे स्कूल में अच्छी रीति पढ़ते हैं, तो ऊँच पद पाते हैं; कोई नापास हो पड़ते हैं, तो आपघात कर लेते हैं। **तुम भी पिछाड़ी में बहुत रोएँगे, सज़ा भी खावेंगे। पापों का बोझा रह जाता है, तो फिर तुम्हारे लिए ट्रिब्यूनल बैठती है।** साक्षात्कार कराते हैं – 'तुमने फलाने जन्म में, यह किया'। काशी कलवट में भी साक्षात्कार कराके सज़ा देते हैं। यहाँ भी साक्षात्कार कराए, धर्मराज कहेंगे - **'देखो, बाप तुमको इस (लेखराज) ब्रह्मा तन से पढ़ाता था, तुमको इतना सिखलाया, फिर भी तुमने ये-ये पाप किये।'** न सिर्फ इस जन्म के, परन्तु जन्म-जन्मांतर के पापों का साक्षात्कार करावेंगे। टाइम इतना लगता है, जैसे कि बहुत जन्म सज़ा खा रहा हूँ। फिर बहुत पछतावेंगे, रोएँगे; परन्तु हो क्या सकेगा? इसलिए पहले से बतला देते हैं - नाम बदनाम किया, तो बहुत सज़ा खावेंगे। इसलिए, बच्चे, मुझ अपने सतगुरू के निन्दक न बनना, नहीं तो सजाएँ भी खावेंगे, और पद भी भ्रष्ट होगा। मनुष्यों ने फिर उन कलियुगी गुरूओं के लिए समझ लिया है – 'गुरू का निंदक ठौर न पाए'; परन्तु कौनसी ठौर? कुछ भी नहीं जानते! **ठौर तो अभी (संगम युग में) पाना होता है। सत बाप, सत टीचर, सत गुरू तो एक ही (निराकार शिव) है।**

SM, Revised 12.12.2012 / 21.12.2017

बच्चों को पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना चाहिए। नहीं तो बहुत रोना पड़ेगा। सबके लिए ट्रिब्युनल बैठेगी - बतायेंगे कि तुमने यह-यह पाप किया; इसलिए हम तुमको बहुत समझाता हूँ कि पाप नहीं करना, पुण्य आत्मा बनना। पाप करेंगे, तो सौगुणा सज़ा के निमित्त बनेंगे। मेरे बनकर विकार में गये, बाप के श्रीमत की अवज्ञा की, तो तुम्हारे पर बहुत सजा आयेगी। वह सजायें भी बहुत कड़ी होती हैं। **बाप कहते हैं - मैं परमधाम का रहने वाला हूँ। यहाँ पुरानी दुनिया में आकर तुमको वर्सा देता हूँ। फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो, तब तो कहा हुआ है, 'सतगुरू का निदंक सूर्यवंशी घराने में ठौर न पाये।'**

SM, Revised 01.05.2020

ऐसे नहीं कि मैं कृपा करूँगा। क्षमा, वा कृपा, पाई की भी नहीं होगी। सबको अपने को सुधारना है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे। पास्ट का भी, योगबल से कटता जायेगा। **बाप का बनकर, फिर बाप की निंदा नहीं कराओ। 'सतगुरू के निंदक ठौर न पायें'।**

SM, Revised 15.04.2020

पुरूषार्थ तो करना है ना, इसलिए बाप कहते हैं - **आपस में कभी भी लड़ना-झगड़ना नहीं चाहिए। यह तो जानवरों का काम है। लड़ना-झगड़ना, यह है देह-अभिमान।** बाप का नाम बदनाम कर देंगे। बाप के लिए ही कहा जाता है, 'सतगुरू का निंदक ठौर न पाये'। साधुओं ने फिर अपने लिए कह दिया है। तो मातायें उनसे बहुत डरती हैं कि कोई श्राप न मिल जाए।

SM, Revised 23.03.2020

तुम ईश्वरीय औलाद तो क्षीरखण्ड होने चाहिए। तुम ईश्वरीय सन्तान देवताओं से भी ऊंच ठहरे। तुम बाप के कितने मददगार बनते हो। पुरूषोत्तम बनाने के मददगार हो, तो यह दिल में आना चाहिए - हम पुरूषोत्तम हैं, तो हमारे में वह दैवीगुण हैं? **आसुरी गुण हैं, तो वह फिर बाप का बच्चा तो कहला न सके; इसलिए कहा जाता है, 'सतगुरू का निंदक ठौर न पाये'।** वह कलियुगी गुरू फिर अपने लिए कहकर, मनुष्यों को डरा देते हैं।

SM, Revised 11.01.2019
पाप भी कोई बहुत बड़ा, कोई हल्का होता है। काम है बहुत कड़ा, क्रोध है सेकेण्ड नम्बर, लोभ उनसे कम। **सबसे जास्ती, काम वश होने से, जो जमा हुआ वह ना हो जाता है। फायदे के बदले नुकसान हो जाता है। 'सतगुरू का निंदक ठौर न पाये।'** बाप का बनकर फिर छोड़ देते हैं। क्या कारण हुआ? अक्सर करके काम की चोट लगती है। यह है कड़ा दुश्मन।

SM, Revised 30.11.2018
बाप तो बहुत मीठा है। समझते हैं, शिक्षा दूँ तो कहाँ फारकती न दे देवे। **समझाते हैं, तुम विकार में जाकर कुल का नाम बदनाम करते हो। अगर नाम बदनाम करेंगे तो बहुत सजायें खानी पड़ेंगी। उसे कहा जायेगा, 'सतगुरू का निंदक ठौर न पाये'; उन्होंने फिर अपने लौकिक गुरू के लिए समझ लिया है।** अबलाओं को पुरुष भी डराते हैं।

SM, Revised 19.04.2018
तो प्रैक्टिकल में देखते हो कितने बाप का बनकर फिर मुख मोड़ लेते हैं! जाकर निंदा करते हैं। आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती, भागन्ती हो जाते हैं। सत बाप, सत टीचर, सतगुरू की निंदा करते हैं। ... **तो ऐसे निंदक ऊंच ते ऊंच ठौर नहीं पा सकते हैं। यह है अभी (संगम युग) की बात।**

SM, Revised 03.01.2018
माया बड़ी प्रबल है। थोड़ा सा भी बाप का डिसरिगार्ड किया तो मरा। गाया हुआ है, 'सतगुरू का निंदक ठौर न पाये'। काम वश, क्रोध वश, उल्टे काम करते हैं। गोया बाप की निंदा कराते हैं, और दण्ड के निमित्त बन जाते हैं। **अगर कदम-कदम पर पदमों की कमाई है, तो पदमों का घाटा भी है। अगर सर्विस से जमा होता है, तो उल्टे विकर्म से, ना भी होती है।** बाबा के पास सारा हिसाब रहता है।

SM, Revised 18.09.2017
सतगुरू का निंदक बने, तो ऊंच ठौर पा नहीं सकेंगे। 'गुरू ब्रह्मा' कहते हैं ना। 'गुरू विष्णु', 'गुरू शंकर' नहीं कहेंगे। गुरू सिर्फ ब्रह्मा ही है। तुम भी माता गुरू बनती हो। सतगुरू द्वारा बनी हो, न कि कलियुगी गुरूओं द्वारा। तुम ब्राह्मण ब्राह्मणियां बनी हो। तुम्हारी है रूहानी यात्रा। मेहनत है, **माया किसकी बुद्धि को ताला लगा देती है, तो फिर उल्टा-सुल्टा बोलते रहते हैं। वेस्ट आफ टाइम करते हैं।**

SM, Revised 30.05.2017
यह बड़ी समझने की बातें हैं। तुम हो ईश्वरीय औलाद। तुम्हारे में बड़ी रॉयल्टी होनी चाहिए। कहते हैं, 'गुरू के निंदक ठौर न पायें।' उन्हों में, बाप, टीचर, गुरू अलग है। **यहाँ तो बाप, टीचर, सतगुरू एक ही है। अगर तुम कोई उल्टी चलन चले, तो तीनों के निंदक बन पड़ेंगे।** सत बाप, सत टीचर, सतगुरू की मत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ बन जाते हो। शरीर तो छोड़ना ही है, तो क्यों न इसे ईश्वरीय, अलौकिक सेवा में लगाकर बाप से वर्सा ले लेवें।

SM, Revised 31.03.2017
इस समय ही परमपिता परमात्मा आकर ज्ञान का श्रृंगार कराए सतयुग के महाराजा महारानी बनाते हैं। ...
अगर कोई बच्चे की बदचलन होगी, तो नाम बदनाम करायेंगे। कहेंगे यह ऐसे ब्रह्माकुमार कुमारी हैं? तो नाम ब्रह्मा का हुआ ना? **इसलिए कहा जाता है, 'गुरू का निंदक ठौर न पाये' - है सतगुरू के लिए। इन कलियुगी गुरूओं ने फिर अपने लिए बता दिया है, इसलिए मनुष्य उनसे डरते हैं, कि कहाँ गुरूजी श्राप न दे देवें।**

SM, Revised 22.03.2017
बाप समझाते रहते हैं, बच्चे कभी आपस में लड़ना-झगड़ना नहीं। 'सतगुरू का निंदक ठौर न पाये' - यानी सतयुग में ऊंच पद नहीं पाये। **सतगुरू जो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उनकी निंदा करे, तो ऊंच पद पा न सके। यह है सारी यहाँ की बात।** परन्तु वह अपने ऊपर ले गये हैं, और मनुष्यों को डराते रहते हैं। यहाँ तो पूरा पवित्र बनना है। वह गुरू कर लेते हैं, लेकिन पवित्र नहीं बनते हैं।

SM, Revised 01.03.2017

कोई भी मनुष्य को, कोई कब कह न सके कि यह सत्य बाप, सत्य टीचर, सतगुरू है। और सब गुरू लोग हैं, **सतगुरू सत्य बोलने वाला एक ही (निराकार शिव) है। बाकी सब हैं झूठ बोलने वाले। वह सच्ची सद्गति किसको दे नहीं सकते।**

SM, Revised 13.01.2017

भाई-बहिन कहलाकर, फिर अगर विकार में गये तो बहुत कड़ी सजा भोगनी पड़ेगी। 'सतगुरू बाप का निंदक ठौर न पाये।'

SM, Revised 23.12.2016

कई बच्चे तो बहुतों का और ही अकल्याण करते रहते हैं। जिनकी कुछ भावना भी होती - यहाँ के लिए, उनकी भावना भी उड़ा देते हैं। ऐसे-ऐसे विकर्म भी करते हैं। भूतों की प्रवेशता होती है ना, इसलिए गायन भी है, 'सतगुरू के निंदक ठौर न पायें।' इसमें (शिव)बाप-(ब्रह्मा)दादा - दोनों आ जाते हैं।

SM, Revised 28.07.2015

अभी जो पाप करते हैं, वह तो जन्म-जन्मान्तर से भी बहुत हो जाते हैं, इसलिए गाया जाता है, 'सतगुरू के निंदक ठौर न पायें' - यह सत बाबा, सत टीचर, सतगुरू है। **बाप कहते हैं - बी.के. की निंदा कराने वाले का भी पाप बहुत भारी है। पहले खुद तो पावन बनें। किसको समझाने का बहुत शौक रखते हैं। योग पाई का भी नहीं, इससे फायदा क्या?** बाप कहते हैं, मुख्य बात है ही याद से पावन बनने की। पुकारते भी पावन बनने के लिए हैं।

ब्रह्मपुत्रा नदी (ब्रह्मा बाबा)

13] वास्तव में सच्ची-सच्ची मदर (Mother) ब्रह्मपुत्रा (ब्रह्मा) है; सबसे बड़ी ज्ञान नदी ब्रह्मपुत्रा (ब्रह्मा) है; ब्रह्मा, (अलौकिक) बाप भी है, और बड़ी मम्मा भी है; ब्रह्मा बाबा को माता भी कहा जाता है; पहले-पहले संगम होता है - ज्ञान सागर (पारलौकिक शिव पिता) और ब्रह्मपुत्रा ज्ञान नदी (अलौकिक ब्रह्मा माता) का!

SM, Revised 15.07.2020
ब्रह्मपुत्रा बड़ी नदी है। मेला भी लगता है सागर और ब्रह्मपुत्रा का। **यह (ब्रह्मा बाबा) बड़ी नदी ठहरी, तो (बड़ी) माँ भी ठहरी ना।**

SM, Revised 28.01.2020
'गॉड फादर' कहा जाता है, फिर 'मात-पिता' क्यों कहा जाता? बाबा ने समझाया है - **भल सरस्वती (माता) है, परन्तु वास्तव में सच्ची-सच्ची मदर (माता) ब्रह्मपुत्रा है। सागर (शिव) और ब्रह्मपुत्रा (ब्रह्मा) है, पहले-पहले संगम इनका होता है। बाबा इनमें प्रवेश करते हैं। यह कितनी महीन बातें हैं।** बहुतों की बुद्धि में यह बातें रहती नहीं, जो चिंतन करें। बिल्कुल कम बुद्धि है, कम दर्जा पाने वाले हैं। उन्हों के लिए बाप फिर भी कहते - अपने को आत्मा समझो।

SM, Revised 20.12.2019 (Original 07.12.1968)
तुम्हारे मिसल मैं गर्भ में नहीं आता हूँ। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। फिर कोई प्रश्न ही नहीं उठता। **यह रथ है। इनको (ब्रह्मा को) माता भी कहा जाता है। सबसे बड़ी नदी ब्रह्मपुत्रा है। तो यह है सबसे बड़ी नदी। पानी की तो बात नहीं। यह है महानदी, अर्थात् सबसे बड़ी ज्ञान नदी है।**

SM, Revised 19.12.2019 (Original 09.01.1969)
बाप इनमें प्रवेश करते हैं। यह भी समझते हो **यह (ब्रह्मा बाबा) ज्ञान की बड़ी नदी है। ज्ञान नदी भी है, फिर पुरुष भी है।** ब्रह्मपुत्रा नदी सबसे बड़ी है, जो कलकत्ता तरफ सागर में जाकर मिलती है। मेला भी वहाँ ही लगता है; परन्तु उन्हें यह पता नहीं कि यह आत्माओं और परमात्मा का मेला है।

SM, Revised 10.09.2019 (Original 14.10.1968)
देवियों की ही जास्ती पूजा होती है। लक्ष्मी और दुर्गा दोनों की मूर्तियाँ बनाते हैं। **बड़ी मम्मा भी यहाँ बैठी है ना, जिसको ब्रह्मपुत्रा भी कहते हैं।** समझेंगे ना कि इस जन्म, और भविष्य के रूप की पूजा कर रहे हैं। कितना वन्डरफुल ड्रामा है। ऐसी-ऐसी बातें शास्त्रों में आ न सकें। यह है प्रैक्टिकल एक्टिविटी। तुम बच्चों को अब ज्ञान है।

SM, Revised 30.05.2019
ब्रह्मा किसका बच्चा? शिवबाबा का। हम उनके पौत्रे ठहरे। सभी आत्मायें उनके बच्चे हैं। फिर शरीर में पहले ब्राह्मण बनते हैं। **प्रजापिता ब्रह्मा है ना। इतनी प्रजा कैसे रचते हैं, यह तुम जानते हो। यह एडाप्शन है। शिवबाबा एडाप्ट करते हैं, ब्रह्मा द्वारा।** मेला भी लगता है। वास्तव में मेला वहाँ लगना चाहिए जहाँ ब्रह्मपुत्रा बड़ी नदी सागर में जाकर मिलती है। उस संगम पर मेला लगना चाहिए। यह मेला यहाँ है। **ब्रह्मा बैठा है, तुम जानते हो (ब्रह्मा) बाप भी है और बड़ी मम्मा भी तो यह (ब्रह्मा) है।** परन्तु मेल है, इसलिए मम्मा को मुकरर किया जाता है कि तुम इन माताओं को सम्भालो।

SM, Revised 30.04.2019
प्रवृत्ति मार्ग है ना। यह ब्रह्मा-सरस्वती, फिर वह (लक्ष्मी-नारायण) बनते हैं। इनमें (ब्रह्मा में) मैं प्रवेश कर ब्राह्मणों को ज्ञान देता हूँ। तो यह ब्रह्मा भी सुनते हैं। **यह फर्स्ट नम्बर में सुनते हैं। यह है बड़ी नदी ब्रह्मपुत्रा।** मेला भी सागर और ब्रह्मपुत्रा नदी पर लगता है। बड़ा मेला लगता है, जहाँ सागर और नदी का संगम होता है। **मैं इसमें प्रवेश करता हूँ। यह (ब्रह्मा) वह (विष्णु) बनते हैं। इनको वह (ब्रह्मा सो**

विष्णु) बनने में एक सेकण्ड लगता है। साक्षात्कार हो जाता है, और झट निश्चय हो जाता है – 'मैं यह (विष्णु) बनने वाला हूँ। विश्व का मालिक बनने वाला हूँ। तो यह गदाई क्या करेंगे?' सब छोड़ दिया।

SM, Revised 11.09.2018
'कुम्भ का मेला' कहा जाता है ना। कुम्भ को भी संगम कहेंगे। 3 नदियों के संगम का नाम 'कुम्भ' रख दिया है। सबसे बड़ा संगम कौन-सा है? सागर और नदियों का। **सबसे बड़ी नदी है ब्रह्मपुत्रा। उसमें बाबा आते हैं, इसलिये सागर और ब्रह्मपुत्रा नदी का इकट्ठा मेला तो है ही।** अब कुम्भ का मेला है - संगम पर। तुम सब ज्ञान सागर बाप से मिलते हो, इसको ईश्वरीय कुम्भ का मेला कह सकते हैं। यह है आत्माओं और परमात्मा का संगम। कुम्भ वा संगम, बात एक ही है।

SM, Revised 05.09.2018
यह मम्मा एडाप्ट की हुई है। सबसे लक्की सितारा जगत अम्बा है, यह सम्भालने के लिए मुख्य है, इसलिए इन पर कलष रहता है, और **यह (ब्रह्मा) तो हो गई ब्रह्मपुत्रा, मेल के रूप में। तो सरस्वती जरूर चाहिए। सरस्वती को ही जगत अम्बा कहा जाए। इस मेल को तो जगत अम्बा नहीं कहेंगे।**

SM, Revised 30.05.2018
तुम सब इस समय ज्ञान नदियाँ हो। **ब्रह्मपुत्रा नदी का छोर (किनारा) सागर में होता है। कलकत्ता में ब्रह्मपुत्रा नदी है। शिवजयन्ती पर वहाँ भारी मेला लगता है।** ब्रह्मपुत्रा नदी और सागर के संगम पर, सब यात्री जाते हैं। वहाँ जाकर सब स्नान करते हैं। **शिवबाबा है ज्ञान सागर, और यह ब्रह्मा है नदी। अभी तुम आये हो ब्रह्मा नदी-शिव सागर के मेले पर। परन्तु यह सब हैं ज्ञान की बातें। ज्ञान सागर से तुम निकले हो। ज्ञान स्नान से ही सबका कल्याण होना है। पानी की बात नहीं। यह ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मा है, शिवबाबा की सन्तान। तीर्थों का राज़ भी तुम समझते हो। हम बुद्धियोग की यात्रा पर हैं। बुद्धियोग लगाते हैं, परमपिता परमात्मा साथ।**

SM, Revised 24.08.2017
ब्रह्मा है ब्रह्म-पुत्रा, और शिव है ज्ञान सागर। यह है ब्रह्मपुत्रा नदी। बच्चा तो है ना। ब्रह्मा वल्द शिव। तुम हो पोत्रे और पोत्रियां। ...
तुम आये हो इस समय ब्रह्म पुत्रा और ज्ञान सागर के पास, सम्मुख। ...
यह ब्रह्म पुत्रा नदी और सागर दोनों इकट्ठे रहते हैं। तुम बच्चे जब आते हो, तो अन्दर में जानते हो कि हम जाते हैं - बापदादा के पास। बाप ज्ञान का सागर है, फिर प्रवेश करते हैं इस ब्रह्मपुत्रा अर्थात् ब्रह्मा में। इन द्वारा हमको हीरे जैसा बनाते हैं।

SM, Revised 15.05.2017
जगत अम्बा कामधेनु का वर्णन तो है ही। यह महिमा है जगत अम्बा की। वास्तव में, गुप्त रूप में, तो यह ब्रह्मपुत्रा नदी भी है। गाया भी जाता है, 'तुम मात पिता ..' - शिवबाबा ब्रह्मा के मुख कमल से बच्चे पैदा करते हैं। तो यह माता हो गई ना? यह हैं गुह्य बातें। यह बातें शास्त्रों में नहीं हैं।

SM, Revised 08.04.2016
तुम बच्चे शिवबाबा से वर्सा लेते हो। ब्रह्मा कोई स्वर्ग का रचयिता वा ज्ञान सागर नहीं है। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। आत्मा का बाप ही ज्ञान का सागर है। आत्मा भी ज्ञान सागर बनती है, परन्तु इनको ज्ञान सागर नहीं कहेंगे क्योंकि सागर एक ही है। तुम सब नदियाँ हो। **सागर को अपना शरीर नहीं है। नदियों को है।** तुम हो ज्ञान नदियाँ। **कलकत्ता में ब्रह्मपुत्रा नदी बहुत बड़ी है क्योंकि उनका सागर से कनेक्शन है। उनका मेला बहुत बड़ा लगता है। यहाँ भी मेला लगता है। सागर और ब्रह्मपुत्रा दोनों कम्बाइन्ड हैं। यह है चैतन्य, वह है जड़। यह बातें बाप समझाते हैं। शास्त्रों में नहीं हैं।**

संगमयुगी ब्राह्मणों की दुनिया में राम राज्य (दिन) और रावण राज्य (रात) का 'शूटिंग', अर्थात 'संस्कारों का रिफ्रेशिंग' - Part 1

14] देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला प्रजापिता है, ब्रह्मा बाबा (लेखराज की आत्मा) - अर्थात रामराज्य का, सिर्फ एक ही, 'असली प्रजापिता' है, ब्रह्मा बाबा।
रावण राज्य के मुख्य 10 धर्मों के प्रजापिताओं को 'नकली प्रजापिता' ही कहेंगे - जिनका शूटिंग यज्ञ में 1969 के बाद ही होता है, जिस कारण यज्ञ में अलग-अलग ग्रुप्स बन चुके हैं। हर एक ग्रुप का हेड अपने को 'असली प्रजापिता' मानता है, और दूसरों को 'नकली प्रजापिता' साबित करता है। हर एक ग्रुप का हेड स्वयं को धोखेबाज नहीं समझेंगे, लेकिन दूसरों को धोखेबाज साबित करेंगे - यह है रावण राज्य का मुख्य 10 धर्मों के मुख्य 10 नकली प्रजापिताओं का शूटिंग, जो संगमयुग में होता है – जिसे, सूक्ष्म रीति से, रावण के 10 शीश माने जाते हैं - 5 कल्पवृक्ष के दाहिने में (feminine), और 5 बाएं में (masculine)!

SM, Revised 12.06.2020
'गरीब और साहूकार', समझ तो सकते हैं ना? वैसे तुम भी समझ सकते हो बरोबर 'ईश्वरीय औलाद और आसुरी औलाद'। ... **भक्ति की माला ही अलग है; ज्ञान मार्ग की माला अलग है। रावण की राजाई अलग, तुम्हारी राजाई अलग। उनको दिन, उनको रात कहा जाता है।**

SM, Revised 30.04.2020
रावण की मत पर तुम कितने तुच्छ बुद्धि बने हो। **अब तुम और किसकी मत पर न चलो।** मुझ पतित-पावन बाप को बुलाया है, फिर भी डुबोने वालों पिछाड़ी क्यों पड़ते हो? **एक की मत को छोड़ अनेकों के पास धक्का क्यों खाते रहते हो?** ...
एक तरफ है ईश्वरीय मत, दूसरे तरफ है आसुरी मत। उनका हाल क्या होगा? दोनों तरफ पांव रखा तो चीर पड़ेंगे। बाप में भी पूरा निश्चय नहीं रखते हैं।

SM, Revised 31.12.2019 (Original 10.01.1969)
स्वर्ग में विकर्म कोई होता नहीं। सारा मदार कर्मों पर है। **यह माया रावण अवगुणी बनाता है। बाप आकर सर्वगुण सम्पन्न बनाते हैं।** राम वंशी और रावण वंशी की युद्ध चलती है। तुम राम के बच्चे हो; कितने अच्छे-अच्छे बच्चे माया से हार खा लेते हैं। बाबा नाम नहीं बतलाते हैं, फिर भी उम्मीद रखते हैं। 'अधम ते अधम' का उद्धार करना होता है।

SM, Revised 28.11.2019 (Original 18.12.1968)
अभी तो अच्छे-अच्छे बच्चे भी ब्राह्मण से फिर शूद्र बन जाते हैं। इसको कहा जाता है माया से हार खाना। **बाबा की गोद से हारकर, रावण की गोद में चले जाते हैं।** कहाँ बाप की श्रेष्ठ बनने की गोद, कहाँ भ्रष्ट बनने की गोद। सेकण्ड में जीवनमुक्ति। सेकण्ड में पूरी दुर्दशा हो जाती है। ब्राह्मण बच्चे अच्छी रीति जानते हैं - कैसे दुर्दशा हो जाती है। **आज बाप के बनते, कल फिर माया के पंजे में आकर रावण के बन जाते हैं।** फिर तुम बचाने की कोशिश करते हो, तो कोई-कोई बच भी जाते हैं। **तुम देखते हो डूबते हैं, तो बचाने की कोशिश करते रहो।**

SM, Revised 26.11.2019 (Original 02.12.1968)
अब एक है रूहानी बाप की श्रीमत, दूसरी है रावण की आसुरी मत। आसुरी मत बाप की नहीं कहेंगे। रावण को 'बाप' तो नहीं कहेंगे ना। वह है रावण की आसुरी मत। अभी तुम बच्चों को मिल रही है ईश्वरीय मत। कितना रात-दिन का फर्क है। बुद्धि में आता है, ईश्वरीय मत से दैवी गुण धारण करते आये हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही बाप द्वारा सुनते हो, और कोई को मालूम नहीं पड़ता है। बाप मिलते ही हैं सम्पत्ति के लिए। रावण से तो और ही सम्पत्ति कम होती जाती है। **ईश्वरीय मत कहाँ ले जाती है और आसुरी मत कहाँ ले जाती है, यह तुम ही जानते हो।**

SM, Revised 21.11.2019 (Original 27.11.1968)
मनुष्य तो दिन-प्रतिदिन असुर बनते जाते हैं। पहचान न होने कारण बकवास करने में भी देरी नहीं करते हैं। …
आत्माओं का फादर तो दूसरा कोई होता नहीं। यह प्रजापिता ब्रह्मा भी कहते हैं - निराकार फादर को याद करना है। यह (ब्रह्मा) कारपोरियल फादर हो जाता है। समझाया तो बहुत जाता है, कई पूरा न समझकर उल्टा रास्ता ले, जंगल में जाकर पड़ते हैं। **बाप तो रास्ता बताते हैं स्वर्ग में जाने का। फिर भी जंगल तरफ चले जाते हैं।** …
बाप समझाते हैं, तुमको जंगल तरफ ले जाने वाला है रावण। तुम माया से हार खाते हो। रास्ता भूल जाते हो, तो फिर उस जंगल के कांटे बन जाते हो। **वह फिर स्वर्ग में देरी से आयेंगे।** यहाँ तुम आये ही हो स्वर्ग में जाने का पुरूषार्थ करने। त्रेता को भी स्वर्ग नहीं कहेंगे। 25 परसेन्ट कम हुआ ना। वह फेल गिना जाता है। तुम यहाँ आये ही हो पुरानी दुनिया छोड़, नई दुनिया में जाने। त्रेता को नई दुनिया नहीं कहेंगे। नापास वहाँ चले जाते हैं क्योंकि रास्ता ठीक पकड़ते नहीं। नीचे-ऊपर होते रहते हैं। तुम महसूस करते हो, जो याद होनी चाहिए वह नहीं रहती। **स्वर्गवासी जो बनते हैं उनको कहेंगे - अच्छे पास। त्रेता वाले नापास गिने जाते हैं।**

SM, Revised 28.06.2019
इस समय देही-अभिमानी बन रहना है। अगर आपस में नहीं बनती है, तो उस समय के लिए रावण सम्प्रदाय समझना चाहिए। आपस में लूनपानी होने से बाप की इज्ज़त गंवायेंगे। भल ईश्वरीय सन्तान कहते हैं, परन्तु आसुरी गुण हैं तो जैसे देह-अभिमानी हैं। देही-अभिमानी में ईश्वरीय गुण होते हैं। ...
बाप की निंदा कराने वाले, लूनपानी होने वाले ठौर पा न सकें। उनको नास्तिक भी कह सकते हैं। आस्तिक होने वाले बच्चे कभी लड़ नहीं सकते।

SM, Revised 20.04.2019
अभी तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिल रही है, जिसको 'राम मत' कहा जाता है। दूसरे फिर हैं 'रावण मत' पर। ईश्वरीय मत और आसुरी मत। ईश्वरीय मत आधाकल्प चलती है। बाप ईश्वरीय मत देकर तुमको देवता बना देते हैं, फिर सतयुग-त्रेता में वही मत चलती है।

SM, Revised 12.03.2019
तुम जानते हो - उस तरफ है रावण, इस तरफ है राम। रावण पर तुम जीत पाते हो। **वह सब हैं रावण सम्प्रदाय। तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय बहुत थोड़े हो।**

SM, Revised 11.12.2018
जैसे यह देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला प्रजापिता ब्रह्मा है, अभी झाड़ की एन्ड (अन्त) में खड़ा है - क्राइस्ट भी क्रिश्चियन धर्म का प्रजापिता है ना। **जैसे यह प्रजापिता ब्रह्मा, वैसे वो प्रजापिता क्राइस्ट, प्रजापिता बुद्ध .. - यह सब धर्म की स्थापना करने वाले हैं।** सन्यासियों का शंकराचार्य उनको भी पिता कहेंगे।

संगमयुगी ब्राह्मणों की दुनिया में राम राज्य (दिन) और रावण राज्य (रात) का 'शूटिंग', अर्थात 'संस्कारों का रिफ्रेशिंग' - Part 2

15] संगमयुगी ब्राह्मण - जिनका रावण राज्य का 'शूटिंग' चल रहा है – वे, अनजाने, रावण मत पर चल रहे हैं - लेकिन समझते हैं कि ठीक श्रीमत पर चल रहे हैं - क्योंकि रावण बुद्धि का ताला बंद कर देते हैं; यह भी किसको पता नहीं है कि संगम युग में रावण राज्य का 'शूटिंग' कब आरम्भ होता है; सुखधाम और दु:खधाम का वर्सा संगम युग में ही मिलता है; कई बच्चे 'बाबा-बाबा' भल कहते हैं - परन्तु, अनजाने, रावण मत पर हैं!

SM, Revised 28.05.2020
राम राज्य और रावण राज्य कैसे होता है, **यह तुम बच्चों के सिवाए और कोई की बुद्धि में नहीं है!**

SM, Revised 16.04.2020
स्वर्ग की स्थापना बाप, राम (शिव) करते हैं; नर्क की स्थापना रावण करते हैं, जिसको वर्ष-वर्ष जलाते हैं।

SM, Revised 13.04.2020
ऐसे भी नहीं, तुम सब कोई श्रीमत पर चलते हो। **बहुत हैं जो रावण मत पर भी चलते हैं।** श्रीमत पर कोई कितना परसेन्ट चलते, कोई कितना। कोई तो 2 परसेन्ट भी चलते होंगे। भल यहाँ बैठे हैं, तो भी शिवबाबा की याद में नहीं रहते।

SM, Revised 05.01.2019
भल कितना भी कहे हमारा बाप में प्यार है। **परन्तु ईश्वरीय कायदे के खिलाफ बात करते, तो उन्हें रावण सम्प्रदाय का समझना चाहिए।** देह-अभिमान में हैं। ... भूत से कभी सामना नहीं किया जाता है। **उनसे जास्ती बात भी नहीं करनी चाहिए।**

SM, Revised 26.12.2018
यहाँ तो एक ही बात है, हम विश्व के मालिक बनेंगे। विश्व का कल्याणकारी (शिव) ही विश्व का मालिक बनाते हैं। स्वर्ग का मालिक बनायेंगे, नर्क का थोड़ेही मालिक बनायेंगे। **दुनिया यह नहीं जानती कि नर्क का रचयिता रावण है, स्वर्ग का रचयिता बाप है।**

SM, Revised 15.12.2018
पत्थरबुद्धि को पारस बुद्धि बनाने वाला बाप ईश्वर है। रावण आकरके पत्थरबुद्धि बनाते हैं। उन्हों का नाम ही है, 'आसुरी सम्प्रदाय'।

SM, Revised 10.05.2018
बाकी, 'आत्मा सो परमात्मा' कहना - यह बड़े ते बड़ा अज्ञान है। ... श्रीमत तो एक ही बाप की है। आसुरी मत देने वाला रावण है, जिसकी मत पर एक दो को दु:ख देने लग पड़ते हैं। अब तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय, एक दो को सुख देने वाले।

SM, Revised 06.02.2018
एक तरफ है 21 जन्मों का सुख देने वाला उस्ताद, दूसरे तरफ है दु:ख देने वाला रावण। उसे भी उस्ताद कहेंगे। ... **यह भी किसको पता नहीं है कि रावण राज्य कब आरम्भ होता है।** आधाकल्प रामराज्य, आधाकल्प रावण राज्य। यह है राम राज्य और रावण राज्य की कहानी। परन्तु यह भी कोई की बुद्धि में मुश्किल बैठता है। **कोई तो बिल्कुल जड़जड़ीभूत अवस्था में हैं, जो कुछ भी नहीं समझते।**

SM, Revised 19.12.2017
अभी तुम जीते जी बाप के बने हो। कोई-कोई को फिर माया रावण अपनी तरफ खींच लेती है। उसे कहेंगे रावण रूपी काल खा गया। **ईश्वरीय गोद में आकर, फिर बदलकर आसुरी गोद में चले जाते हैं। काल ने नहीं खाया, परन्तु जीते जी ईश्वर के बने, फिर जीते जी रावण के बन पड़ते हैं।**

SM, Revised 07.12.2017
कहाँ उन्हों की बुद्धि, कहाँ तुम्हारी बुद्धि। वह सब विनाश के लिए काम करते, तुम स्थापना के लिए करते हो। ...
रावण मत वाले अलग हैं, ईश्वरीय मत वाले अलग हैं।

SM, Revised 01.09.2017
तुम जानते हो कि बाप सुखधाम का वर्सा देते हैं, और रावण दु:खधाम का वर्सा देते हैं। ... तुम जानते हो यह सब खेल है।

SM, Revised 23.08.2017
भक्तिमार्ग में भी 'बाबा-बाबा' कहते हैं। भल मनुष्य गाते हैं, परन्तु हैं रावण मत पर। रावण मत मनुष्य को बिगाड़ती है। बाप आकर बिगड़ी को बनाते हैं। रावण भी एक है, राम (शिव) भी एक है।

SM, Revised 24.04.2017
पतित राज्य कब चलता है, पावन राज्य कब चलता है - यह सब तुम ही जानते हो। शिवबाबा पावन बनाते हैं, उनका भी चित्र है। रावण पतित बनाते हैं, उनका भी चित्र है।

SM, Revised 05.04.2017
कल्प-कल्प तुमको 100 परसेन्ट सालवेन्ट बनाता हूँ। फिर रावण तुमको इनसालवेन्ट बना देते हैं।

SM, Revised 07.03.2017
बाप सुख का वर्सा देते, रावण दु:ख का श्राप देते। यह बेहद की बात है।

SM, Revised 12.12.2016
बाप भारत पर उपकार कर, स्वर्ग बनाते हैं। रावण आकर अपकार कर, नर्क बना देते हैं। **यह खेल है दु:ख-सुख का।**

SM, Revised 25.03.2016
आसुरी सम्प्रदाय को यह पता नहीं है कि 'भोलानाथ' किसको कहा जाता है। यह भी नहीं जानते कि शिव, शंकर अलग-अलग हैं। वह शंकर देवता है, शिव बाप है। कुछ भी नहीं जानते हैं। अब तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय अथवा ईश्वरीय फैमिली। वह है आसुरी फैमिली रावण की। कितना फर्क है।

SM, Revised 07.02.2015
बाप तुम्हारी बुद्धि का अब ताला खोल रहे हैं। **रावण ताला बन्द कर देते हैं।**

ब्रह्मा - मात-पिता - दोनों हैं

16] ब्रह्मा बाबा - माता भी है, पिता भी है; ब्रह्मा - एडम भी है, तो ईव भी है; ब्रह्मा - प्रजापिता भी है, तो माता भी है; ब्रह्मा - मात-पिता - दोनों हैं; जो बच्चे ब्रह्मा को ही नहीं मानते, कि ब्रह्मा ही प्रजापिता है, वे ब्राह्मण कुल के नहीं हो सकते!

SM, Revised 25.05.2020
शिवबाबा ने इन (ब्रह्मा) द्वारा तुमको एडाप्ट किया, अपना बनाया है। **यह माता भी है, पिता भी है।** माता तो साकार में चाहिए ना। वह (निराकार शिवबाबा) तो है ही पिता। तो ऐसी-ऐसी बातें अच्छी रीति धारण करो।

SM, Revised 27.04.2015 / 08.04.2020
नॉलेज भी जरूर कोई शरीर में प्रवेश कर देंगे। (ब्रह्मा की) आत्मा के बाजू में आकर बैठूँगा। मेरे में पॉवर है, (ब्रह्मा के) आरगन्स मिल गये, तो मैं धनी हो गया। इन आरगन्स द्वारा बैठ समझाता हूँ, इनको (ब्रह्मा को) 'एडम' भी कहा जाता है। एडम है पहला-पहला आदमी। मनुष्यों का सिजरा है ना। **यह माता-पिता भी बनते हैं, इनसे फिर रचना होती है;** है पुराना, परन्तु एडाप्ट किया है, नहीं तो ब्रह्मा कहाँ से आया?

SM, Revised 22.06.2019
ज्ञान अमृत मुख से मिलता है। गऊमुख कहते हैं ना, अर्थात् माता का यह मुख है। बड़ी माता द्वारा तुमको एडाप्ट करते हैं। कौन? शिवबाबा। वह यहाँ है ना। यह ज्ञान सारा बुद्धि में रहना चाहिए। **मैं तुमको प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करता हूँ। तो यह माता भी हो गई।**

SM, Revised 19.01.2018
तो कहते हैं, मैं इस शरीर को धारण कर, इनके मुख द्वारा बच्चे एडाप्ट करता हूँ। **यह ब्रह्मा पिता भी है, (निमित्त) मनुष्य सृष्टि रचने वाला, और माता भी है, जिसके मुख से बच्चे एडाप्ट करता हूँ।** इस रीति बच्चों को एडाप्ट करना - यह सिर्फ बाप का काम है।

SM, Revised 12.01.2018
तुम जानते हो हमारी सच्ची-सच्ची माता, कायदे अनुसार, यह ब्रह्मा है। यह भी समझना है। याद भी ऐसे करेंगे। **यह माता भी है, तो बाबा भी है। लिखते हैं, 'शिवबाबा, केयरआफ ब्रह्मा'। तो माता भी हो जाती है, तो पिता भी हो जाता। अब बच्चों को इस पिता की दिल पर चढ़ना है क्योंकि इनमें ही शिवबाबा प्रवेश होते हैं।** …
यह बड़ी गुह्य बात है, जो एक को ही 'माता-पिता' कहते हैं। **यह बाप भी है, तो बड़ी माँ भी है।** अब यह बाबा किसको माँ कहे? यह माता (ब्रह्मा) अब किसको माँ कहे? इस माँ की तो माँ कोई हो नहीं सकती। जैसे शिवबाबा का कोई बाप नहीं, ऐसे इन्हें अपनी कोई माँ नहीं। …
यह बड़ी माँ बैठी है, इनसे सर्टीफिकेट मिल सकता है। इस वन्डरफुल मम्मी को कोई मम्मी नहीं। जैसे उस (शिव) बाप को कोई बाप नहीं। फिर मम्मा (ओम राधे), फीमेल्स में, नम्बरवन है।

SM, Revised 05.09.2018
ज्ञान सूर्य (शिव), फिर ज्ञान चन्द्रमा यह (ब्रह्मा) हुए, फिर चाहिए ज्ञान चन्द्रमा के नज़दीक एक सितारा, जो चन्द्रमा के सामने खड़ा रहता है। वह बहुत तीखा होता है। उनको ज्ञान लक्की सितारा कहेंगे। उनका नाम सरस्वती रखा हुआ है। सरस्वती बेटी हो गई ना। **यह (ब्रह्मा) तो बाप भी हुआ, बड़ी नदी (माँ) भी हुई।** बहुत बड़ी नदी है। …
'मात-पिता' कहा जाता है निराकार को। परन्तु यह समझते नहीं कि इनको 'मात-पिता' क्यों कहा जाता है! वह तो 'गॉड फादर' है। **फिर कहते हैं, एडम और ईव। एडम ही ईव है, यह नहीं समझते। प्रजापिता ब्रह्मा, वही फिर माता हो जाती है।** एडम और ईव अथवा 'आदम-बीबी' कहते हैं। परन्तु अर्थ नहीं समझ सकते हैं। **बच्चे समझ सकते हैं, 'आदम-बीबी' वास्तव में यह (ब्रह्मा) है; बीबी सो**

आदम है। इनको 'बीबी-आदम', दोनों कह देते हैं। वह (शिव) तो है बाप। यह बड़ी पेचीली बातें हैं। भारत में गाते भी हैं, 'तुम मात-पिता ..', ऐसे ही सुनी-सुनाई पर गाते रहते हैं, अर्थ कुछ नहीं समझते।

SM, Revised 11.05.2018 (Original 15.05.1964 Page 2)
'त्वमेव माताश्च पिता ..', कहते हैं, तो फादर के साथ मदर भी चाहिए। **मनुष्य समझते हैं - एडम ब्रह्मा, ईव सरस्वती। वास्तव में यह रांग है।** निराकार गॉड फादर है, तो मदर भी जरूर होगी। परन्तु वो लोग ईव, जगत अम्बा को कह देते हैं। वास्तव में यह बहुत गुह्य बात है। निराकार शिवबाबा इस ब्रह्मा मुख से कहते हैं - तुम हमारे बच्चे हो। तो यह ब्रह्मा माता बन जाती। **(ब्रह्मा) प्रजापिता भी है, तो माता भी है।** वह है सुप्रीम रूहानी बाप। फिर स्थूल में माता, ब्रह्मा की बेटी, सरस्वती कहलाती है।

SM, Revised 03.12.2016
कितनी समझने की बातें हैं। प्रजापिता ब्रह्मा को भी पिता कहते हैं। तो माता कहाँ? **बाप बैठ समझाते हैं कि यह प्रजापिता भी है, तो माता भी है।** मैं तो सभी आत्माओं का बाप हूँ। मुझे ही 'गॉड फादर' कहते हैं।

SM, Revised 18.07.2016
यह शरीर तो इनका है ना। मैं सिर्फ इनमें आकर प्रवेश करता हूँ। मुख ही काम में लाता हूँ - तुम बच्चों को पतित से पावन बनाने। गऊ मुख भी कहते हैं ना। बरोबर गऊ भी है। तुम जानते हो इनसे ही तुम बच्चों को एडाप्ट करते हैं। **यह मात-पिता - दोनों हैं।** परन्तु माताओं को सम्भाले कौन! इसलिए सरस्वती को निमित्त रखा - ड्रामा प्लैन अनुसार।

SM, Original 05.05.1967 (Page 2)
बाप ने भी इनमें प्रवेश किया तो इनका नाम बदल दिया। इनको एडॉप्ट करके जैसे कि घरवाली बना लिया। कहते हैं इन द्वारा मैं तुमको अपना बनाता हूँ। **इनको माता भी कहा जाता है, तो पिता भी।**

SM, Original 12.03.1968 (Page 4)
ब्राह्मण बनने बिगर देवता कैसे बन सकते हैं? **बहुत हैं जो ब्रह्मा को ही नहीं मानते। डाइरेक्ट शिवबाबा से लेने चाहते हैं। मिलता कुछ भी नहीं।** बहुत हैं जो ब्रह्मा को नहीं मानते। कहते हैं हम तो शिवबाबा को ही याद करते हैं। छोड़ो ब्रह्मा को। **ऐसे भी हैं जो ब्रह्मा को नहीं मानते। वह हुआ शूद्र। शूद्र से तो संग भी नहीं, बात भी नहीं करनी चाहिए।** ईविल हैं ना? समझते हैं हमको डाइरेक्ट शिव से मिलता है। मिलेगा कुछ नहीं। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है ही ब्राह्मण कुल का। ब्राह्मण नहीं कहलायेंगे तो गोया शूद्र ही ठहरे। ब्राह्मण और शूद्र आपस में मिल न सकें। वह हंस, वह बगुला। **ब्राह्मण कुल में ही नहीं आया, तो हंस बन कैसे सकेंगे? कुछ भी समझते नहीं। भूले हुए हैं। देह अभिमानी हैं!**

प्रजापिता

ब्रह्मा बाबा ही (निमित्त) देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला (REAL) प्रजापिता है

17] रावण राज्य के अलग-अलग धर्मों के (APPARENT) प्रजापिता - जिनका 'शूटिंग' यज्ञ में 1969 के बाद होता है - वे पिछाड़ी में सलाम करने आयेंगे जरूर; निराकार पारलौकिक शिवबाबा, सिर्फ (REAL) प्रजापिता ब्रह्मा (लेखराज की आत्मा) में आते हैं - जो सारी दुनिया का (अलौकिक) पिता है, ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर है; शिवबाबा, विष्णु या शंकर द्वारा नहीं बोलते हैं; (APPARENT) प्रजापिताओं के फोल्लौएर्स, ठीक न समझकर, अनजाने उल्टा रास्ता ले, जंगल में जाकर पड़ते हैं!

AV, Original 19.12.1985
विष्णु को, वा शंकर को 'प्रजापति' नहीं कहते। वह मालिक के हिसाब से 'पति' कह देते हैं। लेकिन है पिता। जितना ही जगत का प्यारा, उतना ही जगत से न्यारा बन, अभी अव्यक्त रूप में 'फॉलो (follow) अव्यक्त स्थिति भव' का पाठ पढ़ा रहे हैं। समझा? किसी भी आत्मा का ऐसा इतना न्यारापन नहीं होता। यह न्यारेपन की, ब्रह्मा की कहानी फिर सुनायेंगे।

SM, Revised 11.12.2018
जैसे यह (ब्रह्मा) देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला प्रजापिता ब्रह्मा है, अभी झाड़ की एन्ड (अन्त) में खड़ा है - क्राइस्ट भी क्रिश्चियन धर्म का प्रजापिता है ना। **जैसे यह प्रजापिता ब्रह्मा, वैसे वो प्रजापिता क्राइस्ट, प्रजापिता बुद्ध .. ; यह सब धर्म की स्थापना करने वाले हैं।** सन्यासियों का शंकराचार्य उनको भी पिता कहेंगे। वह गुरू कहते हैं। कहेंगे हमारा गुरू शंकराचार्य था, तो यह जो डाल के आदि में खड़े हैं, यह फिर जन्म लेते-लेते अन्त में आते हैं। अभी सब तमोप्रधान स्टेज में हैं। यह भी आकर समझेंगे। **पिछाड़ी में सलाम करने आयेंगे जरूर। उन्हों को भी कहेंगे, बेहद के बाप को याद करो। बेहद का बाप सबके लिए कहते हैं, देह सहित देह के सब सम्बन्धों को छोड़ो। यह ज्ञान हर एक धर्म वालों के लिए है।**

SM, Revised 04.07.2020
ब्रह्मा भी शिवबाबा का बच्चा है – प्रजापिता है, तो वह (शिव) भी बाप, यह (ब्रह्मा) भी बाप। … बहुतों को (ब्रह्मा) बाबा का, फिर प्रिन्स (श्री कृष्ण) का भी साक्षात्कार होता है। आगे चल बहुतों को साक्षात्कार होंगे; फिर भी पुरूषार्थ तो करना पड़े।

SM, Revised 29.06.2020
बाप ने इनमें (ब्रह्मा में) प्रवेश किया है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर का चित्र भी है ना। **ब्रह्मा है सबसे ऊंच। तो उनको छोड़, बाप किसमें आयेंगे?**

SM, Revised 18.06.2020
प्रजापिता माना ही मुख से एडाप्ट करने वाला, तुम हो मुख वंशावली। अब तुम जानते हो कि कैसे ब्रह्मा को बाप ने अपना बनाकर मुख वंशावली बनाया है; इनमें प्रवेश भी किया, फिर कहा कि यह हमारा बच्चा भी है।

SM, Revised 19.05.2020
तुम ब्रह्मा मुख वंशावली एडाप्टेड हो। प्रजापिता ब्रह्मा बच्चे कैसे पैदा करेंगे, जरूर एडाप्ट करेंगे। जैसे गुरू के फोल्लौएर्स एडाप्ट होते हैं, उनको कहेंगे शिष्य। **तो प्रजापिता ब्रह्मा सारी दुनिया का पिता हो गया। उनको कहा जाता है - ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर।**

SM, Revised 21.02.2020
तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे, ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ (B.K.)। वह ब्राह्मण तो ब्रह्मा बाप को जानते ही नहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो - बाप जब आते हैं, तो ब्रह्मा-विष्णु-शंकर भी जरूर चाहिए। कहते ही हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। **अब तीनों द्वारा तो नहीं बोलेंगे ना? यह बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करनी है।**

SM, Revised 11.01.2020
बाप तो है ही हाइएस्ट अथॉरिटी, और फिर यह प्रजापिता ब्रह्मा भी हाइएस्ट अथॉरिटी ठहरे। यह दादा है सबसे बड़ी अथॉरिटी। शिव और प्रजापिता ब्रह्मा। आत्मायें हैं शिव बाबा के बच्चे, और फिर साकार में हम भाई-बहन सब हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। **यह है सबका ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर।**

SM, Revised 08.01.2020
अब ब्रह्मा की कोई स्त्री तो है नहीं। यह तो बाप का बन गया। कैसी वन्डरफुल बातें हैं। **मात-पिता तो यह है ना। यह (ब्रह्मा) प्रजापिता भी है, फिर इन द्वारा बाप रचते हैं, तो 'माँ' भी ठहरी।** सरस्वती ब्रह्मा की बेटी गाई जाती है।

SM, Revised 31.12.2019 (Original 10.01.1969)
तो पहले-पहले समझानी देनी है एक बाप की। **शिव को 'बाबा' कह, सभी याद करते हैं। दूसरा, ब्रह्मा को भी 'बाबा' कहते हैं। प्रजापिता है, तो सारी प्रजा का पिता हुआ ना। ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर।** यह सारा ज्ञान अभी तुम बच्चों में है। **प्रजापिता ब्रह्मा तो कहते बहुत हैं, परन्तु यथार्थ रीति जानते कोई नहीं।**

SM, Revised 19.12.2019 (Original 09.01.1969)
बेहद का बाप बैठ इन द्वारा तुमको पढ़ाते हैं। वह है सभी आत्माओं का बाप। **यह फिर है सभी मनुष्य आत्माओं का बेहद का (अलौकिक) बाप; नाम ही है प्रजापिता ब्रह्मा।**

SM, Revised 21.11.2019 (Original 27.11.1968)
आत्माओं का फादर तो दूसरा कोई होता नहीं। यह प्रजापिता ब्रह्मा भी कहते हैं - निराकार फादर (शिव) को याद करना है। **यह (ब्रह्मा) कारपोरियल फादर हो जाता है।** समझाया तो बहुत जाता है, **कई पूरा न समझकर उल्टा रास्ता ले, जंगल में जाकर पड़ते हैं। बाप तो रास्ता बताते हैं स्वर्ग में जाने का। फिर भी जंगल तरफ चले जाते हैं।**

SM, Revised 02.11.2019 (Original 26.12.1968)
राजयोग है ही प्रवृत्ति मार्ग का। प्रजापिता ब्रह्मा को 4 भुजायें देते हैं, तो प्रवृत्ति मार्ग हुआ ना। यहाँ बाप ने इनको एडाप्ट किया तो नाम रखा है 'ब्रह्मा और सरस्वती'। ड्रामा में नूँध देखो कैसी है। वानप्रस्थ अवस्था में ही मनुष्य गुरू करते हैं, 60 वर्ष के बाद। **इसमें (ब्रह्मा में) भी 60 वर्ष के बाद बाप ने प्रवेश किया तो बाप, टीचर, गुरू बन गये।**

SM, Revised 28.10.2019 (Original 04.11.1968)
मैं आता हूँ ब्रह्मा तन में। **मनुष्यों को तो पता ही नहीं है कि ब्रह्मा कौनसा? सुना है प्रजापिता ब्रह्मा। तुम प्रजा हो ना ब्रह्मा की, इसलिए अपने को बी.के. (B.K.) कहलाते हो।** वास्तव में शिवबाबा के बच्चे शिववंशी हो, जब निराकार आत्मायें हो - फिर साकार में प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई-बहन हो, और कोई भी सम्बन्ध नहीं है।

SM, Revised 02.10.2019 (Original 26.10.1968)
बाप कहते ही हैं, मै बुजुर्ग के तन में आता हूँ। शास्त्रों में भी है, परन्तु **शास्त्रों की सब बातें एक्यूरेट नहीं होती*, कोई-कोई बात ठीक है। *ब्रह्मा की आयु माना प्रजापिता ब्रह्मा की आयु कहेंगे।**

SM, Revised 28.09.2019 (Original 02.10.1968)
बाबा तुमको और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं - मुझे याद करो। कोई भी किताब आदि उठाने की दरकार नहीं। **(शिव) बाबा कोई किताब उठाता है क्या? बाप कहते हैं, मैं आकर इस प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करता हूँ। प्रजापिता है ना।**

SM, Revised 20.09.2019 (Original 11.10.1968)
बाप कहते हैं, मैं इसमें आता हूँ तो भी मेरा नाम शिव ही है। मैं इस रथ द्वारा तुमको नॉलेज देता हूँ, **इनको एडाप्ट किया है। इनका नाम रखा है 'प्रजापिता ब्रह्मा'।** इनको भी मेरे से वर्सा मिलता है।

[PROOF - गुलज़ार दादी के तन में बापदादा, दोनों आते हैं!]
AV, Original 19.12.1985
जब लोन लेते हैं, तो अच्छा मालिक वो ही होता है, जो शरीर को, स्थान को, शक्ति प्रमाण कार्य में लगावे। फिर भी, बापदादा, दोनों के शक्तिशाली पार्ट को, रथ चलाने के निमित्त बना है। यह भी ड्रामा में विशेष वरदान का आधार है। **कई बच्चों को क्वेश्चन भी उठता है कि यही रथ निमित्त क्यों बना? दूसरे तो क्या - इनको (गुलज़ार बहन को) भी उठता है। लेकिन जैसे ब्रह्मा भी अपने जन्मों को नहीं जानते थे ना, यह भी अपने वरदान को भूल गई है।** यह विशेष साकार ब्रह्मा का आदि साक्षात्कार के पार्ट समय का बच्ची को वरदान मिला हुआ है। ब्रह्मा बाप के साथ आदि समय एकान्त के तपस्वी स्थान पर, इस आत्मा के विशेष साक्षात्कार के पार्ट को देख, ब्रह्मा बाप ने बच्ची के सरल स्वभाव, **इनोसेन्ट जीवन की विशेषता को देख, यह वरदान दिया था कि जैसे अभी इस पार्ट में आदि में ब्रह्मा बाप की साथी भी बनी और साथ भी रही, ऐसे आगे चल बाप के साथी बनने की, समान बनने की ड्यूटी भी सम्भालेगी। ब्रह्मा बाप के समान सेवा में पार्ट बजायेगी। तो वो ही वरदान तकदीर की लकीर बन गये, और ब्रह्मा बाप समान रथ बनने का पार्ट बजाना यह नूँध नूँधी गई।** फिर भी बापदादा इस पार्ट बजाने के लिए बच्ची को भी मुबारक देते हैं। इतना समय इतनी शक्ति को एडजस्ट करना, यह एडजस्ट करने की विशेषता की लिफ्ट के कारण, एक्स्ट्रा गिफ्ट है। फिर भी बापदादा को शरीर का सब देखना पड़ता है। बाजा पुराना है, और चलाने वाले शक्तिशाली हैं। फिर भी 'हाँ जी, हाँ जी' के पाठ के कारण अच्छा चल रहा है। लेकिन **बापदादा भी विधि और युक्ति पूर्वक ही काम चला रहे हैं। मिलने का वायदा तो है, लेकिन विधि, समय प्रमाण परिवर्तन होती रहेगी।**

पतित-पावन - त्रेता का राम नहीं

18] ‘राम’ कहा जाता है शिव बाप को - जो गर्भ में प्रवेश नहीं करते हैं; ‘राम’ माना गॉड (God); ‘राम बाप’ अर्थात शिव बाप - न कि त्रेता का राम; शिव बाप को ‘राजा राम’ नहीं कहेंगे; ‘पतित-पावन सीताराम ..’, अर्थात सभी आत्मा रूपी सीताओं का ‘राम’ (शिव); राम को ‘बाबा’ कोई कहते नहीं - शिव को ‘बाबा’ कहते हैं; परमपिता परमात्मा को सारी दुनिया मानेगी; राम-सीता को तो सारी दुनिया नहीं मानेगी!

SM, Original 27.06.1964
गाते भी हैं, ‘सर्व का सद्गति दाता राम, पतित-पावन सीताओं का राम।’ … **‘रघुपति राजाराम’ कहते हैं - यह तो है झूठ।**

SM, Original 21.09.1967
रामराज्य अर्थात ईश्वर का स्थापन किया हुआ। सतयुग को कहा जाता है रामराज्य। **माला सिमरते हैं ना। रघुपति राजा राम को नहीं सिमरते हैं।**

SM, Revised 22.08.2019
तो सबका सुख दाता एक (निराकार) शिवबाबा है। वही ऊंच ते ऊंच बाप है, उनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। बेहद का बाप जरूर बेहद का वर्सा देते हैं। ... **‘राम’ कहा जाता है (शिव) बाप को। वह (त्रेता का) राम नहीं, जिसकी सीता चुराई गई। वह कोई सद्गति दाता थोड़ेही है; वह राम, राजा था। महाराजा भी नहीं था।** महाराजा और राजा का भी राज़ समझाया है - वह 16 कला, वह 14 कला।

SM, Revised 11.12.2018
अभी रावण राज्य खलास होगा, फिर ईश्वरीय राज्य होगा। **‘राम राज्य’ कहते हैं ना। सीता के राम को नहीं जपते हैं। माला में ‘राम-राम’ जपते हैं ना। वह परमात्मा (शिव) को याद करते हैं। जो सर्व का सद्गति-दाता है, उनको ही जपते रहते हैं। ‘राम’ माना गॉड (God)।**

SM, Revised 02.11.2018
भगवान् तो निराकार (शिव) को कहा जाता है, फिर ‘तुम रघुपति राघव राजा राम’ क्यों कहते हो? आत्माओं का बाप तो वह निराकार (शिव) ही है, समझाने की बड़ी ही युक्ति चाहिए।

SM, Revised 15.10.2018
वर्सा देते हैं परमपिता परमात्मा, और श्राप देते हैं रावण। **मनुष्यों की बुद्धि फिर चली जाती है ‘रघुपति राघव राजा राम’ तरफ; परन्तु ‘राम’ तो है परमपिता परमात्मा (शिव)।** यह सब बुद्धि चलाकर चित्र बनाना चाहिए क्योंकि आजकल अपने को भगवान् तो सब कहते रहते। तुम जानते हो बाप तो एक ही (शिव) है।

SM, Revised 29.09.2018
मनुष्य सब पतित हैं, इसलिए गाते रहते हैं, ‘पतित-पावन सीताराम, रघुपति राघव राजा राम ..’; **अब ‘राजा राम’ तो शिवबाबा को नहीं कहेंगे। ‘राम’ परमपिता परमात्मा (शिव) को कहा जाता है; ‘राजा राम’ नहीं!** ... बाप कहते हैं, मैं हूँ निराकार। मुझे भी प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। **मैं गर्भ में प्रवेश नहीं करता हूँ,** मैं इनमें प्रवेश करता हूँ।

SM, Revised 26.12.2017
यह कोई समझते नहीं हैं कि पतित-पावन एक ही परमात्मा (शिव) है। **गाते हैं, ‘पतित-पावन सीताराम ..’; उसका अर्थ भी बाप ही समझाते हैं कि सभी सीताओं का ‘राम’, एक ही परमात्मा है।** ... बाप समझाते हैं, सबका दाता ‘राम’, तो एक निराकार ही है।

SM, Revised 28.09.2017

जरूर बच्चे जानते हैं, देवी-देवताओं का राज्य था। रामराज्य स्थापन हुआ। ‘राम’ नाम रख दिया है। वास्तव में नाम ‘शिव’ है। शिवाए नम: कहते हैं। रामाए नम: नहीं कहते हैं। **‘शिवबाबा’ अक्षर बहुत राइट है। राम को ‘बाबा’ कोई कहते नहीं। शिव को ‘बाबा’ कहते हैं। ‘राम’ यानी परमपिता परमात्मा (शिव), न कि रघुपति राघव राजा राम। मनुष्य जो सुनते, वह बोलते जाते हैं।** अब सिवाए तुम बच्चों के, और कोई भी परमपिता परमात्मा के साथ, यथार्थ योग नहीं लगाते हैं।

SM, Revised 14.08.2017

वास्तव में सीतायें तुम हो, ‘राम’ है निराकार (शिव) भगवान। सभी भगत हैं, पुकारते हैं, ‘हे राम, हे भगवान, आप आकर हम सीताओं को पावन बनाओ’, फिर ‘रघुपति राघव राजाराम’ कह देते हैं! **सुनी सुनाई बात को पकड़ लिया है।**

SM, Revised 14.03.2017

गाते भी हैं, ‘पतित-पावन सीताराम’। परन्तु पावन बनाने वाला कौन है - यह कोई नहीं जानते। गीता का भगवान कृष्ण समझ लिया है। राम का तो कोई शास्त्र नहीं है। ऐसे नहीं रामायण कोई रामचन्द्र का शास्त्र है। क्षत्रिय धर्म कोई (त्रेता का) राम ने नहीं स्थापन किया। **ब्राह्मण, देवता और क्षत्रिय - तीनों धर्म एक साथ ही शिवबाबा स्थापन करते हैं। तुम्हारे में भी थोड़े हैं, जो इस बात को समझ सकते हैं।**

SM, Revised 02.02.2017

यह तो कोई को पता ही नहीं, तो ‘राम राज्य’ किसको कहा जाता है। जरूर ‘राम’ (शिव) ही रामराज्य बनायेंगे। उन्हों की बुद्धि में सीता-राम वाला राज्य आ गया है। ...

वास्तव में ‘राम’ तो परमपिता परमात्मा (शिव) को कहा जाता है।

SM, Revised 08.09.1996

राम-सीता को तो सारी दुनिया नहीं मानेगी। यह भूल है। सारी दुनिया परमपिता परमात्मा को लिबरेटर-गाइड मानती है। लिबरेट करते हैं, दुखों से।

SM, Revised 26.11.1996

सिर्फ कह देते हैं - रामराज्य चाहिए। **‘राम’ कोई रघुपति वाला नहीं। उनके लिए शास्त्रों में बहुत उल्टी बातें लिख दी हैं।**

SM, Revised 19.11.1997

बुलाते रहते हैं, परन्तु पतित-पावन को जानते नहीं। **कह देते हैं, ‘रघुपति राघव राजाराम’। वह तो है नहीं। झूठा बुलावा करते हैं, जानते कुछ भी नहीं।**

‘ऊंच ते ऊंच भगवान’ - कोई भी देहधारी को नहीं कह सकते

19] परमपिता परमात्मा शिव विदेही है - देहधारी नहीं है; शिवबाबा कोई शास्त्र, गीता आदि पढ़ा हुआ नहीं है; कोई भी देहधारी को ‘भगवान’, ‘रचयिता’ नहीं कहा जाता; ‘भगवान’ सिर्फ एक ऊंचे से ऊंचा, निराकार शिवबाबा को ही कहा जाता है; याद सिर्फ एक विदेही, निराकार शिव को करना है - कोई भी देहधारी को याद किया, तो दुर्गति को पायेंगे!

SM, Revised 01.05.2020
विदेही एक ही है, जिसको परमपिता परमात्मा शिव कहा जाता है। तुम्हें अब उनके साथ ही बुद्धि का योग जोड़ना है। **कोई देहधारी को याद नहीं करना है।**

SM, Revised 13.03.2020
अभी तुम बच्चे जानते हो, हमको पढ़ाने वाला कोई देहधारी नहीं है, न कोई शास्त्र आदि कुछ पढ़ा हुआ है। शिवबाबा कोई शास्त्र पढ़ा है क्या? पढ़ते हैं मनुष्य। शिवबाबा कहते हैं - मैं गीता आदि कुछ पढ़ा हुआ नहीं हूँ। यह रथ जिसमें बैठा हूँ, यह (ब्रह्मा बाबा) पढ़ा हुआ है, मैं नहीं पढ़ा हुआ हूँ। मेरे में तो सारे सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है।

SM, Revised 17.02.2020
भगवानुवाच - कोई भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जाता। … भगवान कभी भी जन्म-मरण के खेल में नहीं आता। यह ड्रामा अनुसार नूँध है।

SM, Revised 23.08.2019
आत्मा में मन-बुद्धि है ना। तो आत्मा को बुद्धि से याद करना है। ... **बाप को ही परमात्मा कहते हैं, उनका असुल नाम है शिव। … तुमको इन ब्रह्मा को याद नहीं करना है। यह तो देहधारी है। तुमको याद करना है विदेही को। … अपने को ‘परमात्मा’, वा ‘ईश्वर’ भी कोई कह न सकें। … ‘भगवान’ कोई देहधारी को नहीं कहा जाता है। वह है ही निराकार शिव।**

SM, Revised 13.11.2018
उन्हें समझाना है कि भगवान तो निराकार को कहा जाता है। देहधारी तो बहुत हैं। बिगर देह, है ही एक। वह है ऊंचे से ऊंचा शिवबाबा। यह अच्छी रीति बुद्धि में बिठाओ। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है, वही ऊंच ते ऊंच निराकार परमपिता परमात्मा है।

SM, Revised 01.12.2017
कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। बुद्धियोग ऊपर में लटका हुआ होना चाहिए। ऐसे नहीं कि बाबा यहाँ है, तो बुद्धि भी यहाँ रहे! भल बाबा यहाँ है, तो भी तुमको बुद्धियोग वहाँ, शान्तिधाम में, लगाना है।

SM, Revised 18.11.2017
तुम्हारे सामने यह देहधारी बैठा हुआ है, इनको भी याद नहीं करना है। **तुमको याद सिर्फ एक विदेही को करना है, जिसको अपनी देह नहीं है।** … अगर इस साकार को याद किया, तो वह याद निष्फल है। … **देहधारी को याद किया, तो दुर्गति को पायेंगे। … एक मुझ निराकार को ही याद करो। गायन भी एक का ही है, ‘शिवाए नम:’; शिव है विदेही।**

SM, Revised 19.05.2017
वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी तो जरूर वर्ल्ड का रचयिता बीजरूप ही सुनायेंगे। वही नॉलेजफुल है। वह है निराकार शिव। देहधारी को भगवान रचयिता कह नहीं सकते। निराकार ही सभी आत्माओं का पिता है। वह बैठ आत्माओं को समझाते हैं।

SM, Revised 27.12.2016
यहाँ तो यह शिक्षा मिलती है कि एक बाप को याद करो। **ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी याद नहीं करना है। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है।** तुम बच्चे भी कहते हो, हमारा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई।

भगवान को न स्थूल, न सूक्ष्म शरीर है

20] कोई भी देहधारी मनुष्य को, या देवता को, 'भगवान' कह नहीं सकते; सिर्फ एक निराकार शिव को ही 'भगवान' कहेंगे; ऊंच ते ऊंच भगवान को कोई देह नहीं है; परमपिता परमात्मा शिव का, न आकारी, न साकारी रूप है; प्रजापिता को 'भगवान' नहीं कहा जाता है - 'भगवान' है ही एक निराकार शिव!

SM, Revised 06.06.2020
तुमको कोई देहधारी ज्ञान नहीं सुनाते हैं। (शिव) बाप को तो देह है नहीं। और तो सबको देह है, जिनकी पूजा करते हैं; उनको याद करना तो सहज है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को कहेंगे 'देवता'। **शिव को 'भगवान' कहते हैं। ऊंच ते ऊंच भगवान, उनको देह है नहीं।**

SM, Revised 13.03.2020
यह तो बहुत बार समझाया है - **कोई मनुष्य को, या देवता को, अथवा सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को 'भगवान' नहीं कहा जाता। जिनका कोई आकार वा साकार चित्र है उनको 'भगवान' नहीं कह सकते। 'भगवान' कहा ही जाता है (निराकार) बेहद के बाप को।**

SM, Revised 18.02.2020
तुम जानते हो किसी भी देहधारी मनुष्य को 'भगवान' कह नहीं सकते। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भी 'भगवान' नहीं कहेंगे। वह भी सूक्ष्मवतनवासी देवतायें हैं। यहाँ हैं मनुष्य।

SM, Revised 17.02.2020
भगवानुवाच। **यह तो बाप ने समझाया है कि मनुष्य को वा देवताओं को 'भगवान' नहीं कहा जाता क्योंकि इनका साकारी रूप है। बाकी परमपिता परमात्मा का न आकारी, न साकारी रूप है, इसलिए उनको शिव परमात्माए नम: कहा जाता है। ज्ञान का सागर वह एक ही है।** …
सभी आशिक आत्मायें परमपिता परमात्मा माशूक को याद करती हैं। सभी सीतायें हैं, 'राम' एक परमपिता परमात्मा है। 'राम' अक्षर क्यों कहते हैं? रावणराज्य है ना। तो उसकी भेंट में रामराज्य कहा जाता है। **'राम' है बाप, जिसको 'ईश्वर' भी कहते हैं, 'भगवान' भी कहते हैं। असली नाम उनका है शिव।**

SM, Revised 10.12.2019 (Original 16.01.1969)
'भगवान' कभी देहधारी मनुष्य को नहीं कहा जाता। इन्हों को (ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को) भी अपनी सूक्ष्म देह है, इसलिए इन्हें भी 'भगवान' नहीं कहेंगे। यह शरीर तो इस दादा की आत्मा का तख्त है। अकाल तख्त है ना। अभी यह अकालमूर्त बाप का तख्त है।

SM, Revised 20.09.2019 (Original 11.10.1968)
भगवानुवाच है ना। परन्तु उनकी बुद्धि में है 'कृष्ण भगवान'। वह तो देहधारी पुनर्जन्म में आने वाला है ना। उनको 'भगवान' कैसे कह सकते हैं?

SM, Revised 23.08.2019
कहते भी हैं भक्ति का फल भगवान देते हैं। **'भगवान' कोई देहधारी को नहीं कहा जाता है। वह है ही निराकार शिव।** उनकी शिवरात्रि मनाते हैं, तो जरूर आते हैं ना। परन्तु कहते, मैं तुम्हारे सदृश्य जन्म नहीं लेता हूँ, मुझे शरीर का लोन लेना पड़ता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। … ब्रह्मा है शिव का बेटा। शिवबाबा, अपने बच्चे ब्रह्मा में प्रवेश कर तुमको ज्ञान देते हैं।

SM, Revised 12.06.2018
जैसे क्राइस्ट के जड़ चित्र भी बनाते हैं। अब वह तो है देहधारी; और जो भी हैं, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, देहधारी हैं। **इन सबसे ऊंच ते ऊंच है भगवान, उनको अपना शरीर नहीं है। उनको तो सभी 'बाप' कहेंगे। परमपिता 'गॉड फादर'। उनको तो न स्थूल शरीर है, न सूक्ष्म शरीर है।** आते भी हैं जरूर।

SM, Revised 24.12.2015
प्रजापिता को 'भगवान' नहीं कहा जाता है। (शिव) भगवान का कोई शरीर का नाम नहीं। मनुष्य तन जिस पर नाम पड़ते हैं, उनसे वह न्यारा है।

‘आत्मा सो परमात्मा’ कहना रांग (wrong) है

21] ‘आत्मा सो परमात्मा’ कहना, यह तो बहुत बड़ी भूल है - यह बड़े ते बड़ा अज्ञान है; अपने को ‘भगवान्’ कहना - यह तो एक इन्सल्ट है, इससे बड़ी इन्सल्ट कोई होती नहीं; जो अपने को ‘परमात्मा’, बाप, समझते हैं, वे रसातल में चले जाते हैं!

SM, Revised 23.12.2019 (Original 08.01.1969)
एक बाप, बीजरूप, को ही ‘ज्ञान का सागर’ कहा जाता है। वह इस सृष्टि चक्र में नहीं आते हैं। ऐसे नहीं कि हम आत्मा सो परमात्मा बन जाते हैं – नहीं! बाप आपसमान नॉलेजफुल बनाते हैं। आप समान ‘गॉड’ (God) नहीं बनाते, इन बातों को अच्छी रीति समझना चाहिए, तब ही बुद्धि में चक्र चल सकता है।

22.10.2019 (Original 25.11.1968)
वही एक परम आत्मा है, जिसको परमात्मा कहा जाता है। उनका नाम है शिव। उनके शरीर का नाम नहीं पड़ता है। और जो भी हैं सबके शरीर का नाम पड़ता है।

SM, Revised 01.02.2019
84 जन्मों के सारे सृष्टि के चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान तुमको मिला है। फिर **तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। कोई बहुत मार्क्स से पास होते हैं, कोई कम। सौ मार्क्स तो किसी की होती नहीं। 100 हैं ही एक बाप की। वह तो कोई बन न सके। थोड़ा-थोड़ा फ़र्क पड़ जाता है।** एक जैसे भी बन न सकें। कितने ढेर मनुष्य हैं, सबके फीचर्स अपने-अपने हैं। आत्मायें सभी कितनी छोटी बिन्दू हैं। मनुष्य कितने बड़े-बड़े हैं, परन्तु फीचर्स एक के न मिलें दूसरे से।

SM, Revised 30.10.2018
आत्मा सो परमात्मा’ कहना, यह तो बहुत बड़ी भूल है।

SM, Revised 18.09.2018
जो भी मनुष्य मात्र हैं, सिवाए तुम ब्राह्मणों के, और कोई भी आत्मा और परमात्मा को नहीं जानते। **‘हम सो परमात्मा’ कह देने से, न आत्मा को, न परमात्मा को जानते।** … माया बड़ी जबरदस्त है। ... **अपने को परमात्मा तो कभी नहीं समझना है!**

SM, Revised 26.06.2018
समझाना चाहिए, तुम तो जीव आत्मा हो, परमात्मा तो फादर, एक है। फिर तुम लोग ‘आत्मा सो परमात्मा’ क्यों कहते हो? **पतित-पावन परमात्मा तो एक ही है। तुम तो पुनर्जन्म लेने वाले हो। परमात्मा को तो अपना शरीर नहीं है। वह है रुद्र शिव। मनुष्य को ‘परमात्मा’ कह नहीं सकते।** …
‘आत्मा सो परमात्मा’ कहना भूल है। **परमात्मा कभी पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। तुम तो सदा पुनर्जन्म लेते हो।** मेरा जन्म दिव्य अलौकिक है। मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ।

SM, Revised 25.06.2018
तुम जानते हो - **कोई भी आत्मा अपने को ‘भगवान्’ कह नहीं सकती।** … **भगवान् तो पुनर्जन्म ले नहीं सकता। ऐसे तो नहीं भगवान् को अपना शरीर है।** … ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भी परमात्मा नहीं कहेंगे। … **अपने को ‘भगवान्’ कहना - यह तो एक इन्सल्ट है, इससे बड़ी इन्सल्ट कोई होती नहीं!**

SM, Revised 08.06.2018
अपने को आत्मा निश्चय करो। **ऐसे न कहो – 'अहम् आत्मा सो परमात्मा'। यही तो तुम बाप को 84 जन्मों के चक्र में ढकेल देते हो। अपने को बाप समझ, 84 जन्मों के चक्र में डाल दिया है। यह कहने से तुम रसातल में चले गये हो।**

SM, Revised 10.05.2018
बाकी, **'आत्मा सो परमात्मा' कहना - यह बड़े ते बड़ा अज्ञान है।**

SM, Revised 02.04.2018
तुम जानते हो, **सिवाए (एक निराकार) बाप के, कोई भी मनुष्य को 'भगवान' कहना रांग है! भगवान है ही एक।**

SM, Revised 23.06.2016
आत्म-अभिमानी तो एक बाप ही है, जो बच्चों को समझाते हैं कि परमात्मा तो मैं एक ही हूँ। **'हम आत्मा सो परमात्मा' कहना – यह बड़े से बड़ी झूठ है।** यह तो हो नहीं सकता।

SM, Revised 17.06.2016
बाप कहते हैं - तुम गाते भी हो, 'आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल ..'; ऐसे नहीं, 'परमात्मा, परमात्मा से अलग रहे बहुकाल ..' – नहीं! यह पहले नम्बर का अज्ञान है - आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा कहना। **आत्मा तो जन्म मरण में आती है। परमात्मा थोड़ेही पुनर्जन्म में आते हैं।**

‘विनाश काले प्रीत बुद्धि पाण्डव विजयन्ती; और विनाश काले विपरीत बुद्धि कौरव व यादव विनशयन्ती’

25] ‘विनाश काले विपरीत बुद्धि’; और ‘विनाश काले प्रीत बुद्धि’, निराकार शिवबाबा के साथ, ब्रह्मा द्वारा; विपरीत बुद्धि माना, परमात्मा से प्रीत नहीं है; जो आश्चर्यवत् भागन्ती हो जाते हैं, वे प्रजा में भी जाकर कम पद पाते हैं; पाण्डवों को मिलती है ईश्वरीय मत - यादवों और कौरवों को मिलती है मायावी आसुरी मत; प्रीत बुद्धि पाण्डव विजयन्ती, विपरीत बुद्धि कौरव व यादव विनशयन्ती!

SM, Revised 30.11.2018
तुम समझा सकते हो यादव, कौरव, पाण्डव क्या करते थे? **पाण्डवों की तरफ तो है परमपिता परमात्मा (निराकार शिव बाबा)। पाण्डव हैं ‘विनाश काले प्रीत बुद्धि’;** कौरव और यादव हैं ‘विनाश काले विपरीत बुद्धि’, जो परमपिता परमात्मा को मानते ही नहीं। (निराकार, बिंदु रूप, ज्योति स्वरूप, शिव की **अनुभूति** नहीं है!)

SM, Revised 28.07.1993 / 31.07.2018
गाया जाता है, ‘विनाश काले विपरीत बुद्धि’; और ‘विनाश काले प्रीत बुद्धि’ - किसके साथ? (निराकार) शिवबाबा के साथ, ब्रह्मा द्वारा। ऐसे भी मंद बुद्धि हैं, जो कहते हैं – ‘हम तो शिवबाबा को ही याद करते हैं; शिवबाबा कहते हैं ना, मुझे याद करने से तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा’। **परन्तु वह है कहाँ? जरूर यहाँ इस (ब्रह्मा) तन में हैं, इस द्वारा पढ़ाते हैं।**

SM, Revised 23.06.2018
अच्छे-अच्छे, फर्स्ट क्लास, ध्यान में जाने वाले, जिनके डायरेक्शन पर माँ-बाप भी पार्ट बजाते थे, आज वह हैं नहीं। क्या हुआ? कोई बात में संशय आ गया। बाबा समझाते हैं, ‘निश्चय बुद्धि विजयन्ती, संशय बुद्धि विनशयन्ति’। **ऐसे फिर कितनी अधम-गति को पायेंगे।** तुम यहाँ आते हो बाप से पूरा-पूरा वर्सा, प्रिन्स-प्रिन्सेज का, लेने। **अगर आश्चर्यवत् भागन्ती हो गये, तो फिर क्या पद रहेगा? प्रजा में भी जाकर कम पद पायेंगे। सजायें भी बहुत खानी होंगी।**

SM, Revised 21.05.2018
अब भगवान खुद कहते हैं - बच्चे, तुम मेरी श्रीमत पर चलो। **एक है यादव मत, दूसरी है कौरव मत। यह है पाण्डव मत। पाण्डवों को मिलती है ईश्वरीय मत।** गाया भी हुआ है, ‘विनाश काले विप्रीत बुद्धि विनशयन्ति ..’ । पाण्डवों की है प्रीत बुद्धि।

SM, Revised 14.05.2018
(निराकार) भगवान को न जानने के कारण नास्तिक बन गये हैं। अभी तुम (निराकार शिव) बाप को जानने के कारण आस्तिक बन गये हो। वह है विनाश काले विपरीत बुद्धि। **विपरीत बुद्धि माना, परमात्मा से प्रीत नहीं है।** बाप है प्यार का सागर, शान्ति का सागर, सुख का सागर - उनकी बहुत महिमा है। ऐसे नहीं, यह ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, सब एक ही ‘भगवान’ हैं - नारायण भी ‘भगवान’ है, राम भी ‘भगवान’ है! (**नहीं !**)

SM, Revised 11.05.2018
वह है विनाश काले विपरीत बुद्धि, यादव और कौरव। तुम हो विनाश काले प्रीत बुद्धि, पाण्डव, जिसकी ही जय-जयकार होनी है। **तुम हो गुप्त शिव शक्ति भारत माता, इसमें गोप-गोपियाँ दोनों हैं। नाम माताओं का करना है।**

SM, Revised 22.03.2018
इस समय सिर्फ तुम्हारी प्रीत है, मेरे साथ। कौरवों की विपरीत बुद्धि थी, और पाण्डवों की प्रीत बुद्धि थी। **तो प्रीत बुद्धि वालों की स्थापना, और विपरीत बुद्धि वालों का विनाश हुआ।** यह है पढ़ाई।

SM, Revised 01.05.2017
(ब्रह्मा) बाबा सुनाते हैं - 'घड़ी-घड़ी बाप का शुक्रिया करता हूँ; (शिव)बाबा, आपने मुझे अन्धियारे से निकाला है; (शिव)बाबा के साथ हमारी प्रीत है'। **और सबकी है विनाश काले विपरीत बुद्धि, वह पूरा वर्सा ले न सके।** ... तुम्हारी अब प्रीत बुद्धि है - (निराकार शिव) बाप के साथ। हाँ, तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार प्रीत बुद्धि हैं। ... **विनाश काले पूरी प्रीत बुद्धि चाहिए। जितनी प्रीत होगी, उतना बाप से वर्सा लेंगे।**

SM, Revised 25.02.2016
आजकल की दुनिया में हंगामा बहुत है, पत्थरबुद्धि भी अथाह हैं। **अभी तुम बच्चे जानते हो विनाश काले जो बाप से विपरीत बुद्धि हैं, उनके लिए विनशन्ती गाया हुआ है।**

SM, Revised 12.08.2015
(निराकार) परमपिता परमात्मा से प्रीत नहीं है, तो विप्रीत बुद्धि ठहरे ना। इस पर तुम समझा सकते हो **जो प्रीत बुद्धि हैं वह विजयन्ती, और जो विप्रीत बुद्धि हैं वह विनशन्ती हो जाते हैं।** इस पर भी कई मनुष्य बिगड़ते हैं, फिर कोई न कोई इलज़ाम लगा देते हैं। झगड़ा-फसाद मचाने में देरी नहीं करते हैं। कोई कर ही क्या सकते हैं!

SM, Revised 02.04.2015
बाप राइट और रांग को समझने की बुद्धि भी देते हैं। **औरों की देह तरफ (और देहधारी गुरु तरफ) बुद्धि जाने से, विपरीत बुद्धि विनशन्ती हो जायेंगे।**

AV Original 02.02.1972
'विनाश काले प्रीत बुद्धि पाण्डव विजयन्ती, और विनाश काले विपरीत बुद्धि (कौरव) विनशयन्ती'। … **प्रीत बुद्धि वाला कब श्रीमत के विपरीत एक संकल्प भी नहीं उठा सकता।** … प्रीत बुद्धि अर्थात् बुद्धि की लगन वा प्रीत एक (निराकार) प्रीतम के साथ सदा लगी हुई हो। जब एक (निराकार) के साथ सदा प्रीत है, तो अन्य किसी भी व्यक्ति वा वैभवों के साथ प्रीत जुट नहीं सकती, क्योंकि **प्रीत बुद्धि अर्थात् सदा बापदादा को अपने सम्मुख अनुभव करेंगे।** … प्रीत बुद्धि वाले सदैव (**निराकार शिव**) बाप के (**दिव्य बुद्धि द्वारा**) सम्मुख रहने के कारण उनके मुख से, उनके दिल से, सदैव यही बोल निकलते हैं - **तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से बोलूँ, तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं से सर्व सम्बन्ध निभाऊं, तुम्हीं से सर्व प्राप्ति करूं।**

‘महाभारी, महाभारत लड़ाई, महाकल्याणकारी है’

26] महाभारत लड़ाई से पहले, कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करनी है; पाण्डव लड़ते नहीं - यादव और कौरव आपस में लड़ झगड़कर, खत्म हो जाते हैं; महाभारत की लड़ाई हो, तब नर्क का विनाश, स्वर्ग की स्थापना हो; महाभारत लड़ाई से रावण राज्य खत्म होता है - न कि सिर्फ रावण को मारने से; जब महाभारत लड़ाई हुई, तब भगवान, शिव बाप भी था, जिस से वर्सा मिलता है!

SM, Revised 01.08.2020
महाभारत लड़ाई भी मशहूर है। क्या होता है, सो तो आगे चल देखेंगे। कोई क्या कहते, कोई क्या कहते। दिन-प्रतिदिन मनुष्यों को ‘टच’ (touch) होता जाता है। कहते भी हैं, ‘वर्ल्ड वार’ (world war) लग जायेगी। **उस से पहले, तुम बच्चों को अपनी पढ़ाई से कर्मातीत अवस्था प्राप्त करनी है।**

SM, Revised 18.07.2020
तुम हो डबल अहिंसक रूहानी सेना। ... माया से युद्ध तो अन्त तक तुम्हारी चलती रहेगी। यह भी जानते हो **महाभारत लड़ाई होनी है जरूर। नहीं तो पुरानी दुनिया का विनाश कैसे हो?** बाबा हमको श्रीमत दे रहे हैं। हम बच्चों को फिर से अपना राज्य-भाग्य स्थापन करना है। इस पुरानी दुनिया का विनाश हो, फिर भारत में जयजयकार हो जाना है, जिसके लिए तुम निमित्त बने हो।

SM, Revised 25.09.2018
बाप को कहते हैं, ‘सत श्री अकाल’, सच बोलने वाला। उनको कोई काल नहीं खाता। उनको कहा जाता है, ‘कालों का काल’। बाप कहते हैं, यह छी-छी दुनिया है। इस भंभोर को आग जरूर लगनी है। **तुम बच्चे जानते हो यह महाभारत लड़ाई महा-कल्याणकारी है।**

SM, Revised 25.12.2017
महाभारत लड़ाई भी लगने वाली है। **परन्तु पाण्डव सप्रदाय तो लड़ते नहीं। असुर और कौरव सम्प्रदाय आपस में लड़ झगड़कर खत्म हो जाते हैं।**

SM, Revised 09.10.2017
बाप बैठ समझाते हैं, मेरे लाडले बच्चे, **तुम गुप्त सेना हो, और तुम बच्चों को ज्ञान का बारूद, बड़े-बड़े ज्ञान के गोले मिल रहे हैं।** ... एक गीता शास्त्र ही है, जिसका महाभारत लड़ाई से कनेक्शन है। तुम बच्चे गुप्त सेना हो। जैसे वो लोग प्रैक्टिस कर रहे हैं, गोले रिफाइन हो जाएं। वैसे शिवबाबा भी कहते हैं, ब्रह्मा द्वारा तुमको बहुत अच्छे-अच्छे ज्ञान के गोले दे रहा हूँ। ... **यह है ज्ञान के गोले। यह बात को युक्ति से समझाओ।**

SM, Revised 26.09.2017
जब महाभारत लड़ाई हुई, तब (शिव) बाप भी था, जिस से वर्सा मिलता है। कृष्ण को तो कोई ‘बाप’ कह न सके। मनुष्य जब ‘गॉड फादर’ कहकर पुकारते हैं, तब निराकार (शिव) को ही याद करते हैं।

SM, Revised 17.07.2017
यह भारत की लड़ाई भी 5 हजार वर्ष पहले लगी थी। अब फिर किसकी विजय हुई? ***यादव, कौरव खलास हुए, फिर रिजल्ट क्या हुई?*** कुछ दिखलाते नहीं। बाप आये, महाभारत लड़ाई लगी, फिर क्या हुआ? **दिखाते हैं कि पाण्डव गल मरे पहाड़ों पर। कुत्ता भी साथ में दे दिया है। समझते कुछ भी नहीं।**

SM, Revised 13.07.2017

पहले शिव जयन्ती हो, फिर तो कृष्ण का जन्म हो। शिव जयन्ती के बाद है कृष्ण की जयन्ती। शिवबाबा ही भारत को स्वर्ग बनाते हैं। कहते हैं, कल्प के संगम पर आकर राजयोग सिखलाता हूँ। **महाभारत की लड़ाई हो, तब नर्क का विनाश, स्वर्ग की स्थापना हो।** शिवबाबा शिवालय स्थापन करते हैं। रावण वेश्यालय बनाते हैं।

SM, Revised 22.11.2016

तो पहले-पहले परिचय देना है (शिव) बाप का। ऊंचे ते ऊंचा बाप जब भारत में आता है, **तो यह महाभारी लड़ाई भी लगती है जरूर**, क्योंकि परमात्मा आकर पतित दुनिया से पावन दुनिया में ले जाते हैं। शरीरों का तो विनाश होना है। यह निश्चय होना चाहिए कि हमको बाप पढ़ाते हैं।

SM, Revised 11.10.2016

अगर रावण मरता है, तो रामायण की कथा पूरी होनी चाहिए, परन्तु होती नहीं है। **छुटकारा होता है, महाभारत से। अब यह भी समझने की बातें हैं।** …

अब रामायण और महाभारत है ना। **तो महाभारत है रावण को खलास करने के लिए।** यह बड़ी गुह्य समझने की बातें हैं, इसमें विशाल बुद्धि चाहिए। **बाप समझाते हैं - महाभारत लड़ाई से रावणराज्य खत्म होता है; ऐसे नहीं कि सिर्फ रावण को मारने से रावण राज्य खत्म हो जाता है।**

SM, Revised 09.08.2016

वही महाभारत लड़ाई है, तो जरूर भगवान भी होगा। किस रूप में, किस तन में है, वह तुम बच्चों के अलावा किसको पता नहीं। कहते भी हैं - मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। मैं कृष्ण के तन में नहीं आता हूँ। यही पूरे 84 जन्म लेते हैं। मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में आता हूँ।

कृष्ण का जन्म राजा के पास होता है

27] सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स है श्रीकृष्ण; पहले नम्बर में है श्रीकृष्ण; सबसे जास्ती मार्क्स कृष्ण लेते हैं; कृष्ण का जन्म जरूर राजा के पास होता है; कृष्ण के बाप, राजा का सेकण्ड क्लास का पद है, क्योंकि पढ़ाई में कृष्ण से कम है; कृष्ण के बाप पतित राजा होने के कारण उनका नाम नहीं है; श्रीकृष्ण के माँ-बाप भी तो एडवान्स में जाते हैं, जो फिर कृष्ण को गोद में लेंगे; राधे-कृष्ण (ब्रह्मा-सरस्वती) सबसे ऊँच हैं। उनके ऊपर कोई है नहीं!

SM, Revised 28.08.2015 / 04.08.2020
वैकुण्ठ को विष्णुपुरी कहा जाता है - अर्थात् लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। कृष्ण प्रिन्स होगा तो कहेंगे ना – 'हमारा बाबा राजा है'। ऐसे नहीं कि कृष्ण का बाप राजा नहीं हो सकता। **कृष्ण प्रिन्स कहलाया जाता है, तो जरूर राजा के पास जन्म हुआ है। साहूकार पास जन्म ले, तो प्रिन्स थोड़ेही कहलायेंगे।** राजा के पद और साहूकार के पद में रात-दिन का फ़र्क हो जाता है।

कृष्ण के बाप, राजा का नाम ही नहीं है। कृष्ण का कितना नाम बाला है। **(कृष्ण के) बाप का ऊंच पद नहीं कहेंगे। वह सेकण्ड क्लास का पद है, जो सिर्फ निमित्त बनते हैं कृष्ण को जन्म देने। ऐसे नहीं कि कृष्ण की आत्मा से वह ऊंच पढ़ा हुआ है; नहीं!** कृष्ण ही सो फिर नारायण बनते हैं। **बाकी बाप का नाम ही गुम हो जाता है। है जरूर ब्राह्मण (संगम युग में)। परन्तु पढ़ाई में कृष्ण से कम है।**

SM, Revised 31.01.2017
पहले नम्बर में श्रीकृष्ण, उसने ऐसा क्या कर्म किया, जो अपने माँ-बाप से भी जास्ती मर्तबा पाया? वह महाराजा महारानी कहाँ थे, जिनके पास कृष्ण का जन्म हुआ? **जब तक निर्विकारी होकर नहीं रहेंगे, तब तक अविनाशी ज्ञान बुद्धि में बैठ नहीं सकता। बुद्धि का ताला खुलता ही तब है, जब पवित्र रहते हैं।**

SM, Revised 13.12.2016
बाप से भी कृष्ण का नाम जास्ती है। राधे-कृष्ण के माँ-बाप कोई इतने मार्क्स नहीं ले सकते हैं, जितने राधे-कृष्ण लेते हैं। ऊंची पढ़ाई यह पढ़ते हैं। सबसे जास्ती मार्क्स कृष्ण लेते हैं, परन्तु जन्म तो फिर कहाँ लेना ही पड़ेगा। **तो जिसके पास जन्म लिया उनका इतना मान नहीं होता है।** पहले जरूर उनके माँ-बाप जन्म लेते होंगे। फिर भी कृष्ण बच्चे का नाम बाला होता है। **यह बातें बड़ी गुप्त हैं।**

SM, Revised 30.08.2016
कृष्ण का कितना नाम गाया जाता है। उनके बाप का नाम ही नहीं, उनका बाप कहाँ है? जरूर राजा का बच्चा होगा ना। **वहाँ, बड़े राजा के घर में जन्म होता है। परन्तु वह पतित राजा होने के कारण उनका नाम थोड़ेही होगा। कृष्ण जब है, तब थोड़े पतित भी रहते हैं। जब वह बिल्कुल खलास हो जाते हैं, तब वह गद्दी पर बैठते हैं, अपना राज्य ले लेते हैं, तब ही उनका संवत शुरू होता है।**

SM, Revised 14.07.2016
सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स है श्रीकृष्ण। कृष्ण का बाप भी तो होगा ना। कृष्ण के माँ-बाप का इतना कुछ दिखाते नहीं हैं। सिर्फ दिखाते हैं माथे पर रखकर नदी से उस पार ले गया। राजाई आदि कुछ नहीं दिखाई है। उनके बाप की महिमा क्यों नहीं है? **अभी तुम जानते हो, इस समय कृष्ण की आत्मा ने अच्छी रीति पढ़ाई पढ़ी है, जिस कारण माँ-बाप से भी ऊंच पद पाया है।**

SM, Revised 08.02.2016
कृष्ण का कितना नाम गाया जाता है। उनके बाप का गायन ही नहीं। उनका बाप कहाँ है? जरूर कृष्ण किसी का बच्चा होगा ना। **कृष्ण जब जन्म लेते हैं, तब थोड़े बहुत पतित भी रहते हैं। जब वह बिल्कुल खत्म हो जाते हैं तब वह गद्दी पर बैठते हैं। अपना राज्य ले लेते हैं, तब से ही उनका संवत शुरू होता है।**

SM, Revised 18.05.1997 / 13.05.2017

यह दुनिया ही खत्म होनी है, फिर हम बाबा के पास चले जायेंगे। सृष्टि नई बन जायेगी। कोई तो एडवान्स में भी जायेंगे। **श्रीकृष्ण के माँ-बाप भी तो एडवान्स में जाने चाहिए, जो फिर कृष्ण को गोद में लेंगे। कृष्ण से ही सतयुग शुरू होता है। यह बड़ी गुह्य बातें हैं।**

SM Original 31.10.1965

प्रिन्स-प्रिन्सेस राधे-कृष्ण ही गाए हुए हैं। उन्हों के माँ-बाप का इतना ऊँच मर्तबा नहीं है, जितना राधे-कृष्ण का है। उनके माँ-बाप का तो नाम है ही नहीं! क्यों? जिन्होंने जन्म दिया, वह तो बड़े होने चाहिए ना? परन्तु नहीं! **राधे-कृष्ण सबसे ऊँच हैं। उनके ऊपर कोई है नहीं।** यह क्यों हुआ? क्योंकि **उनके माँ-बाप कम पढ़े हुए हैं। इसलिए उन्हों का नाम जैसे की है नहीं।** राधे-कृष्ण पहले नम्बर में गाए हुए हैं। फर्स्ट नम्बर महाराजा-महारानी यह बने हैं। भल जन्म माँ-बाप से लिया, परन्तु नाम इन्हों का है। यह बुद्धि में अच्छी रीति समझना है!

AV Original 23.10.1975

एक तरफ समाप्ति का नगाड़ा, दूसरी तरफ नई दुनिया का नज़ारा, साथ-साथ दिखाई देगा। वहाँ ही विनाश की अति होगी, और वहाँ ही, जलमई के बीच चारों ओर विनाश में - एक हिस्सा धरती, और बाकी तीन हिस्सा तो जलमई होगी ना? यह जो सभी पीछे-पीछे अनेक धर्मो के कारण, अनेक देश बने हैं, वह अनेक धर्म जब समाप्त होंगे, तो अनेक देश भी एक सैरगाह (health resort) के रूप में, जल के बीच, एक टापू के मुआफिक हो जायेंगे। **तो एक तरफ विनाश की अति के नगाड़े होंगे, दूसरी तरफ फर्स्ट प्रिन्स (श्रीकृष्ण) के जन्म का आवाज बुलन्द होगा** - वह पत्ते पर नहीं आयेगा। दिखाते हैं ना, जलमई के बाद, पत्ते पर श्रीकृष्ण आया। तीन हिस्से जलमई में होने के कारण, भारत जब परिस्तान बनता है, तो उसको जलमई दिखा दिया है। **ऐसे जलमई के बीच, पहला पत्ता, जो फर्स्ट आत्मा है, उसके जन्म का चारों ओर आवाज प्रसिद्ध होगा कि फर्स्ट प्रिन्स प्रत्यक्ष हो चुका है, जन्म हो चुका है!**

सूक्ष्म वतन वासी संपूर्ण ब्रह्मा और स्थूल वतन वासी प्रजापिता ब्रह्मा का पार्ट अलग-अलग है - सिर्फ 1969 के पहले

28] अपूर्ण प्रजापिता ब्रह्मा को देवता नहीं कह सकते; जब प्रजापिता ब्रह्मा 1969 में सम्पूर्ण बन जाते हैं, तो सूक्ष्मवतन में फरिश्ते बन जाते हैं - तब उनको देवता, आदि देव, कहा जायेगा; ये बातें समझेगा वही, जो बाप को घड़ी-घड़ी याद करता रहेगा!

SM, Revised 04.08.2020
ब्रह्मा को दिखाया है सूक्ष्म वतन वासी। अब प्रजापिता सूक्ष्म वतन में हो न सके। वहाँ रचना होती नहीं। इस पर तुम्हारे साथ बहुत वाद-विवाद भी करते हैं। समझाना चाहिए - ब्रह्मा और ब्राह्मण हैं तो सही ना? जैसे क्राइस्ट से क्रिश्चियन अक्षर निकला है; बुद्ध से बौद्धी, इब्राहम से इस्लामी। वैसे प्रजापिता ब्रह्मा से ब्राह्मण नामीग्रामी हैं। आदि देव ब्रह्मा। **वास्तव में ब्रह्मा को देवता नहीं कह सकते। यह भी रांग है।**

SM, Revised 31.10.2018
तो बाप कहते हैं, मैं आऊं तो कैसे आऊं, किसके शरीर में आऊं? पहले तो मुझे प्रजापिता चाहिए। **सूक्ष्म वतन वासी को यहाँ कैसे ले आ सकता? वह तो फरिश्ता है ना। उनको पतित दुनिया में ले आऊं - यह तो दोष हो जाए।** कहेंगे, 'मैंने क्या गुनाह किया?' बाप बड़ी रमणीक बातें समझाते हैं। समझेगा वही, जो बाप का बना होगा, घड़ी-घड़ी बाप को याद करता रहेगा।

SM, Revised 07.10.1998 / 11.10.2018
बाप है सबका रचयिता, उनको पहले-पहले सूक्ष्म वतन रचना है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं सूक्ष्म वतन वासी; नई सृष्टि रचते हैं, तो जरूर प्रजापिता ब्रह्मा चाहिए। **सूक्ष्म वतन वाला तो यहाँ आ न सके। वह है सम्पूर्ण अव्यक्त। यहाँ तो साकार ब्रह्मा चाहिए ना। वह कहाँ से आये? मनुष्य इन बातों को समझ न सकें।** चित्र तो हैं ना। ब्रह्मा से ब्राह्मण पैदा हुए। परन्तु ब्रह्मा आये कहाँ से? फिर एडाप्शन होती है। जैसे कोई राजा को बच्चा नहीं होता है, तो एडाप्ट करते हैं। **बाप भी इनको एडाप्ट करते हैं, फिर नाम बदलकर रखते हैं - प्रजापिता ब्रह्मा। वह ऊपर वाला (ब्रह्मा) तो नीचे आ न सके। नीचे वाले (प्रजापिता ब्रह्मा) को ऊपर जाना है। वह है अव्यक्त, यह है व्यक्त। तो इस रहस्य को भी अच्छी रीति समझना है क्योंकि सबका प्रश्न उठता है।**

SM, Revised 28.09.2018
सूक्ष्म वतन वासी ब्रह्मा तो है अव्यक्त। प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ चाहिए ना। यह जब सम्पूर्ण बन जाते हैं, तो सूक्ष्मवतन में फरिश्ते बन जाते हैं। तुम भी फरिश्ते बन जाते हो। वहाँ तुम्हारा शरीर हड्डी-मास का नहीं होता है। उनको फरिश्ता कहा जाता है। ब्रह्मा तो प्रजापिता यहाँ है। फिर विष्णु दो रूप से पालना करेंगे। शंकर तो है सूक्ष्मवतन में। **यह बड़ी समझने की बातें हैं। इतनी दूरांदेशी बुद्धि कोई की है नहीं।** तुम्हारी बुद्धि एकदम मूलवतन, सूक्ष्मवतन तक चली गई है। सूक्ष्मवतन अब रचा हुआ है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की भी रचना हुई है - जहाँ तक आ-जा सकते हो।

SM, Revised 12.09.2018
जहाँ तक रूद्र बाबा इस शरीर में है, सुनाते ही रहेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो जरूर यहाँ होगा ना। 'ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात' गाई हुई है। **सूक्ष्म वतन वासी ब्रह्मा का थोड़ेही दिन और रात बनायेंगे। वह तो सूक्ष्म वतन वासी देवता है। दिन और रात का प्रश्न यहाँ का है। ब्रह्मा की रात माना पतित। फिर वही पावन बनते हैं, तो दिन होता है।**

SM, Revised 07.09.2018
स्थापना जब पूरी हो जायेगी, तब विनाश होगा। स्थापना करने वाला है परमपिता परमात्मा, इस ब्रह्मा द्वारा। **यह भी बाबा ने समझाया है, सूक्ष्म वतन वासी को तो प्रजापिता नहीं कहेंगे। वहाँ प्रजा होती नहीं, तो जरूर प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ होगा। वही फिर अव्यक्त सम्पूर्ण बनेगा। वह तो है अव्यक्त, जरूर व्यक्त भी चाहिए, जो फिर अव्यक्त होना है। दोनों अभी दिखाई पड़ते हैं।** प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ भी है

(अपूर्ण रूप में), सूक्ष्मवतन में भी है (सम्पूर्ण रूप)। प्रजापिता तो यहाँ चाहिए, जरूर प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भी यहाँ ही हैं (जब तक अपूर्ण हैं)।

SM, Revised 13.07.2018
हम हैं ब्रह्माकुमार-कुमारियां। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी। उसमें भी (अपूर्ण) ब्रह्मा को प्रजापिता कहते हैं। **सूक्ष्मवतन में तो मनुष्य सृष्टि नहीं रची जाती। शंकर वा विष्णु को 'प्रजापिता' नहीं कह सकते। प्रजा का पिता तो जरूर यहाँ होगा। ब्रह्मा के मुख कमल से ब्राह्मण निकले।**

SM, Revised 11.06.2018
अभी तुम बच्चे जानते हो कि तीसरा बाप भी है - प्रजापिता ब्रह्मा (लेखराज की आत्मा)। तुम प्रैक्टिकल में ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हो। **एक लौकिक बाप, दूसरा पारलौकिक निराकारी बाप, तीसरा है यह अलौकिक बाप।** प्रजापिता गाया हुआ है। परन्तु मनुष्य जानते नहीं। समझते हैं, ब्रह्मा तो सूक्ष्मवतनवासी है। तुम जानते हो ब्रह्मा तो साकारी बाप है।

SM, Revised 10.05.2018
ब्रह्मा तो है यहाँ। जब तक सूक्ष्म वतन वासी न बनें, तब तक उनको देवता कहा न जाए। यहाँ तो है प्रजापिता। जब तक यह प्रजापिता है, मनुष्य तन में है, तब तक इनको देवता कह नहीं सकते। देवता तो सूक्ष्मवतनवासियों को, या तो जो नई दुनिया में रहते हैं, उनको कहा जाता है। इससे सिद्ध होता है, इस समय जबकि प्रजापिता है, तो देवता नहीं कहेंगे।

SM, Revised 31.01.2013 / 13.01.2018
बाप इस ब्रह्मा मुख से बैठ समझाते हैं। यह जो दादा है, जिसका हमने तन लोन लिया है, वह भी अपने जन्मों को नहीं जानते थे। **यह है व्यक्त - प्रजापिता ब्रह्मा। वह है अव्यक्त। हैं तो दोनों एक। तुम भी इस ज्ञान से, सूक्ष्म वतन वासी फरिश्ते बन रहे हो। सूक्ष्मवतनवासियों को फरिश्ता कहते हैं क्योंकि हड्डी-मास नहीं है।**

SM, Revised 08.06.2017
बच्चों को समझाया - गाते भी हैं, 'परमपिता परमात्मा शिवाए नम:' - **ब्रह्मा को परमात्मा नहीं कहेंगे। उनको प्रजापिता कहा जाता है। देवतायें सूक्ष्मवतन में हैं। यह कोई को पता नहीं है, कि यह प्रजापिता (लेखराज की आत्मा) ही फिर जाकर फरिश्ता बनता है (1969 में)। सूक्ष्म वतन वासी बनता है, अर्थात् सूक्ष्म देहधारी।**

<u>सूक्ष्म वतन का रहस्य</u>

29] सूक्ष्म वतन वासियों को फरिश्ता, या सूक्ष्म देवता, कहते हैं क्योंकि हड्डी-मास नहीं है; सूक्ष्म ब्रह्मा-विष्णु-शंकर हैं सूक्ष्म वतन वासी; शंकर का तो आत्मा ही नहीं, सिर्फ सूक्ष्म शरीर है; सूक्ष्म वतन में सिर्फ साक्षात्कार होता है; ब्रह्मा-विष्णु-शंकर का सूक्ष्म शरीर, सिर्फ दिव्य दृष्टि से देखा जाता है!

SM, Revised 31.01.2013 / 13.01.2018
सूक्ष्मवतनवासियों को फरिश्ता कहते हैं क्योंकि हड्डी-मास नहीं है। ब्रह्मा विष्णु शंकर को भी हड्डी-मास नहीं है, फिर उन्हों के चित्र कैसे बनाते हैं? शिव का भी चित्र बनाते हैं। है तो वह स्टॉर। उनका भी रूप बनाते हैं। **ब्रह्मा विष्णु शंकर तो सूक्ष्म हैं। जैसे मनुष्यों का बनाते हैं, वैसे शंकर का तो बना न सकें क्योंकि उनका हड्डी-मास का शरीर तो है नहीं। हम तो समझाने लिए ऐसे स्थूल बनाते हैं।** परन्तु तुम भी देखते हो कि वह सूक्ष्म है।

SM, Revised 12.03.2015
ब्रह्मा-विष्णु-शंकर तो हैं सूक्ष्मवतनवासी। उन्हों का क्या पार्ट है, यह भी कोई नहीं जानते। बाप हर एक बात आपेही समझाते हैं। तुम प्रश्न कोई पूछ नहीं सकते। ऊपर में है शिव परमात्मा फिर देवतायें, उनको मिला कैसे सकते?

SM, Original 04.11.1968 (Page 1)
यह चित्र तुम दिखाते हो, तो कोई पूछेंगे – 'ब्रह्मा में भी अपनी आत्मा होगी, और यह जो नारायण बनते हैं, उनमें भी आत्मा होगी; दो आत्मायें हैं ना, एक ब्रह्मा की, एक नारायण की?' परन्तु विचार करेंगे, तो यह कोई दो आत्मायें नहीं हैं - **आत्मा एक ही है! यह एक सैम्पल दिखाया जाता, देवता का।** यह ब्रह्मा सो विष्णु, अर्थात नारायण बनते हैं। **शंकर का तो बताया, वह आत्मा ही नहीं, शरीर है।** शरीर ही नहीं है, तो आत्मा भी हो नहीं सकती। **इसको कहा जाता है गुह्य बातें।** बाप कहते हैं, तुमको मैं गुह्य नॉलेज सुनाता हूँ; और कोई पढ़ा न सके, सिवाए बाप के।

AV Original 25.11.1993
योगी वा प्रयोगी आत्मा के आगे, ये पांच विकार, जो दूसरों के लिये जहरीले सांप हैं, लेकिन आप योगी-प्रयोगी आत्माओं के लिये ये सांप गले की माला बन जाते हैं। **आप ब्राह्मणों के, और ब्रह्मा बाप के, अशरीरी तपस्वी शंकर स्वरूप का यादगार, अभी भी भक्त लोग पूजते और गाते रहते हैं।** दूसरा यादगार - ये सांप आपके अधीन ऐसे बन जाते, जो आपके खुशी में नाचने की स्टेज बन जाते हैं।

SM, Original 19.10.1968 (रात्रि क्लास - Page 1)
बेहद का बाप, बेहद का समाचार सुनाने वाला - जो कोई समझा न सके। **ऊपर मूल वतन से लेकर, फिर सूक्ष्म वतन का भी समाचार सुनाते हैं। समझाते हैं - सूक्ष्म वतन में कुछ है नहीं। सिर्फ साक्षात्कार है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर वहाँ सूक्ष्म वतन में हो नहीं सकते। वह सिर्फ है साक्षात्कार!**

SM, Revised 18.11.1997
ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को सूक्ष्म चोला है। 84 जन्म मनुष्य भोगते हैं। सूक्ष्मवतन में तो नहीं भोगेंगे।

SM, Original 16.01.1969 (Page 1)
ऊँच ते ऊँच भगवान, फिर सूक्ष्म वतन वासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर कह देते हैं। वह कोई है नहीं! **बाप इनका भी अर्थ समझाते हैं - यह सिर्फ साक्षात्कार होता है।** सूक्ष्म वतन बीच का है ना, जहाँ शरीर नहीं हो सकती। **सूक्ष्म शरीर सिर्फ दिव्य दृष्टि से देखा जाता है।**

त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच

30] शिव बाप को तीन मूर्तियों द्वारा कार्य कराना पड़ता है - ब्रह्मा, विष्णु, शंकर - जो शिव बाप के तीन विशेष कार्यकर्त्ता हैं; शंकर कोई ज्ञान नहीं देते; शंकर की कोई माला नहीं - जैसे कि उनका पार्ट ही नहीं; 'त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच' राइट है - विष्णु, ब्रह्मा और शिव!

AV, Original 04.01.1980
जैसे बाप को भी तीन मूर्तियों द्वारा कार्य कराना पड़ता है; इसलिए 'त्रिमूर्ति' का विशेष गायन और पूजन है। 'त्रिमूर्ति शिव' कहते हो। **एक बाप के तीन विशेष कार्यकर्त्ता हैं, जिन द्वारा विश्व का कार्य कराते हैं। ऐसे आप आत्मा रचयिता हो, और यह तीन विशेष शक्तियाँ, अर्थात् त्रिमूर्ति शक्तियाँ, आपके विशेष कार्यकर्त्ता हैं। आप भी इन तीन रचना के रचयिता हो।** तो चेक करो कि त्रिमूर्ति रचना आपके कन्ट्रोल में हैं?

SM, Original 03.05.1968 (Page 2)
हमेशा लिखो 'त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच'। सिर्फ 'शिव भगवान' से भी मनुष्य मूँझेंगे। भगवान तो है निराकार; इसलिए 'त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच'। त्रिमूर्ति के चित्र भी हैं, सिर्फ उसमें शिव बाबा नहीं हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तीनों का नाम कहा जाता है। …
शिव-शंकर कह देते। अभी शंकर बापू कैसे ज्ञान देंगे? किसके भी बुद्धि में नहीं आता कि वह बापू फिर यहाँ कहाँ से आया?

SM, Original 29.04.1968 (Page 2)
कोई भी विद्वान, आचार्य त्रिमूर्ति का अर्थ बता न सके। ब्रह्मा कितना साधारण बैठा है, और फिर विष्णु कितना श्रृंगार हुआ है। इन्हों का सम्बन्ध कब कोई बता न सके। तुम झट बताते हो। यह ब्रह्मा ही एक सेकण्ड में विष्णु बनते हैं। विष्णु को ब्रह्मा बनने में 84 जन्म, 5000 वर्ष लगते हैं। यह है ही 84 का चक्र। **बाकी शंकर के लिए बाप ने समझाया है ऐसी कोई चीज़ तो होती नहीं। गले में सर्पों कि माला देखकर पार्वती ही डर जाये। और फिर उनपर कितना दोष रखा है कि धतूरा खाते हैं, भांग पीते थे। वह थोड़े ही किसका विनाश करते हैं। विनाश करना तो पाप है ना? यह सभी झूठ बतलाते हैं। आसुरी संप्रदाय है ना!**

SM, Original 16.04.1968 (Page 1)
[**Revised in 23.04.2019, but this point has been omitted in this revision!**]
यह त्रिमूर्ति जो दिखाया जाता है, उसमें वास्तव में होना चाहिए ब्रह्मा-विष्णु और शिव - न कि शंकर; परन्तु बाजू में शिव को कैसे रखें? तो फिर शंकर को रख दिया है, और शिव को ऊपर में रखा है। इससे शोभा भी अच्छी होती है। सिर्फ दो से शोभा न हो। नहीं तो, वास्तव में, शंकर का कोई पार्ट है नहीं। शंकर की माला नहीं कहेंगे। ब्रह्मा-विष्णु की, और रुद्र (शिव की) माला। बस! **शंकर की कोई माला नहीं। जैसे कि उनका पार्ट ही नहीं! शोभा के लिए, भक्ति मार्ग में कितने चित्र आदि बनाये हैं।**

SM, Revised 07.08.2020
बाप नये-नये तरीके से समझाते रहते हैं। **बाप कहते हैं – 'त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच' राइट है ना? विष्णु, ब्रह्मा और शिव। इसमें भी प्रजापिता ब्रह्मा ही बच्चा है।** विष्णु को 'बच्चा' नहीं कहेंगे। भल क्रियेशन कहते हैं, परन्तु रचना तो ब्रह्मा की होगी ना। …
त्रिमूर्ति शिव है मुख्य - फिर आता है ब्रह्मा का पार्ट - जो तुम बच्चों को विष्णुपुरी का मालिक बनाते हैं। ब्रह्मा से, ब्राह्मण सो फिर देवता बनते हैं। तो यह (ब्रह्मा) हो गया अलौकिक फादर। थोड़ा समय यह फादर है, **जिसको अब मानते हैं - आदि देव, 'आदम और बीबी'। इनके बिगर सृष्टि कैसे रचेंगे?**

SM, Revised 02.04.2020
यह त्रिमूर्ति तो प्रसिद्ध है। ऊंच ते ऊंच है शिव। अच्छा, फिर सूक्ष्मवतन में हैं, ब्रह्मा-विष्णु-शंकर। उन्हों का साक्षात्कार भी होता है क्योंकि पवित्र हैं ना। **उन्हों को चैतन्य में इन आंखों से देख नहीं सकते।** बहुत नौधा भक्ति से देख सकते हैं।

SM, Revised 21.02.2020

तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे, ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ। वह ब्राह्मण तो ब्रह्मा बाप को जानते ही नहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो - बाप जब आते हैं, तो ब्रह्मा-विष्णु-शंकर भी जरूर चाहिए। **कहते ही हैं 'त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच'। अब तीनों द्वारा तो नहीं बोलेंगे ना। यह बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करनी है।**

SM, Revised 07.12.2018

चित्र लेकर समझाओ - ऊंच ते ऊंच यह भगवान् है। फिर है त्रिमूर्ति - ब्रहमा-विष्णु-शंकर। उनमें भी ऊंच कौन है, किसका नाम है? सब कहेंगे प्रजापिता ब्रह्मा, जिसके द्वारा वर्सा मिलता है। **शंकर वा विष्णु को 'पिता' नहीं कहेंगे। उनसे कोई वर्सा नहीं मिलता है।**

SM, Revised 09.05.2018

बाप ही नॉलेजफुल, क्रियेटर, डायरेक्टर हैं। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर हैं रचना, इसलिए 'त्रिमूर्ति शिव' कहा जाता है। वो लोग फिर 'त्रिमूर्ति ब्रह्मा' कहते हैं। 'त्रिमूर्ति शिव', जो तीनों को रचने वाला है, उनको भूल जाते हैं। शिवबाबा को भूल, नास्तिक बन पड़े हैं। **'ओ, गॉड फादर', कहते हैं, परन्तु उनके आक्यूपेशन को नहीं जानते हैं।**

SM, Revised 02.02.2016

बच्चे तुम त्रिमूर्ति शिव जयन्ती अक्षर लिखते हो, परन्तु इस समय तीन मूर्तियां तो हैं नहीं। तुम कहेंगे शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रचते हैं, तो ब्रह्मा साकार में जरूर चाहिए ना। बाकी विष्णु और शंकर इस समय कहाँ हैं, जो तुम त्रिमूर्ति कहते हो। यह बहुत समझने की बातें हैं। त्रिमूर्ति का अर्थ ही ब्रह्मा-विष्णु-शंकर है। **ब्रह्मा द्वारा स्थापना, वह तो इस समय होती है। विष्णु द्वारा सतयुग में पालना होगी। विनाश का कार्य अन्त में होना है।**

महाशिवरात्रि अथवा त्रिमूर्ति शिव जयन्ती

31] सबसे हीरे तुल्य जयन्ती है बिन्दू शिव बाप की; शिव जयन्ती शरीरधारी आत्मा की नहीं है, निराकार बिन्दु रूप शिव की जयन्ती है - जिसको 'शिवालिंग' के रूप में पूजते हैं; एक ही त्रिमूर्ति शिव बाप की विचित्र जयन्ती है - जो अशरीरी है; शिव जयन्ति वा शिवरात्रि कोई साकार रूप का यादगार नहीं है!

AV, Original 17.02.2004
बाप की शिव जयन्ती मनाते हैं, लेकिन बाप है क्या? बिन्दी! बिन्दी की जयन्ती, अवतरण मना रहे हैं। सबसे हीरे तुल्य जयन्ती किसकी है? बिन्दू की, बिन्दी की। तो बिन्दी की कितनी महिमा है! इसीलिए बापदादा सदा कहते हैं कि तीन बिन्दू सदा याद रखो - आठ नम्बर, सात नम्बर, तो फिर भी गड़बड़ से लिखना पड़ेगा, लेकिन बिन्दू कितना इजी है। **तीन बिन्दू - सदा याद रखो। तीनों को अच्छी तरह से जानते हो ना?** आप भी बिन्दू, बाप भी बिन्दू, बिन्दू के बच्चे बिन्दू हो। और कर्म में जब आते हो तो इस सृष्टि मंच पर कर्म करने के लिए आये हो, यह सृष्टि मंच ड्रामा है। तो ड्रामा में जो भी कर्म किया, बीत गया, उसको फुलस्टाप लगाओ। तो फुलस्टाप भी क्या है? बिन्दू। **इसलिए तीन बिन्दू सदा याद रखो।**

AV, Original 26.02.1995
यह शिव जयन्ती शरीरधारी आत्मा की नहीं है, निराकार बिन्दु रूप की जयन्ती है। शिव जयन्ती कहने से, ज्योति-बिन्दु रूप ही सामने आता है। तो सारे कल्प में अशरीरी परम आत्मा की जयन्ती नहीं मनाई जाती। एक ही त्रिमूर्ति शिव बाप की विचित्र जयन्ती है, जो अशरीरी है। और यही एक शिव जयन्ती है, जो बाप और बच्चों की साथ-साथ जयन्ती है। आज सिर्फ बाप की जयन्ती मनाने आये हो, वा ब्राह्मण आत्माओं की भी जयन्ती मनाने आये हो? **सभी को बताते हो ना कि शिव जयन्ती सो त्रिमूर्ति जयन्ती, ब्राह्मण जयन्ती, तो इतनी आत्माओं की परमात्मा बाप के साथ-साथ की जयन्ती - यह विचित्र है ना!**

AV, Original 13.02.1991
शिव जयन्ती अर्थात् परमात्म जयन्ती को महाशिवरात्रि क्यों कहते हैं? **सिर्फ शिव रात्रि नहीं कहते, लेकिन महाशिवरात्रि कहते हैं क्योंकि इस अवतरित दिवस पर, शिव बाप, ब्रह्मा दादा और ब्राह्मणों ने महान संकल्प का व्रत लिया कि विश्व को पवित्रता के व्रत से महान श्रेष्ठ बनायेंगे।** विशेष आदि देव ब्रह्मा अपने निमित्त ब्राह्मण आदि बच्चों के साथ इस महान व्रत लेने के निमित्त बने, तो महान बनाने के व्रत लेने का दिव्य दिवस है। इसलिए महा शिवरात्रि कहा जाता है।

AV, Original 16.02.1988
शिव जयन्ति वा शिवरात्रि कोई साकार रूप का यादगार नहीं है। लेकिन निराकार बाप, ज्योति-बिन्दु, जिसको 'शिवालिंग' के रूप में पूजते हैं, उस बिन्दु का महत्त्व है। आप सभी के दिल में भी बाप के बिन्दु रूप की स्मृति सदा रहती है। तो आप भी बिन्दु और बाप भी बिन्दु, तो आज के दिन भारत में हर एक भक्त आत्मा के अन्दर विशेष बिन्दु रूप का महत्त्व रहता है। **बिन्दु जितना ही सूक्ष्म है, उतना ही शक्तिशाली है। इसलिए बिन्दु बाप को ही शक्तियों के, गुणों के, ज्ञान के सिन्धु कहा जाता है।**

SM, Revised 22.01.2020
यह शिव जयन्ती का त्योहार वास्तव में तुम्हारी सच्ची दीपावली है। जब शिव बाप आते हैं, तो घर-घर में रोशनी हो जाती है। इस त्योहार को खूब बत्तियाँ आदि जलाकर रोशनी कर मनाओ। तुम सच्ची दीपावली मनाते हो।

SM, Revised 11.09.2019 (Original 14.09.1968)
बाप कहते हैं, मैं तो एक ही बार आता हूँ। **'शिव रात्रि' मनाते भी हैं। वास्तव में होना चाहिए 'शिव जयन्ती'। परन्तु जयन्ती कहने से माता के गर्भ से जन्म हो जाता है, इसलिए 'शिव रात्रि' कह देते हैं।**

SM, Revised 05.11.2018
शिव जयन्ती भारतवासी मनाते हैं, परन्तु शिव कब पधारे थे, यह किसको पता नहीं है। **जरूर हेविन से पहले संगम पर आया होगा। कहते हैं, कल्प-कल्प के संगमयुगे-युगे आता हूँ - हर एक युग में नहीं!**

SM, Revised 28.02.2017
शिवरात्रि का अर्थ नहीं समझते हैं। **कलियुग है रात, सतयुग है दिन। रात में आकर दिन बनाते हैं, उसको कहा जाता है शिव जयन्ती।** बेहद की रात, बेहद का दिन है।

SM, Revised 17.06.2016
अब भारत झूठखण्ड है। भारत की महिमा बड़ी जबरदस्त है, क्योंकि भारत परमपिता परमात्मा का बर्थ प्लेस है। उनका असुल नाम शिव है। **शिव जयन्ती मनाते हैं। रूद्र वा सोमनाथ जयन्ती नहीं कहा जाता। शिव जयन्ती वा शिव रात्रि कहा जाता है।**

SM, Revised 27.09.1975
ज्ञान दाता, सर्व की सद्गति दाता, त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव ही है। **ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तीनों का जन्म इकट्ठा है। सिर्फ शिव जयन्ती नहीं है, परन्तु त्रिमूर्ति शिव जयन्ती।** परन्तु किसको भी पता नहीं है। **ज़रूर जब शिव की जयन्ती होगी, तो ब्रह्मा की भी होगी।**

साकार ब्रह्मा बाप 1969 में कर्मातीत हुए - तो 'फालो फादर'

32] पढ़ाई का कोर्स, ब्रह्मा बाप के साकार तन द्वारा, 1969 में पूरा हो चुका - पढ़ाई पूरी हुई; 1969 में, ब्रह्मा बाप ने कर्मातीत अवस्था को पाया - नम्बरवन महान आत्मा बनें; अभी पढ़ाई का कोर्स, रिवाइज हो रहा है; ब्रह्मा बाप के साकार जीवन को फॉलो करना सहज है - 'फॉलो फादर' ब्रह्मा!

AV, Original 26.06.1969
जिस तन द्वारा पढ़ाने का पार्ट था, वह पढ़ाई का कोर्स तो पूरा हुआ, अब फिर पढ़ाई पढ़ाने लिये नहीं आते। वह कोर्स था, उसी तन द्वारा पार्ट पूरा हो चुका है। अभी तो आते हैं मिलने के लिये, बहलाने के लिये। और मुख्य बातें कौन सी हैं? **जैसे अशरीरी, कर्मातीत बन कर के क्या किया? एक सेकेण्ड में पंछी बन उड़ गया। साकार शरीर से, एक सेकेण्ड में उड़े ना? तो अब पढ़ाई पूरी हुई। बाकी एक कार्य रहा हुआ है। साथ ले जाने का।** इसलिए अब सिर्फ मिलने, अव्यक्त शिक्षाओं से बहलाने, और उड़ाने लिये आते हैं। पढ़ाई के पॉइंट्स, पढ़ाई का रूप, अब नहीं चल सकता है। **अभी कोर्स, रिवाइज हो रहा है।**

AV, Original 18.01.1979
बाप बच्चों से पूछते हैं - जैसे ब्रह्मा बाप ने सारे ज्ञान का सार स्वयं धारण कर, बच्चों को 'फालो फादर' करने की हिम्मत दी, साकार रूप द्वारा अन्तिम महावाकय अमूल्य सौगात दी - उस सौगात को स्वरूप में लाया? सौगात की रिटर्न में, बाप को, स्वरूप बन दिखाया? सिर्फ तीन बोल जो थे (निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी), उनको साकार में लाया? **साकार स्नेह के रिटर्न में, साकार रूप है। इन ही तीन बोल से (ब्रह्मा) बाप ने कर्मातीत अवस्था को पाया – 'फालो फादर'।**

AV, Original 06.10.1981 (दीदी जी से)
अभी आप विशेष आत्माओं का है ही ब्लैसिंग (blessing) देने का पार्ट। चाहे नयनों से दो, चाहे मस्तकमणी द्वारा। बोलने वाले तो बहुत हैं, लेकिन अब आप लोंगो का कार्य है - ब्लैसिंग देना। **जैसे साकार में देखा - लास्ट कर्मातीत स्टेज का पार्ट क्या रहा? ब्लैसिंग देना। बेलेन्स (balance) की भी विशेषता, और ब्लैसिंग की भी कमाल - 'फालो फादर'।** सहज सेवा भी यही है, और शक्तिशाली भी यही है।

AV, Original 18.01.1984, Revised 23.09.2018
आज का दिन ब्रह्मा बाप (लेखराज की आत्मा) के कर्मातीत होने का दिन है। तीव्रगति से विश्व कल्याण, विश्व परिक्रमा का कार्य आरम्भ होने का दिन है।

AV, Original 24.03.1985
ब्रह्मा बाप की विशेषता क्या देखी! यही देखी ना 'तुरन्त दान ..'; कभी सोचा कि क्या होगा? 'पहले सोचूँ, पीछे करूँ', नहीं। 'तुरन्त दान महा पुण्य' के कारण, नम्बरवन महान आत्मा बनें; इसलिए देखो, नम्बरवन महान आत्मा बनने के कारण, कृष्ण के रूप में नम्बरवन पूजा हो रही है। **एक ही यह (लेखराज) महान आत्मा है, जिसकी बाल रूप में भी पूजा है। बाल रूप भी देखा है ना? और युवा रूप में, राधे-कृष्ण के रूप में, भी पूजा है। और तीसरा, गोप गोपियों के रूप में भी गायन पूजन है। चौथा, लक्ष्मी-नारायण के रूप में। एक यह ही महान आत्मा है, जिसके भिन्न-भिन्न आयु के रूप में, भिन्न-भिन्न चरित्र के रूप में, गायन और पूजन है।**

AV, Original 19.12.1985, Revised on 05.04.2020
साकार रूप में भी निमित्त बन, कर्म सिखलाने के लिए, पूरे 84 जन्म लेने वाली, ब्रह्मा की आत्मा निमित्त बनी। कर्म में, कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को मुक्त करने में, मन की लगन में मगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफल करने में - साकार ब्रह्मा साकार जीवन में निमित्त बने। **कर्मबन्धनी आत्मा,**

कर्मातीत बनने का एक्जैम्पुल बने। तो साकार जीवन को फॉलो करना सहज है ना। यही पाठ हुआ 'फॉलो फादर'। प्रश्न भी चाहे तन के पूछते, सम्बन्ध के पूछते, वा धन के पूछते हैं। सब प्रश्नों का जवाब ब्रह्मा बाप (लेखराज की आत्मा) की जीवन है।

AV, Original 30.03.1999 (दादी जी से)
अभी अपने को, ब्रह्मा बाप के समान, फरिश्ता रूप से मिलना, चलना और उड़ना - यही पार्ट चल रहा है। **जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - एकदम न्यारा, कर्मातीत अनुभव रहा। ऐसे आप सभी महारथियों को अभी ऐसे ब्रह्मा समान कर्मातीत अवस्था के समीप आना ही है – 'फॉलो फादर'।**

AV, Original 31.12.2005
याद है ना? लास्ट मुरली। तीन शब्द का वरदान, याद है (निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी)? जिसको याद है वह हाथ उठाओ। अच्छा सभी को याद है, मुबारक हो। त्याग भी लास्ट दिन तक किया, अपना पुराना कमरा नहीं छोड़ा। बच्चों ने, कितना प्यार से ब्रह्मा बाप को कहा - लेकिन बच्चों के लिए बनाया, स्वयं नहीं यूज किया। और **सदा अढ़ाई-तीन बजे उठकर स्वयं प्रति तपस्या की, संस्कार भस्म किये, तब कमार्कतीत अव्यक्त बने, फरिश्ता बने। जो सोचा वह करके दिखाया। कहना, सोचना और करना, तीनों समान – 'फालो फादर'।**

AV, Original 19.10.2011
तो बापदादा ने देखा यह व्यर्थ संकल्प चलना, यह मैजारिटी बच्चों में अब भी संस्कार रहा हुआ है। **एक व्यर्थ संकल्प, और दूसरा व्यर्थ समय, यह मैजारिटी बच्चों में अब भी दिखाई देता है। और व्यर्थ संकल्प का आधार है मन, जो 'मनमनाभव' होने नहीं देता** क्योंकि बापदादा ने काफी समय से इशारा दे दिया है कि जो कुछ होना है, वह अचानक होना है। तो अचानक के हिसाब से बापदादा ने चेक किया, मैजारिटी बच्चों में यह व्यर्थ संकल्प का संस्कार है। **तो जब ब्रह्मा बाप व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प के विजयी बन, कर्मातीत हुए - तो 'फॉलो फादर'।**

SM, Revised 14.07.2020
वहाँ (स्वर्ग में) तो नैचुरल ब्युटी रहती है। **कृष्ण की इतनी महिमा क्यों है? क्योंकि सबसे जास्ती ब्युटीफुल बनते हैं। (संगम युग में) नम्बरवन में कर्मातीत अवस्था को पाते हैं, इसलिए नम्बरवन में गायन है।** यह भी (शिव) बाप बैठ समझाते हैं। …
एक 'किंग ऑफ फ्लावर' होता है, तो यह ब्रह्मा और सरस्वती 'किंग-क्वीन फ्लावर' ठहरे। ज्ञान और याद, दोनों में तीखे हैं। तुम जानते हो हम देवता बनते हैं। मुख्य 8 रत्न बनते हैं। पहले-पहले है फूल (शिव)। फिर युगल दाना, ब्रह्मा-सरस्वती।

नम्बरवन है ब्रह्मा बाबा (लेखराज की आत्मा)

36] ब्रह्मा नम्बरवन पूज्य, सो फिर नम्बरवन पुजारी बना; ब्रह्मा जो नम्बरवन पावन, वह फिर नम्बरवन पतित बनता है; कृष्ण (ब्रह्मा की आत्मा) हुआ 'नेक्स्ट टू गॉड'; ब्रह्मा ही नम्बरवन जो सुन्दर था, वही अब श्याम बन गया है; ब्रह्मा, पारलौकिक शिवबाबा का मुकरर तन है - जो चेन्ज नहीं हो सकता!

SM, Revised 06.06.2020
मुख्य (लेखराज की आत्मा) के लिए ही समझानी है, कि **मैं इनमें आता हूँ, बहुत जन्मों वाले अन्तिम शरीर में। यह (ब्रह्मा बाबा) है नम्बरवन।** ...
ऊंच ते ऊंच शिवबाबा और ब्रह्मा, दोनों हाइएस्ट हैं। वो पारलौकिक, और यह अलौकिक।

SM, Revised 07.05.2020
मनुष्यों की बुद्धि बिल्कुल ही पत्थर बन गई है। यह (ब्रह्मा बाबा) खुद भी कहते - 'हम भी ऐसे थे'। कहाँ बैकुण्ठ का मालिक श्रीकृष्ण, कहाँ फिर उनको 'गांव का छोरा' कह दिया है। 'श्याम-सुन्दर' कहते हैं। अर्थ थोड़ेही समझते। **अभी बाप ने तुमको समझाया है, जो नम्बरवन सुन्दर, वही नम्बर लास्ट तमोप्रधान श्याम बना है।**

SM, Revised 28.02.2020
यह (ब्रह्मा बाबा) कहते हैं, 'मैं भी उनकी मुरली सुनकर बजाऊंगा'। सुनाने वाला तो वह (शिवबाबा) है ना। **यह (ब्रह्मा बाबा) नम्बरवन पूज्य, सो फिर नम्बरवन पुजारी बना।**

SM, Revised 03.01.2020
यह ब्रह्मा साकारी है, यही फिर सूक्ष्मवतनवासी फ़रिश्ता बनते हैं। वह अव्यक्त, यह व्यक्त। बाप कहते हैं, मैं बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में आता हूँ, **जो नम्बरवन पावन, वह फिर नम्बरवन पतित। मैं इनमें आता हूँ क्योंकि इनको ही फिर नम्बरवन पावन बनना है।**

AV, Original 24.03.1985, Revised 22.12.2019
ब्रह्मा बाप की विशेषता क्या देखी! यही देखी ना 'तुरन्त दान ..'; कभी सोचा कि क्या होगा? 'पहले सोचूँ, पीछे करूँ', नहीं। **'तुरन्त दान महा पुण्य' के कारण, नम्बरवन महान आत्मा बनें; इसलिए देखो, नम्बरवन महान आत्मा बनने के कारण, कृष्ण के रूप में नम्बरवन पूजा हो रही है।**

AV, Original 18.01.2000, Revised 09.04.2017
ब्रह्मा बाप का त्याग ड्रामा में विशेष नूंधा हुआ है। आदि से ब्रह्मा बाप का त्याग, और आप बच्चों का भाग्य नूंधा हुआ है। **सबसे नम्बरवन त्याग का एक्जैम्पुल ब्रह्मा बाप बना।** त्याग उसको कहा जाता है - जो सब कुछ प्राप्त होते हुए, त्याग करे। समय अनुसार, समस्याओं के अनुसार त्याग, श्रेष्ठ त्याग नहीं है। **शुरू से ही देखो - तन, मन, धन, सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति होते हुए, त्याग किया। शरीर का भी त्याग किया** ...

SM, Revised 10.12.2019 (Original 16.01.1969)
मैं तो एवर पवित्र हूँ। मैं कभी गर्भ से जन्म नहीं लेता हूँ, न देवी-देवताओं की तरह जन्म लेता हूँ। सिर्फ तुम बच्चों को स्वर्ग की बादशाही देने के लिए, **जब यह (ब्रह्मा बाबा) 60 वर्ष की वानप्रस्थ अवस्था में होता है, तब इनके तन में मैं प्रवेश करता हूँ। यही फिर नम्बरवन तमोप्रधान से नम्बरवन सतोप्रधान बनता है।**

SM, Revised 07.09.2019 (Original 01.10.1968)
तुम बच्चे जानते हो पहले नम्बर में सबसे प्यारा है (शिव) बाप; फिर नेक्स्ट प्यारा है श्रीकृष्ण। **तुम जानते हो श्रीकृष्ण है स्वर्ग का पहला प्रिन्स, नम्बरवन। वही फिर 84 जन्म लेते हैं। उसके ही अन्तिम जन्म में, मैं प्रवेश करता हूँ।**

SM, Revised 02.09.2019 (Original 16.09.1968)
बाप कहते हैं, मैं बहुत जन्मों के अन्त वाले शरीर में ही प्रवेश करता हूँ। **यही 84 जन्म लेते हैं। लास्ट सो फिर फर्स्ट, फर्स्ट सो लास्ट। मिसाल तो एक का बतायेंगे ना?** ...
'भगवानुवाच' - सिर्फ उन्हों ने नाम बदलकर कृष्ण का नाम डाल दिया है। **भूल से 'कृष्ण भगवानुवाच' समझ लिया है क्योंकि कृष्ण हुआ 'नेक्स्ट टू गॉड'। स्वर्ग जो बाप स्थापन करते हैं, उनमें नम्बरवन यह (ब्रह्मा की आत्मा) है ना।**

SM, Revised 08.04.2019
बाप कहते हैं, मैं हर 5 हज़ार वर्ष बाद आता हूँ। शरीर भी उनका लेता हूँ जो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। **यही नम्बरवन जो सुन्दर था, वही अब श्याम बन गया है।**

SM, Revised 17.01.2019
कोई कहे हम शिवबाबा को मानते हैं, ब्रह्मा बाबा को नहीं। परन्तु यह दोनों इकट्ठे हैं, बिगर दलाल सौदा हो न सके। बाबा का रथ है, इनका नाम ही है 'भाग्यशाली रथ'। **यह भी जानते हो सबसे नम्बरवन ऊंचा है यह।** क्लास में मानीटर का भी मान होता है। रिगार्ड रखते हैं। **नम्बरवन सिकीलधा बच्चा तो यह है ना।**

SM, Revised 17.12.2018
यहाँ (ब्रह्मा) बाबा ने सब कुछ माताओं के चरणों में दे दिया, तो यह वन नम्बर में गया।

SM, Revised 08.12.2017
बाप कहते हैं, मुझे आना ही है पराये देश, पुराने शरीर में। श्रीकृष्ण तो रावण के देश में आ न सके। अब तुम जानते हो कि **श्रीकृष्ण की आत्मा पुनर्जन्म लेते-लेते, अब इस शरीर में है। यह अन्तिम शरीर है। यही फिर नम्बरवन पावन शरीर बनता है। यह सब बातें और कोई की बुद्धि में आ न सकें।**

SM, Revised 12.10.2017
बाप खुद कहते हैं, मैं पतितों की दुनिया में आता हूँ। सतयुग में यही नारायण था - अब फिर इनके तन में आया हूँ, इनको ही नर से नारायण बनाता हूँ। **नम्बरवन पूज्य भी यह था, अब नम्बरवन पुजारी भी यह बना है। फिर इनका ही आलराउन्ड पार्ट है। यह मेरा मुकरर तन है। यह चेन्ज नहीं हो सकता।** ऐसे नहीं कब दूसरे को चांस दूँ। यह ड्रामा बना बनाया है। इसमें चेन्ज नहीं हो सकती!

<u>संवत (01.01.0001) तब शुरू होता है, जब लक्ष्मी-नारायण तख्त पर बैठते हैं</u>

37] प्रिन्स-प्रिन्सेज के नाम पर संवत कभी नहीं होता; कृष्ण जब जन्म लेते हैं, तब थोड़े बहुत पतित भी रहते हैं - जब वह बिल्कुल खत्म हो जाते हैं, तब वह गद्दी पर बैठते हैं; लक्ष्मी-नारायण से ही राज्य शुरू होता है - राजाई से ही सतयुग का पहला संवत शुरू होता है - जब एक भी पतित न रहे!

SM, Revised 10.07.2020
यह भी ड्रामा चलता है। फिर सतयुग से रिपीट होगा। **लक्ष्मी-नारायण जब तख्त पर बैठते हैं, तब संवत शुरू होता है।** तुम लिखते भी हो वन से 1250 वर्ष तक स्वर्ग - कितना क्लीयर है।

SM, Revised 22.08.2019
5 हजार वर्ष में 2500 वर्ष हुए राजा विक्रम के, 2500 वर्ष राजा विकर्माजीत के। आधा है विक्रम का - वह लोग भल कहते हैं, परन्तु कुछ भी पता नहीं है। **तुम कहेंगे विकर्माजीत का संवत एक वर्ष से शुरू होता है**, फिर 2500 वर्ष बाद विक्रम संवत शुरू होता है। अभी विक्रम संवत पूरा होगा - फिर **तुम विकर्माजीत महाराजा-महारानी बन रहे हो - जब बन जायेंगे, तो विकर्माजीत संवत शुरू हो जायेगा।** यह सब तुम ही जानते हो।

SM, Revised 17.08.2018
बस, बाप को याद करते रहो, तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। तुम विकर्माजीत राजा बन जायेंगे। **विकर्माजीत राजा का संवत एक से शुरू हुआ, फिर विक्रम संवत 2500 वर्ष बाद शुरू होता है।** विकर्माजीत और विक्रम, भारतवासियों के दो संवत हैं। विक्रम का संवत सभी जानते हैं, विकर्माजीत का संवत भूल गये हैं। यह है पढ़ाई।

SM, Revised 24.08.2017
एक भी पतित न रहे, तब कहेंगे पावन दुनिया। तुम इस समय (बन रहे) हो पावन, परन्तु सारी दुनिया तो पावन नहीं है ना। पावन बनेंगी जरूर। जब विनाश होगा, तब सारी दुनिया पावन होगी, उसको नई दुनिया कहेंगे। **नई दुनिया का संवत कोई पूछे, तो समझाना चाहिए, जब महाराजा-महारानी तख्त पर बैठते हैं, तब नया संवत शुरू होता है।** जब तक नया संवत शुरू हो, तब तक पुराना जरूर कायम रहेगा। यहाँ से संवत शुरू नहीं होगा। हम ब्राह्मण भल नये (बनते) हैं। परन्तु दुनिया अथवा सारी पृथ्वी थोड़ेही नई है। अभी है संगम। कलियुग के बाद सतयुग आना है। **हम कहते ही हैं फर्स्ट प्रिन्स-प्रिन्सेज राधे-कृष्ण, फिर भी हम उस समय सतयुग (का पहला संवत) नहीं कहेंगे। जब तक लक्ष्मी-नारायण तख्त पर नहीं बैठे हैं, तब तक कुछ न कुछ खिटपिट होती रहेगी, भल राधे-कृष्ण आ जाते हैं।** देखो, यह हैं विचार सागर मंथन करने की बातें। सतयुग जब शुरू होगा, तब संवत शुरू होगा। सूर्यवंशी डिनायस्टी का संवत फलाना। **परन्तु प्रिन्स-प्रिन्सेज के नाम पर संवत कभी नहीं होता।** बाकी बीच के समय में, आना जाना होता रहता है। छी-छी मनुष्यों को भी जाना है। कुछ न कुछ बचे हुए तो रहते ही हैं ना। जो भी बचे हुए होंगे वह भी वापिस जायें, टाइम लगता है। यह कौन समझाते हैं? ज्ञान सागर भी समझाते हैं, तो ब्रह्मपुत्रा ज्ञान नदी भी है, दोनों इकट्ठे समझाते हैं।

SM, Revised 25.09.2017
श्रीकृष्ण गोरा सतयुग का पहला प्रिन्स था, जो फिर विश्व के महाराजा-महारानी बनते हैं। लक्ष्मी-नारायण से ही राज्य शुरू होता है। राजाई से संवत शुरू होता है ना। सतयुग का पहला संवत है, विकर्माजीत संवत। भल पहले जब कृष्ण जन्मता है, उस समय भी कोई न कोई थोड़े बहुत रहते हैं, जिनको वापिस जाना है। पतित से पावन बनने का यह संगमयुग है ना। जब पूरा पावन बन जाते हैं, तो फिर लक्ष्मी-नारायण का राज्य, नया संवत शुरू हो जाता है, जिनको विष्णुपुरी कहते हैं। विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण से पालना होती है।

SM, Revised 11.08.2017
लक्ष्मी-नारायण से ही राज्य शुरू होगा। वह होता है विकर्माजीत संवत, विकर्मों पर जीत पहनकर, तुम अपना राज्य-भाग्य लेते हो।

SM, Revised 19.05.2017
गरीबनिवाज आया तो सही, परन्तु कोई सही तिथि तारीख नहीं लिखते हैं। कोई डेट, संवत तो होना चाहिए ना। जैसे बताते हैं कि आज फलानी तारीख, फलाना मास, फलाना संवत है। गरीब निवाज कब आया? यह लिखा नहीं है। **जैसे लक्ष्मी-नारायण सतयुग आदि में थे, तो उनका भी संवत होना चाहिए। इनका फलाने सवंत में राज्य था। लक्ष्मी-नारायण का भी संवत है, और भी सबके अपने-अपने संवत हैं।** गुरूनानक का भी लिखा होगा कि फलाने संवत में जन्म लिया। संवत बिगर पता नहीं पड़ता। **यह लक्ष्मी-नारायण भारत में राज्य करते थे, तो जरूर संवत होना चाहिए, इनका संवत माना स्वर्ग का संवत।**

SM, Revised 20.04.2017
अभी नाटक पूरा होता है, जो भी एक्टर्स हैं सब चले जायेंगे, **बाकी थोड़े रहेंगे। 'राम गयो, रावण गयो ..', बाकी बचेंगे कौन? दोनों तरफ के थोड़े-थोड़े ही बचेंगे, बाकी सब वापिस चले जायेंगे।** फिर मकान आदि बनाने वाले, सफाई करने वाले भी बचते हैं। समय चाहिए ना। हम भी चले जायेंगे। **तुमको राजाई में जन्म मिलेगा। वो फिर सफाई करते हैं। बाबा ने कहा है, जहाँ जीत वहाँ जन्म।** भारत में ही जीत होगी। बाकी वह सब खलास हो जायेंगे। **राजायें आदि जो धनवान होंगे, वह बचेंगे, जिनके पास तुम जन्म लेंगे। सारी सृष्टि का फिर तुमको मालिक बनना है।**

SM, Revised 14.04.2017
ऐसे थोड़ेही कहेंगे - जेवर झूठा है, सोना सच्चा है। वो लोग समझते हैं आत्मा शुद्ध है। जेवर (शरीर) झूठा है, उनको हम साफ करते हैं। परन्तु नहीं! **आत्मा अगर शुद्ध होती तो शरीर भी शुद्ध होता।** यहाँ एक भी श्रेष्ठ नहीं है। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे। वह तो सम्पूर्ण निर्विकारी हैं, **चोला विकारी हो, तो आत्मा फिर पवित्र कैसे हो सकती? सोना पवित्र है और जेवर झूठे बनें, यह कैसे हो सकता? यह अच्छी तरह समझाना है;** इस समय, कोई भी श्रेष्ठाचारी नहीं है।

SM, Revised 31.01.2017
पहले नम्बर में श्रीकृष्ण, उसने ऐसा क्या कर्म किया, जो अपने माँ बाप से भी जास्ती मर्तबा पाया। वह महाराजा-महारानी कहाँ थे, जिनके पास कृष्ण का जन्म हुआ। **जब तक निर्विकारी होकर नहीं रहेंगे, तब तक अविनाशी ज्ञान बुद्धि में बैठ नहीं सकता। बुद्धि का ताला खुलता ही तब है, जब पवित्र रहते हैं। अपवित्र बनने से सब बुद्धि से निकल जायेगा।** बहुत बच्चे फारकती दे देते हैं। पढ़ाई को ही छोड़ देते हैं। वह फिर कभी किसको ज्ञान सुना न सकें। पतित बन जाते, खान-पान भी गंदा खाते। मायावी मनुष्यों से जाकर मिलते हैं।

SM, Revised 10.11.2016
पतित आत्मायें सब हिसाब-किताब चुक्तू कर घर चली जायेंगी। बाकी थोड़े बचेंगे। पवित्र आत्मायें आती जायेंगी।

SM, Revised 30.09.2016
राधे-कृष्ण तो अलग-अलग राजाई के बच्चे हैं। उन्हों की आपस में सगाई होती है, शादी के बाद नाम बदलता है - इसलिए चित्र में भी लक्ष्मी-नारायण के नीचे राधे कृष्ण को दिखाया है।

SM, Revised 08.02.2016
तो गरीब-निवाज़ निराकार भगवान को ही मानेंगे, कृष्ण को नहीं मानेंगे। **कृष्ण तो धनवान सतयुग का प्रिन्स बनते हैं।** भगवान को तो अपना शरीर है नहीं। वह आकर तुम बच्चों को धनवान बनाते हैं, तुमको राजयोग की शिक्षा देते हैं। पढाई से बैरिस्टर आदि बनकर फिर कमाई करते हैं। बाप भी तुमको अभी पढाते हैं। तुम भविष्य में नर से नारायण बनते हो। तुम्हारा जन्म तो होगा ना। ऐसे तो नहीं

स्वर्ग कोई समुद्र से निकल आयेगा। **कृष्ण ने भी जन्म लिया ना। कंसपुरी आदि तो उस समय थी नहीं।** कृष्ण का कितना नाम गाया जाता है। उनके बाप का गायन ही नहीं। उनका बाप कहाँ है? जरूर कृष्ण किसी का बच्चा होगा ना। **कृष्ण जब जन्म लेते हैं तब थोड़े बहुत पतित भी रहते हैं। जब वह बिल्कुल खत्म हो जाते हैं तब वह गद्दी पर बैठते हैं। अपना राज्य ले लेते हैं, तब से ही उनका संवत शुरू होता है। लक्ष्मी-नारायण से ही संवत शुरू होता है।**

SM, Original 12.07.1964 (middle of 3rd page)
राधे, कृष्ण के महल में आती थी, फिर इनके साथ लव हो गया। ऐसे नहीं राधे-कृष्ण एक ही बाप के बच्चे थे - नहीं! राधे-कृष्ण कोई भाई-बहन नहीं थे। दोनों अलग-अलग अपनी राजधानी में थे। बच्चों ने साक्षात्कार किया है कैसे स्वयंवर होते हैं।

SM, Original 02.05.1967 (रात्रि क्लास)
यह भी बच्चे जानते हैं कि कृष्ण और राधा अपनी-अपनी राजधानी में थे। **दोनों की स्टूडेंट लाइफ - पढ़ते होंगे। कोई की जान-पहचान हो जाती है, फ्रेंडशिप हो जाती है, तो एक-दो के घर में जाते हैं। तो इनका भी ऐसा ही था। फिर बाद में स्वयंवर हुआ है।** अब तुम रचता बाप को और सारी रचना को जानते हो।

सच्ची गीता व झूठी गीता का संगमयुगी ब्राह्मणों की दुनिया में शूटिंग

39] सच्ची गीता सुनने से स्वर्गवासी बनते हैं - नर से नारायण बनते हैं; झूठी गीता सुनने से कोई नारायण बन नहीं सकता; झूठी और सच्ची गीता अभी है - संगमयुग में; झूठी गीता तो सुनते-सुनते, पढ़ते-पढ़ते नीचे गिरते हैं; अगर सच्ची गीता सुनाते रहें, तो बुद्धि से झूठ निकल जाये!

SM, Revised 16.04.2020
यह भी जानते हो यह रूद्र ज्ञान यज्ञ है। अब यज्ञ में चाहिए ब्राह्मण। **तुम सच्चे ब्राह्मण हो, सच्ची गीता सुनाने वाले, इसलिए तुम लिखते भी हो 'सच्ची गीता पाठशाला'। उस (झूठी) गीता में तो, नाम ही बदल दिया है।** हाँ, जिन्होंने जैसे कल्प पहले वर्सा लिया था, वही आकर लेंगे।

SM, Revised 16.03.2020
सच्ची गीता सुनने से स्वर्गवासी बनते हैं। यहाँ शिवबाबा खुद सुनाते हैं (सच्ची गीता), वहाँ मनुष्य पढ़ते हैं (झूठी गीता)!

SM, Revised 13.03.2020
शिवबाबा कहते हैं - मैं (झूठी) गीता आदि कुछ पढ़ा हुआ नहीं हूँ। यह रथ जिसमें बैठा हूँ, यह (ब्रह्मा बाबा) पढ़ा हुआ है, मैं नहीं पढ़ा हुआ हूँ। मेरे में तो सारे सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। **यह (ब्रह्मा बाबा) रोज़ गीता पढ़ता था। तोते मुआफिक कण्ठ कर लेते थे, जब (शिव) बाप ने प्रवेश किया तो झट (झूठी) गीता छोड़ दी क्योंकि बुद्धि में आ गया यह (सच्ची गीता) तो शिवबाबा सुनाते हैं।**

SM, Revised 07.02.2020
यहाँ सब कहते हैं, 'गॉड फादर इज़ ट्रूथ'। बाप ही सच सुनाने वाला है। आत्मा को बाबा की स्मृति आई है, इसलिए हम बाप को याद करते हैं कि आकर सच्ची-सच्ची कथा सुनाओ, नर से नारायण बनने की। **यह तुमको सत्य नारायण की कथा (सच्ची गीता) सुनाता हूँ ना। आगे तुम झूठी कथायें सुनते थे। अभी तुम सच्ची सुनते हो। झूठी कथायें (झूठी गीता) सुनते-सुनते कोई नारायण तो बन नहीं सकता, फिर वह सत्य नारायण की कथा कैसे हो सकती? मनुष्य किसको नर से नारायण बना न सकें।**

SM, Revised 01.03.2019
तुम लिखते हो, 'सच्ची गीता, झूठी गीता', तो भी बिगड़ते हैं। जरूर खिटखिट होगी, इसमें डरने की बात नहीं।

SM, Revised 13.12.2018
झूठी और सच्ची गीता अभी है ('शूटिंग')। सचखण्ड में झूठ का नाम नहीं रहता। तुम वर्सा ले रहे हो, दादे से।

SM, Revised 16.01.2018
भारत खण्ड की महिमा अपरमअपार है। वैसे **परमपिता परमात्मा की महिमा, और गीता की महिमा, भी अपरमअपार है - परन्तु सच्ची गीता की। झूठी गीता तो सुनते-सुनते, पढ़ते-पढ़ते नीचे गिरते आये हैं। अभी बाप तुमको राजयोग सिखलाते हैं। यह गीता का पुरुषोत्तम संगमयुग है।** भारत ही फिर पुरुषोत्तम बनने का है।

SM, Revised 28.11.2017
अब जो राम के पुस्तक बने हैं, वा जो भी शास्त्र आदि हैं, सब लड़ाई में खत्म हो जायेंगे। **झूठी गीता, सच्ची गीता सब खत्म हो जायेगी क्योंकि सद्गति मिल जाती है। सब कामनायें पूरी हो जाती हैं। कोई कामना रहेगी नहीं।**

SM, Revised 29.05.2017
बाप कहते हैं, मैं आकर ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों शास्त्रों, गीता आदि का सार समझाता हूँ। ...
(झूठी) गीता में कोई एक दो अक्षर राइट लिखे हैं। जैसे आटे में लून (नमक), कोई-कोई अक्षर सही हैं। पहले तो भगवान निराकार है, यह मालूम होना चाहिए। वह निराकार भगवान फिर वाच कैसे करते हैं? कहते हैं, साधारण ब्रह्मा तन में प्रवेश कर राजयोग सिखलाता हूँ।

SM, Revised 19.05.2017
घड़ी-घड़ी यही सत्य नारायण की कथा सुनाते रहो। वह है झूठी, यह है सच्ची। ...
अगर सच्ची कथा सुनाते रहें, तो बुद्धि से झूठ निकल जाये। ऐसी चलन नहीं चलनी चाहिए जिससे बाप की निन्दा हो।

SM, Original 06.01.1969 (middle of page 2)
कौरव और पाण्डव का भी अर्थ नहीं समझते हैं। शास्त्रों में जो लिखा है वह पढ़ते, सुनाते रहते हैं। (ब्रह्मा) बाबा की तो वह (झूठी) गीता पढ़ी हुई है। जब यह ज्ञान मिला तो विचार चला – 'गीता में यह लड़ाई आदि की बातें क्या लिखी हैं? कृष्ण भी तो गीता का भगवान नहीं!' **गीता हाथ में थी। गुस्सा आया, और गीता को एकदम फेंक दिया। 'यह तो झूठा शास्त्र है।' इनके अन्दर बाप बैठा था, तो इन द्वारा (झूठी) गीता को एकदम फेंक दिया। बोला, 'अभी हाथ भी नहीं लगाओ';** नहीं तो सारी गीता ही पढ़ते आये। अभी समझते हैं भक्ति में कितना अंधियारा है। अभी कितना सोझरा देते हैं। आत्मा को ही देते हैं - तब बाप कहते हैं, अपन को तुम आत्मा समझो।

SM, Original 13.07.1967 (middle of page 2)
जैसे वो शास्त्रों की अथॉरिटी भी सुनाते हैं ना, फिर सुनने वाले भी बहुत मस्त होकर सुनते हैं। उनके लिए पैसे देते रहते हैं। संस्कृत सिखाओ, गीता सिखाओ - तो उनके लिए भी बहुत पैसे देते हैं। **तुम जानते हो कि वो सब 'वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ मनी, वेस्ट ऑफ एनर्जी' करते रहते हैं।**

SM, Original 12.03.1967 (page 3)
सोमनाथ का भी मंदिर बनाया। अब पूजा तो करनी ही है - परंतु बिंदी की पूजा कैसे करें? बिंदी का मूर्ति कैसे बनावें? यह है बहुत गुहय बातें, गीता आदि में थोड़े ही यह बातें हैं। **गीता भी है झूठी। इसलिए ही बाबा ने कहा था कि लिख दो कि 'झूठी गीता को पढ़ने से भारत नर्कवासी बने हैं। सच्ची गीता से भारतवासी स्वर्गवासी बनते हैं।'**

SM, Original 09.07.1964 (page 2)
गीता सुनाने वालों पास हज़ारों मनुष्य जाते हैं, 'सत-सत' कह चले जाते, समझते कुछ भी नहीं! बाबा ने समझाया है, ये वेद-शास्त्र आदि सब गीता की रचना हैं; **परन्तु सिर्फ (झूठी) गीता पढ़ने से भी कोई फायदा नहीं। फायदा तब हो, जब बाप आकर फिर से मनुष्य से देवता, पतित से पावन बनावे।**

SM, Original 06.03.1963 (top of page 1)
श्लोक है गीता का। और वेद, शास्त्र, उपनिषद, महाभारत जो भी हैं, कोई में भी ऐसा श्लोक न है कि 'यदा, यदा ..'; गीता का नाम ही, जैसे माता का नाम है। **रामायण, महाभारत, वेद, उपनिषद, जैसे मेल्स के नाम हैं। गीता है फीमेल का नाम।** तो जरूर उनका रचियता भी चाहिए। इससे सिद्ध होता है, गीता - माता है। उनको जन्म देने वाला जरूर परमपिता परमात्मा है, जिसको बुलाते हैं कि आकर हमको फिर से सहज राजयोग और ज्ञान सिखाओ, जिसका नाम (सच्ची) 'गीता' रखा गया है। कहते हैं, फिर से आए गीता का राज समझाओ, अर्थात् सहज राजयोग सिखाओ। **अब 'गीता माता' का पिता है, परमपिता परमात्मा शिव - कोई मनुष्य नहीं!**

श्रीनाथ या जगन्नाथ - आत्मा तो एक ही है

40] श्रीनाथ या जगन्नाथ - है तो एक ही आत्मा; श्रीनाथ, गोरा या सुन्दर या दिन या सुखधाम का यादगार – जगन्नाथ, सांवरा या श्याम या रात या दु:खधाम का यादगार; श्रीनाथ को भी काला, जगन्नाथ को भी काला कर देते - अर्थ को न समझने के कारण काला कर दिया है!

SM, Revised 16.06.2020
मन्दिर में कितनी पूजा करते हैं, कितनी धूमधाम, कितना खर्चा करते हैं। **श्रीनाथ के मन्दिर में, जगन्नाथ के मन्दिर में जाकर देखो - है तो एक ही!** जगन्नाथ (जगत नाथ) के पास चावल का हाण्डा चढ़ाते हैं। श्रीनाथ पर तो बहुत माल बनाते हैं। फ़र्क क्यों होता है? कारण चाहिए ना। श्रीनाथ को भी काला, जगन्नाथ को भी काला कर देते हैं। कारण तो कुछ भी नहीं समझते। जगत नाथ लक्ष्मी-नारायण को ही कहते हैं, या राधे-कृष्ण को कहेंगे? राधे-कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण का संबंध क्या है, यह भी कोई नहीं जानते हैं। अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है कि हम पूज्य देवता थे फिर पुजारी बने हैं। चक्र लगाया। … ब्राह्मणों का दिन और फिर ब्राह्मणों की रात।

SM, Revised 30.08.2019
जगन्नाथ कहो वा श्रीनाथ कहो - बात एक ही है। दोनों ही काले दिखाते हैं। श्रीनाथ के मन्दिर में घी के भण्डार होते हैं। सब घी की तली हुई अच्छी-अच्छी चीज़ें मिलती हैं। बाहर में दुकान लग जाते हैं। कितना भोग लगता होगा। सब यात्री जाकर दुकानदारों से लेते हैं। जगन्नाथ में फिर चावल ही चावल होते हैं। **वह जगत नाथ, वह श्रीनाथ। सुखधाम और दु:खधाम को दिखाते हैं। श्रीनाथ सुखधाम का था, वह दु:खधाम का।** काले तो इस समय बन गये हैं - काम चिता पर चढ़कर। जगन्नाथ को सिर्फ चावल का भोग लगाते हैं। इनको गरीब, उनको साहूकार दिखाते हैं। ज्ञान का सागर एक बाप ही है। भक्ति को कहा जाता है अज्ञान, उनसे कुछ मिलता नहीं।

SM, Revised 29.04.2019
हिन्दुओं ने अपना धर्म आपेही बदला है क्योंकि कर्म भ्रष्ट होने से धर्म भ्रष्ट भी हो पड़े हैं। वाम मार्ग में चले गये हैं। **जगन्नाथ के मन्दिर में भी भल गये होंगे, परन्तु कोई का कुछ ख्याल नहीं चलता। खुद विकारी हैं, तो उन्हों को भी विकारी दिखा दिया है। यह नहीं समझते कि देवतायें जब वाम-मार्ग में गये हैं, तब ऐसे बने हैं। उस समय के ही यह चित्र हैं।** देवता नाम तो बड़ा अच्छा है। हिन्दू तो हिन्दुस्तान का नाम है। फिर अपने को हिन्दू कह दिया है। कितनी भूल है!

SM, Revised 08.12.2018
तुम श्रीनाथ के मन्दिर में देखेंगे - कितने माल बनते हैं। **अब श्रीनाथ पुरी और जगन्नाथ पुरी, वास्तव में है एक ही बात, परन्तु वहाँ श्रीनाथ द्वारे में देखेंगे तो बहुत वैभव बनते हैं, और जगन्नाथ पुरी में सिर्फ फीके चावल का भोग लगता है। घी आदि कुछ नहीं पड़ता। यह फ़र्क बताते हैं - गोरा है, तो ऐसे माल; और सांवरा है, तो यह सूखा चावल। राज़ बड़ा अच्छा है। यह बाप बैठ समझाते हैं।** श्रीनाथ द्वारे में इतना भोग लगाते हैं, तो फिर पुजारी लोग दुकान में बेचते भी हैं। उन्हों की कमाई का आधार भी उस पर है। मिलता मुफ्त में है, फिर कमाते हैं। तो देखो कितनी अन्धश्रद्धा की बातें हैं। **यह है भक्ति मार्ग। ज्ञान मार्ग सद्गति मार्ग है।**

SM, Revised 21.09.2017
बाबा ने बतलाया है - श्रीनाथ द्वारे पर घी के कुएं हैं। वहाँ पक्की रसोई बनती है, और जगन्नाथ द्वारे पर कच्ची रसोई बनती है। फर्क है ना। **वह है श्याम, वह है सुन्दर। श्रीनाथ पास बहुत धन है - वहाँ (उड़ीसा के तरफ) इतना धनवान नहीं होते। गरीब और साहूकार तो होते हैं ना। अभी तो बहुत गरीब हैं, फिर साहूकार होंगे। इस समय (कलियुग में) तुम बहुत गरीब हो। वहाँ (सतयुग में) तो तुमको 36 प्रकार के भोजन मिलेंगे।**

SM, Revised 29.08.2018

भारत सुखधाम था। **लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता, आदि के मन्दिर सतयुग-त्रेता की निशानी हैं। सतयुग में बरोबर लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी थी। यही भारत था, जिसमें सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी का राज्य चलता था, जो अब फिर से स्थापन हो रहा है।** इसको कहा जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी। यह मनुष्य ही तो जानेंगे। मनुष्य नहीं जानते, तो जानवर से भी बदतर कहा जाता है। बाप को जानने लिए कितने धक्के खाते हैं, परन्तु जान नहीं सकते।

SM, Revised 18.08.2017

रावण राज्य द्वापर से शुरू होता है, फिर देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं। यह निशानियां भी रखी हैं। **जगन्नाथ पुरी में देवताओं के भी बहुत गन्दे चित्र हैं। आगे तो यह समझ में नहीं आता था। अब कितना समझ में आया है। वन्डर खाते थे कि देवताओं के ऐसे गन्दे चित्र यहाँ कैसे लगे हैं, और अन्दर काला जगत नाथ बैठा है। श्रीनाथ द्वारे में भी काले चित्र दिखाते हैं। यह किसको पता नहीं है कि जगन्नाथ की शक्ल काली क्यों दिखाई है।** कृष्ण के लिए तो कहते हैं कि उनको सर्प ने डसा। राम को क्या हुआ? नारायण की शक्ल भी सांवरी दिखा देते हैं।

SM, Revised 20.03.2017

कितना सहज रीति बाबा कौड़ी से हीरे जैसा बनाते हैं। ऐसा बाबा, रहते देखो कितना साधारण हैं। कहाँ आये हैं, कोई राजा के पास क्यों नहीं आये? कहते हैं, मैं साधारण बूढ़े तन में आता हूँ, जिसने 84 जन्म एक्यूरेट पूरे किये हैं। **सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स तो यह है ना। इनका नाम भी रखा है - श्याम और सुन्दर। तुम बच्चे इसका भी अर्थ समझते हो, उन्हों ने अर्थ को न समझने के कारण काला कर दिया है।** मुख्य शिवबाबा का लिंग भी काला। कृष्ण, राम को भी काला कर दिया है। **एक तरफ गोरा फिर दूसरे तरफ काला क्यों? जगन्नाथ के मन्दिर में शक्ल ऐसी दिखाते हैं जैसे अफ्रीकन लोग। कहाँ-कहाँ नारायण को भी काला कर दिया है। कहाँ लक्ष्मी को भी ऐसा ही दिखाते हैं। अब वन्डर लगता है - मनुष्यों की बुद्धि कैसी है!** बाबा ही सत्य मत देते हैं, अपने साथ मिलने के लिए।

<u>शिवबाबा तो कभी मुरली हाथ में नहीं उठाते हैं</u>

41] शिवबाबा तो कभी कोई मुरली, किताब, या पुस्तक हाथ में नहीं उठाते हैं - बाप ओरली (ORALLY) ही समझाते हैं; सच्ची गीता का भगवान (शिव) हाथ में झूठी गीता नहीं ले आता है; निराकार शिव भगवानुवाच है – कोई भी मनुष्य को 'भगवान' नहीं कहा जा सकता!

SM, Revised 28.09.2019 (Original 02.10.1968)
बाबा तुमको और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं - मुझे याद करो। कोई भी किताब आदि उठाने की दरकार नहीं। **बाबा कोई किताब उठाता है क्या? बाप कहते हैं - मैं आकर इस प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करता हूँ।**

SM, Revised 11.10.2019 (Original 27.10.1968)
बाप हमको पढ़ाते ही हैं अमरलोक के लिए। सारी दुनिया का चक्र बाप समझाते हैं। **हाथ में कोई भी पुस्तक नहीं है, ओरली ही बाप समझाते हैं।** पहली-पहली बात बाप समझाते हैं - अपने को आत्मा निश्चय करो।

SM, Revised 09.10.2019 (Original 28.10.1968)
भगवानुवाच है भी गीता। दूसरी कोई बात नहीं है। **गीता पढ़ाने वाले का पुस्तक है, परन्तु पुस्तक आदि कोई पढ़ाते नहीं हैं। गीता कोई हाथ में नहीं है। यह तो भगवानुवाच है। मनुष्य को 'भगवान' नहीं कहा जाता। भगवान ऊंच ते ऊंच है एक (निराकार शिव)।**

SM, Revised 10.08.2019
यह नॉलेज सारी बुद्धि से समझने की है। **कोई किताब आदि है नहीं। गीता का भगवान हाथ में गीता ले आता है क्या? वह तो ज्ञान का सागर है, पुस्तक थोड़ेही ले आया। पुस्तक तो भक्तिमार्ग में बनते हैं।** तो यह सब ड्रामा में नूँध है।

SM, Revised 25.07.2019
शिवबाबा तो कोई शास्त्र पढ़ा हुआ नहीं है। यह रथ (ब्रह्मा बाबा) पढ़ा हुआ है। शिवबाबा को तो 'ज्ञान का सागर' कहा जाता है। **यह तुम समझते हो कि शिवबाबा कोई पुस्तक नहीं उठाता। मैं तो नॉलेजफुल हूँ, बीजरूप हूँ। यह सृष्टि रूपी झाड़ है, उसका रचयिता है बाप, बीज।** बाबा समझाते हैं, मेरा निवास स्थान मूलवतन में है। अभी मैं इस शरीर में विराजमान हूँ, और कोई कह न सके कि 'मैं इस मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ'। 'मैं परमपिता परमात्मा हूँ', कोई कह नहीं सकेगा।

SM, Revised 10.10.2018
शास्त्रों की कोई बात नहीं। **यूँ तो है गीता की बात, परन्तु मनुष्यों ने गीता को भी खण्डन कर दिया है। मैंने तो गीता पुस्तक कुछ भी नहीं उठाई है। वह (झूठी गीता) तो बाद में बनती है। मैं तो तुमको ज्ञान सुनाता हूँ। ऐसे कभी कोई नहीं कहेंगे कि 'तुम मेरे सिकीलधे बच्चे हो'।** यह निराकार परमात्मा ही कहते हैं। निराकार आत्माओं से बात करते हैं।

SM, Revised 26.09.2018
तो अभी तुम बाप के सम्मुख सुन रहे हो, जिसको ज्ञान बरसात कहा जाता है। **वह है विष की बरसात, यह है ज्ञान अमृत की बरसात। गाते हैं ना – 'अमृत छोड़ विष काहे को खाये?'**

SM, Revised 23.11.2016
बाबा तो कभी मुरली हाथ में नहीं उठाते हैं।

SM, Revised 02.09.2016

वो लोग तो गीता पुस्तक उठाकर बैठ सुनाते हैं। **यहाँ तो भगवान है ज्ञान का सागर। इनको कुछ हाथ में ले, पढ़ना नहीं है।**

ज्ञान सूर्य अथवा ज्ञान सागर, परमपिता परमात्मा शिव को ही कहा जाता है

42] ज्ञान सूर्य स्थूल वतन के रहवासी नहीं हैं; ज्ञान सूर्य को ज्ञान सागर भी कहा जाता है; बच्चों को 'मास्टर ज्ञान सूर्य' कहेंगे; ज्ञान सूर्य को कभी ग्रहण नहीं लग सकता; ज्ञान सागर को ही ज्ञान सूर्य कहते हैं; ज्ञान सूर्य शिव बाप ही है, जो सबसे ऊंच है!

SM, Revised 27.01.2020
तुम बच्चों को मालूम पड़ गया है - बाबा कल्प-कल्प संगमयुग पर आते हैं। यह है बेहद की रात। शिवबाबा बेहद की रात में आते हैं, कृष्ण की बात नहीं; **जब घोर अन्धियारे में, अज्ञान नींद में सोये रहते हैं, तब ज्ञान सूर्य बाप आते हैं, बच्चों को दिन में ले जाने।**

SM, Revised 24.12.2019
तुम जानते हो इस दुनिया में हम मोस्ट लकीएस्ट, (मास्टर) ज्ञान सूर्य, (मास्टर) ज्ञान चन्द्रमा और ज्ञान सितारे हैं। बनाने वाला है ज्ञान सागर। वह सूर्य, चांद, सितारे तो स्थूल में हैं ना। उनके साथ हमारी भेंट हैं। तो हम भी फिर (मास्टर) ज्ञान सूर्य, (मास्टर) ज्ञान चन्द्रमा, ज्ञान सितारे होंगे। हमको ऐसा बनाने वाला है ज्ञान का सागर। नाम तो पड़ेगा ना। **ज्ञान सूर्य अथवा ज्ञान सागर के हम बच्चे हैं। वह तो यहाँ के रहवासी नहीं हैं।**

SM, Revised 07.10.2019 (Original 07.11.1968)
राम कहा जाता है परमपिता परमात्मा को। बाकी वह जो राम की सेना आदि दिखाते हैं, वह सब है रांग। गाया भी जाता है, 'ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अन्धेर विनाश ..'।

SM, Revised 11.09.2019 (Original 14.09.1968)
बाप ज्ञान सूर्य, ज्ञान सागर आते हैं, तो तुम्हारा भक्ति मार्ग का अज्ञान मिट जाता है। तुम बाप को याद करते-करते पवित्र बन जाते हो, खाद निकल जाती है। यह है योग अग्नि। काम अग्नि काला बना देती है। योग अग्नि, अर्थात् शिवबाबा की याद, गोरा बनाती है।

SM, Revised 07.09.2019 (Original 01.10.1968)
'ज्ञान सूर्य प्रगटा, ..' - अभी भी गाते हैं, परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। **सूर्य कौन है, कब प्रगटा, कुछ नहीं समझते। बाप समझाते हैं ज्ञान सूर्य को ज्ञान सागर भी कहा जाता है।** बेहद का बाप ज्ञान का सागर है।

AV, Original 26.08.1984, Revised 21.04.2019
ज्ञान सूर्य (शिव बाबा), ज्ञान चन्द्रमा (ब्रह्मा बाबा) और ज्ञान सितारों का मिलन हो रहा है। यह त्रिमूर्ति मिलन इस ब्राह्मण संसार के विशेष मधुबन मण्डल में होता है।

AV, Original 15.04.1984, Revised 27.01.2019
तो सभी ईस्टर्न ज़ोन वाले मास्टर ज्ञान सूर्य हैं। सदा अंधकार को मिटाने वाले, रोशनी देने वाले हैं ना! यह विशेषता है ना! ... ईस्टर्न ज़ोन की गद्दी है, बाप की गद्दी। तो राजगद्दी हो गई ना! ... **तो सभी मास्टर ज्ञान सूर्य हो? ज्ञान सूर्य उदय भी वहीं से हुआ है ना? इस्ट से ही उदय हुआ।** समझा - अपनी विशेषता! ... क्या विशेषता करेंगे? **सदा मास्टर ज्ञान सूर्य। सदा रोशनी देने वाले मास्टर दाता।**

SM, Revised 14.11.2018
एक कहावत है ना – 'सूर्य के आगे अन्धेरा कभी छिप नहीं सकता'। **अब यह है ज्ञान सूर्य, उनके आगे अज्ञान कभी छिप नहीं सकता। तुमको सच्चे बाप द्वारा सच मिल रहा है।** तुम जानते हो, सच्चे ईश्वर बाप के लिए मनुष्य जो बोलते हैं वह झूठ बोलते हैं।

SM, Revised 29.09.2018
हद की रात तो होती ही है, परन्तु कलियुग अन्त को 'घोर अन्धियारा' कहा जाता है। 'ज्ञान अंजन सतगुरू दिया ..'। **सतगुरू, ज्ञान सूर्य, बाप को कहा जाता है। पहले-पहले तो बाप और वर्से का परिचय देना है।**

SM, Revised 08.08.2018
वास्तव में ज्ञान सूर्य को कभी ग्रहण नहीं लग सकता। ग्रहण तो इन सूर्य-चांद आदि को लगता है, जो पृथ्वी को रोशनी देते हैं। **ज्ञान सूर्य तो है ही सबको रोशनी देने वाला। उसकी ही महिमा गाते हैं, 'ज्ञान सूर्य प्रगटा, ..'।**

SM, Revised 10.01.2018
जब कलियुग का अन्त आये, तब भक्ति का भी अन्त आये, **तब ही भगवान आकर मिले, क्योंकि वही भक्ति का फल देने वाला है। उनको ज्ञान सूर्य कहा जाता है।** ज्ञान चन्द्रमा, ज्ञान सूर्य और ज्ञान लकी सितारे। **अच्छा, ज्ञान सूर्य तो है (शिव) बाप। फिर माता चाहिए ज्ञान चन्द्रमा। तो जिस तन में प्रवेश किया है, वह हो गई ज्ञान चन्द्रमा, माता,** और बाकी सब हैं बच्चे, लकी सितारे।

SM, Revised 19.12.2017
ऊंचे ते ऊंची गीता है, परन्तु सब बनाई है मनुष्यों ने, यथार्थ तो है नहीं, इसलिए सब अन्धेरे में हैं, तब गाया जाता है, 'ज्ञान सूर्य प्रगटा, ..' - **इस सूर्य की महिमा नहीं, ज्ञान सूर्य की महिमा है।** यह सूर्य धूप देता, सागर पानी देता। उनके नाम इन पर, इनके नाम उन पर लगा दिये हैं। **ज्ञान सागर को ही ज्ञान सूर्य कहते हैं।**

SM, Revised 18.09.2017
गाया भी जाता है, 'ज्ञान सूर्य प्रगटा, ..' - **ज्ञान सूर्य भी पतित-पावन परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है।**

SM, Revised 05.04.2017
गाया भी हुआ है, 'ज्ञान अंजन सतगुरू दिया ..' - **तो ज्ञान अंजन देने वाला ज्ञान सूर्य बाप है।** सतयुग को दिन, कलियुग को रात कहा जाता है। **आत्माएं उस निराकारी बाप को याद करती हैं।**

SM, Revised 28.02.2017
पहले-पहले मनुष्य सृष्टि रची जाती है, प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा, तो दो बाप हो गये। एक तो परमपिता परमात्मा शिव, जिसको कहते हैं, 'हे अनाथों को सनाथ बनाने वाले बाबा आओ'। फिर गाते हैं, 'ज्ञान सूर्य प्रगटा, ..' - **ज्ञान सूर्य वह (शिव) बाप ही है, जो सबसे ऊंच है।**

SM, Revised 10.02.2017
गाते तो हैं, 'ज्ञान सूर्य प्रगटा, ..' - **परन्तु अर्थ कुछ समझते नहीं। भल कितने भी वेद शास्त्र पढ़े हैं, परन्तु समझते नहीं। जो समझते हैं - वह अच्छी कमाई करते हैं। जो बेसमझ होते हैं, वह देवाला मारते हैं।**

SM, Revised 04.01.2017
गाया जाता है, 'ज्ञान सूर्य प्रगटा, ..' - उस सूर्य की बात नहीं। **मैं, ज्ञान सूर्य, इस समय ज्ञान वर्षा कर रहा हूँ, जिससे तुम पतित से पावन बन रहे हो। … ज्ञान का सागर, अथवा ज्ञान सूर्य, परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है।**

SM, Revised 14.11.2016

बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो सतोप्रधान पावन बन जायेंगे, और कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। किसको गुरू नहीं बनाओ। कहा जाता है, गुरू बिना घोर अन्धियारा। **ढेर के ढेर गुरू हैं। परन्तु सब अन्धियारे में ले जाने वाले हैं।** बाप कहते हैं - ज्ञान सूर्य जब आये, तब घोर अन्धियारा दूर हो।

AV, Original 19.10.1981, Revised 17.07.2016

आज ज्ञान सूर्य (शिव बाबा), ज्ञान चन्द्रमा (ब्रह्मा बाबा) अपने तारामण्डल को देखने आये हैं। सितारों के बीच ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा दोनों ही साथ में आये हैं। वैसे साकार सृष्टि में सूर्य, चन्द्रमा और साथ में सितारे इकट्ठे नहीं होते हैं। लेकिन चैतन्य सितारे सूर्य और चांद के साथ हैं। यह सितारों का अलौकिक संगठन है।

[**ज्ञान सूर्य सिर्फ एक निराकार शिव है; ज्ञान चन्द्रमा सिर्फ एक ब्रह्मा बाबा है; नम्बरवन ज्ञान सितारा सरस्वती मम्मा है; और अनन्य बच्चे नम्बरवार, मास्टर ज्ञान सूर्य, मास्टर ज्ञान चन्द्रमा, और ज्ञान सितारे हैं!**]

धोबीघाट

43] शिव बाप धोबी भी है - आत्माओं को, योगबल से, स्वच्छ बनाते हैं; ज्ञान और योग से आत्माओं को धोया जाता है; यह धोबीघाट भी है; आत्मा प्योर होने से, फिर शरीर भी प्योर मिलता है!

28.12.2019 (Original 25.12.1968)
बाप कहते हैं, विनाश काले विप्रीत बुद्धि, और विनाश काले प्रीत बुद्धि। विनाश तो इस समय ही होना है। बाप आते भी हैं संगमयुग पर, जबकि चेंज होती है। बाप तुम बच्चों को बदले में सब कुछ नया देते हैं। **वह सोनार भी है, धोबी भी है, बड़ा व्यापारी भी है।** बिरला ही कोई बाप से व्यापार करे। इस व्यापार में तो अथाह फायदा है। पढ़ाई में फायदा बहुत होता है। महिमा भी की जाती है कि पढ़ाई कमाई है, वह भी जन्म-जन्मान्तर के लिए कमाई है। तो ऐसी पढ़ाई अच्छी रीति पढ़नी चाहिए ना!

SM, Revised 18.05.2018
गुरू नानक ने भी कहा है, 'मूत पलीती कपड़ धोए ..' - लक्ष्य सोप (soap) है ना। **बाबा कहते हैं, मैं कितना बड़ा धोबी हूँ! तुम्हारे वस्त्र कितना शुद्ध बनाता हूँ! ऐसा धोबी कभी देखा? आत्मा जो बिल्कुल काली हो गई है, उनको योगबल से कितना स्वच्छ बनाता हूँ!** तो इनको (दादा को) कभी याद नहीं करना है। **यह काम सारा शिवबाबा का है, उनको ही याद करो।** इन ब्रह्मा से मीठा वह है। आत्माओं को कहते हैं, तुमको इन आँखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है, परन्तु तुम याद शिवबाबा को करो। शिवबाबा तुमको इनके द्वारा कौड़ी से हीरे जैसा बना रहे हैं।

SM, Revised 03.04.1998 / 09.04.2008 / 23.04.2013 / 28.04.2018 (Page 1)
बहुत बच्चे आते हैं जिनके वस्त्र बिल्कुल मैले पुराने हैं। कोई कपड़े कैसे हैं, कोई कैसे हैं! कोई तो ऐसे सड़े हुए हैं, जो धोने से एकदम फट पड़ते हैं। बाप कहते हैं - यह धोबीघाट कितने वर्षों से चलता आ रहा है। कपड़े धोते ही आये हैं। कोई तो अच्छे हो गये हैं। कोई को तो कितना भी साफ करो, फिर भी मैले के मैले रह जाते हैं! **ज्ञान की सोटी जोर से लगाओ तो फट पड़ते हैं। भाग जाते हैं। जो साफ नहीं होते, शुद्ध होकर औरों को शुद्ध नहीं बनाते, तो समझा जाता है इनकी तकदीर में नहीं है। जो खुद अच्छे बन जाते हैं, वह औरों के भी कपड़े धोते रहते हैं।** यह धोबीघाट भी है। आत्मा प्योर होने से फिर शरीर भी प्योर मिलता है। सांवरे से गोरे बन जाते हैं।

SM, Revised 28.04.2018 (Page 3)
पांच हजार वर्ष हुए जबकि यह धोबीघाट निकला था। बाप कहते हैं 5-5 हजार वर्ष बाद धोबीघाट भारत में ही बनाता हूँ। ...
कोई तो नॉलेजफुल बन जाते हैं, कोई तो बिल्कुल धारणा नहीं करते। समझेंगे उनकी तकदीर में नहीं है। अच्छे बच्चे बड़ा अच्छा पुरुषार्थ करते हैं। बाकी घरबार तो सम्भालना ही है। **कराची में इन्हों की 14 वर्ष भट्ठी रही। कपड़े धोते-धोते कितने अच्छे गोरे बन गये! कोई टूट पड़े, कोई मैले के मैले ही रहे।** आजकल तो सात रोज़ भी मुश्किल ठहर सकते हैं। पहले तो पूरा भट्ठी थी। भट्ठी नहीं होती तो तुम तैयार कैसे होते? ईंटें भट्ठी में पकती हैं ना। फिर कोई कच्चे रह जाते हैं, कोई टूट पड़ते हैं। **यहाँ भी ऐसे हैं - बहुत कपड़े फट पड़ते, श्रीमत पर नहीं चलने से साफ नहीं होते हैं।**

SM, Revised 14.02.2001 / 05.12.2016
तुम ईश्वर से योग लगाकर योगेश्वर बनते हो। मनुष्य तो हैं भोगेश्वर। कहा भी जाता है विकारी, 'मूत पलीती कपड़ धोए ..' । **बाप कहते हैं - मुझे धोबी भी कहते हैं। मैं सब आत्माओं को आकर साफ करता हूँ, फिर शरीर भी नया शुद्ध मिलेगा। बाप कहते हैं, मैं सेकेण्ड में सारी दुनिया के कपड़े साफ कर लेता हूँ। सिर्फ मनमनाभव होने से, आत्मा और शरीर पवित्र बन जायेंगे।** छू मंत्र है ना - सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। कितना सहज उपाय है। बाप को याद करो, तो पावन बन जायेंगे।

SM, Revised 08.03.2016
बाप कहते हैं - तुम आत्माओं को अपना शरीर, अपनी कर्मेन्द्रियां हैं। मुझे निराकार कहते हैं - जरूर मुझे शरीर चाहिए। **तब तो बच्चों को राजयोग सिखाऊं अथवा मनुष्य से देवता, पतित से पावन बनने का मार्ग बताऊं वा मूत पलीती कपड़ धोऊं .. - जरूर बड़ा धोबी होगा। सारे विश्व की आत्मायें और शरीर धोता है। ज्ञान और योग से तुम्हारी आत्माओं को धोया जाता है।**

एम-ऑब्जेक्ट (aim-object) है - नर से प्रिन्स, वा नर से नारायण बनना - बात एक ही है

46] लक्ष्मी-नारायण जरूर पहले प्रिन्स-प्रिन्सेज होंगे - 'बेगर टू प्रिन्स' कहा जाता है, 'बेगर टू किंग' नहीं; जब तक कृष्ण न बनें, तब तक नारायण बन न सकें; यही राधे-कृष्ण स्वयंवर बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं - इसलिए चित्र में भी लक्ष्मी-नारायण के नीचे राधे-कृष्ण को दिखाया है!

SM, Original 01.01.1969 (Page 5)
एम-ऑबजेक्ट बताते रहो। विशाल बुद्धि वाले झट समझेंगे। अन्त में यह चित्र ही काम आवेंगे। इनमें सारा ज्ञान भरा हुआ है। **लक्ष्मी-नारायण और राधे-कृष्ण का सम्बन्ध क्या है, वह भी कोई नहीं जानते हैं। लक्ष्मी-नारायण जरूर पहले प्रिन्स-प्रिन्सेज होंगे। 'बेगर टू प्रिन्स' हैं ना। 'बेगर टू किंग' नहीं कहा जाता। प्रिन्स के बाद ही किंग बनते हैं।** लक्ष्मी-नारायण छोटेपन में कौन थे? यह किसको भी पता नहीं है। 100% ईडियट (IDIOT) को, बाप आकर 100% आइडियल (IDEAL) बनाते हैं।

SM, Original 19.12.1968 (Page 3)
यह ज्ञान ही डिफरेन्ट (DIFFERENT) है। इनको कहा जाता है स्प्रीचुअल नॉलेज। बाप कैसे आते हैं, यह भी तुम जानते हो। तुमको ब्रह्मा के लिए कहते हैं। बोलो - यह तो झाड़ के अन्त में खड़ा है। **झाड़ का विनाश होता है, तो फिर जाकर यह कृष्ण बनते हैं - या लक्ष्मी-नारायण बनते हैं - बात एक ही है। कृष्ण के लिए कहते हैं 'गीता सुनाई'। नारायण को ज्ञान नहीं था क्या? लक्ष्मी-नारायण छोटेपन में कौन थे? कुछ भी जानते नहीं। तुम जानते हो - यही राधे-कृष्ण स्वयंवर बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं।**

SM, Original 16.07.1968 (Page 3)
स्वर्ग में थोड़े ही कहेंगे 'ऊँच ते ऊँच भगवान'। यहाँ तुमको बनाते हैं, तो तुम याद करते हो। ऊँच ते ऊँच बाप फिर बनाते भी ऊँच ते ऊँच हैं। **नारायण से पहले तो श्रीकृष्ण हैं। फिर तुम ऐसे क्यों कहते हो 'नर से नारायण बने'? क्यों नहीं कहते हो 'नर से कृष्ण बने'? पहले-पहले नारायण थोड़े ही बनेंगे। पहले तो श्रीकृष्ण, प्रिन्स ही बनेंगे ना?** बच्चा तो फूल होता है। वह तो फिर भी युगल बन जाते हैं। महिमा ब्रह्मचारी की होती है। छोटे बच्चे को सतोप्रधान कहा जाता है। बूढ़ा हुआ, तो उनको तमोप्रघान कहेंगे। **तो तुम बच्चों को ख्याल में आना चाहिए - हम पहले-पहले जरूर प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे। बाप कहते हैं - अभी तुम नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने वाले हो। गाया भी जाता है 'बेगर टू प्रिन्स'।**

SM, Original 12.01.1967 (Page 1)
बहुत जन्मों के अंत में तुम बिल्कुल तमोप्रधान, बेगर बन गये। अब फिर प्रिन्स बनना है। **एम ऑब्जेक्ट ही है राजयोग, फिर चाहे लक्ष्मी-नारायण को दिखाओ या कृष्ण, राधा को। पहले तो जरूर राधा-कृष्ण ही बनेंगे। फिर इनकी भी राजधानी चलती है। सिर्फ एक ही तो नहीं होंगे ना? स्वयंवर बाद, राधा-कृष्ण सो फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। नर से प्रिन्स, वा नर से नारायण बनना - बात एक ही है।**

SM, Revised 29.06.2020
तुम बच्चों में भी थोड़े हैं जो समझते हैं, बरोबर हमको बाप पढ़ाते हैं। **हम यह लक्ष्मी-नारायण बनने के लिए आये हैं। हम 'बेगर टू प्रिन्स' बनेंगे। पहले-पहले हम जाकर राजकुमार बनेंगे।**

SM, Revised 10.06.2020
तुम आज पढ़ते हो, कल शरीर छोड़ राजाई में जाकर जन्म लेंगे। तुम भविष्य के लिए प्रालब्ध पाते हो। यहाँ से पढ़कर जायेंगे, फिर हमारा जन्म सतयुग में होगा। **एम-ऑब्जेक्ट ही है - प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने की। राजयोग है ना।**

SM, Revised 04.05.2020
तुम पढ़ रहे हो प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने के लिए। अन्त मती सो गति हो जायेगी। बुद्धि में यह निश्चय है हम बेगर से प्रिन्स बनने वाले हैं।

SM, Revised 03.03.2020
ज्ञान से भी जानते हैं कि हम 'बेगर टू प्रिन्स' बन रहे हैं। हमारी एम ऑब्जेक्ट ही यह राधे-कृष्ण बनने की है - लक्ष्मी-नारायण नहीं, राधे कृष्ण - क्योंकि पूरे 5 हज़ार वर्ष तो इनके ही कहेंगे। लक्ष्मी-नारायण के तो फिर भी 20-25 वर्ष कम हो जाते हैं, इसलिए कृष्ण की महिमा जास्ती है। **यह भी किसको पता नहीं कि राधे-कृष्ण ही फिर सो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं।**

SM, Revised 15.10.2019 (Original 11.11.1968)
लक्ष्मी-नारायण, राधे-कृष्ण के मन्दिर भी हैं। **परन्तु यह किसको भी पता नहीं है, राधे-कृष्ण पहले प्रिन्स-प्रिन्सेज हैं, जो फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। यह 'बेगर टू प्रिन्स' बनेंगे। प्रिन्स सो बेगर बनते हैं।** कितनी सहज बात है। 84 जन्मों की कहानी इन दोनों चित्रों में है। यह (राधे-कृष्ण) वह (लक्ष्मी-नारायण) बनते हैं। युगल है, इसलिए 4 भुजा देते हैं। प्रवृत्ति मार्ग है ना।

SM, Revised 06.05.2019
तुम जानते हो हम 'बेगर टू प्रिन्स' बनेंगे। पहले तो कृष्ण बनेंगे ना। जब तक कृष्ण न बनें, तब तक नारायण बन न सकें। बच्चे से बड़ा हो तब नारायण नाम मिले।

SM, Revised 28.06.2018
अभी तुम कृष्ण की डिनायस्टी बना रहे हो। विश्व के मालिकपने का माखन तुमको मिलना है। लेन-देन का अथवा कर्मों का हिसाब-किताब कैसा है! क्रिश्चियन के भी कर्म देखो, राजधानी लेकर फिर वापस देना है। आपस में कितना लड़ते हैं! **राजाई का मक्खन फिर भी तुमको मिलना है। तुम प्रिन्स-प्रिन्सेज बन जाते हो।**

SM, Revised 30.09.2016
लेकिन भगवानुवाच है जरूर। कहते हैं कि मैं बच्चों को राजयोग सिखा रहा हूँ। नर से नारायण अथवा कृष्ण, नारी को लक्ष्मी अथवा राधे बनाने लिए योग और ज्ञान सिखाता हूँ, इनसे और क्या चाहिए? …
बाबा कहते – बच्चे, अच्छी रीति समझते हो कि राजयोग सिखलाने वाला एक ही भगवान है, न कि कृष्ण? **राधे-कृष्ण तो अलग-अलग राजाई के बच्चे हैं। उन्हों की आपस में सगाई होती है, शादी के बाद नाम बदलता है - इसलिए चित्र में भी लक्ष्मी-नारायण के नीचे राधे-कृष्ण को दिखाया है।**

काली - जगदम्बा (ओम राधे) ही है – Part 4

51] नाम बहुत रखे हुए हैं - जगत अम्बा, सरस्वती, दुर्गा, काली, आदि - है एक मम्मा, ओम राधे - फिर साथ-साथ में बच्चे भी हैं; असुरों के सामने काली बनना है - अपने ब्राह्मण कुल में शीतला बनना है; जब कुमारियाँ काली रूप बन जाये, तब सर्विस की सफलता हो!

SM, Original 17.06.1964 (Page 2)
तुम बच्चों ने मम्मा की महिमा सुनी। मम्मा की महिमा अलग है, लक्ष्मी की महिमा अलग है। तो चित्र कैसे-कैसे बैठ बनाए हैं। काली की ऐसी जीभ दिखाते हैं। ऐसा तो कोई मनुष्य होता नहीं! …
काली का रूप बहुत भयानक दिखाते हैं। ऐसी कोई शक्ति थोड़े ही होगी - वायोलेंस (violence) वाली हिंसक! हर एक बात के लिए बाप समझाते रहते हैं। किस्म-किस्म के चित्र हैं; परन्तु मनुष्य तो मनुष्य ही होते हैं।

SM, Original 13.09.1967 (रात्रि क्लास)
गाया भी जाता है अम्बा, सरस्वती। नाम इनके बहुत रखे हुए हैं - अम्बा, काली ..। किसको भी पता नहीं है कि कौन है। **बंगाल में काली की कितनी पूजा करते हैं। मगर शकल तो देखो कैसी है - जैसे कि कोई राक्षसणी हो। इतनी तो वो भयानक बनाई है। ऐसे तो कोई है नहीं। और फिर दिखाया भी है तो हिंसक। एक हाथ में तलवार है। कितनी पूजा होती है। बाप समझाते हैं कि ऐसे काल का रूप कोई होता नहीं है।** मनुष्यों के ही चित्र हैं। अम्बा के पास भी बहुत जाते हैं। **एक मम्मा है - फिर साथ-साथ में तुम भी हो।**

SM, Original 05.09.1968 (रात्रि क्लास - Page 2)
काला मुँह किया तो दिवाला निकला। अभी कृष्ण, राम को काला बनाते हैं। काले तो विकारी हैं ना, फिर विकारी की पूजा करनी चाहिए? निषेध है ना! **वह भी काले तुम भी काले, फिर काले, काले की पूजा करेंगे? समझ की बात है ना?** श्रीनाथ द्वारे में काला चित्र है। वह भी काम चिता पर चढ़ा हुआ, तुम भी काम चिता पर चढ़े हुए। **अभी कलकत्ता में काली है - वह है सबसे काली। काली को क्यों पूजना चाहिए? अकल है नहीं! कृष्ण जो गोरा, पवित्र है, उनकी पूजा करो। अपवित्र की क्यों करते हो? तो यह सभी है अज्ञान। कलकत्ते में जाकर समझाओ। यह काम चिता पर चढ़ काली बन गई है। माता तो गोरी होनी चाहिए ना?** बाप के बने, और सेकण्ड में जीवनमुक्ति।

SM, Revised 13.10.2018
तुम जानते हो जिसको ‘जगत अम्बा’ कहते हैं, वह अभी बच्चों के सम्मुख बैठी है। भक्तिमार्ग में तो ऐसे ही गाते आये हैं। तुम बच्चों को अभी ज्ञान मिला है, अर्थात् जगत अम्बा का परिचय मिला है। जगत अम्बा के नाम से भी भिन्न-भिन्न अनेक चित्र बनाये हैं। **वास्तव में है तो एक ही जगत अम्बा, उनको ही काली कहो, सरस्वती कहो, दुर्गा कहो, ढेर नाम रखने से मनुष्य मूँझ गये हैं। ‘काली कलकत्ते वाली’ भी कहते हैं।** परन्तु ऐसा चित्र तो होता नहीं। बाप कहते हैं, यह सब भक्ति मार्ग की सामग्री है।

SM, Revised 15.09.2016
लक्ष्मी-नारायण फिर 84 जन्मों के बाद, जगत अम्बा, जगतपिता बनते हैं। वास्तव में जगत अम्बा है पुरूषार्थी - फिर लक्ष्मी है पावन प्रालब्ध। महिमा जास्ती किसकी है? **जगत अम्बा पर देखो कितना मेला लगता है। ‘काली कलकत्ते वाली’ मशहूर है। काली माता के पास भला काला पिता क्यों नहीं बनाया है? वास्तव में जगत अम्बा, आदि देवी, ज्ञान चिता पर बैठ काले से गोरी बनती है। पहले ज्ञान ज्ञानेश्वरी है, फिर राज-राजेश्वरी बनती है।**

AV, Original 13.03.1969
काली के सिवाए, बाकी जो भी देवियाँ हैं उन्हों के नयन हमेशा गीले दिखाते हैं। प्रेम में जैसे डूबे हुए नयन दिखाते हैं, और साथ-साथ जो उनका चेहरा आदि बनाते हैं, तो उनकी सूरत से ही शक्ति के संस्कार देखने में आते हैं। लेकिन नयनों में प्रेम, दया, शीतलता देखने

में आती है। मातापन के प्रेम के संस्कार इन नयनों से दिखाई पड़ते हैं। उन्हों के ठहरने का ढंग, वा सवारी अस्त्र-शस्त्र दिखाते हैं, वह शक्ति रूप प्रगट करता है।

AV, Original 20.03.1969
काली बनना है विकारों के ऊपर। असुरों के सामने काली बनना है। लेकिन अपने ब्राह्मण कुल में शीतला बनना है।

AV, Original 28.05.1970
कब कायर नहीं बनना। कमज़ोरी नहीं दिखाना। काली का पूजन देखा है? जैसे कि काली दल है ना। वैसे इस सारे ग्रुप को फिर काली दल बनना है। **एक-एक, काली रूप जब बनेंगी, तब समस्याओं का सामना कर सकेंगी।** विशेष कुमारियों को शीतला नहीं बनना है, काली बनना है। शीतला भी किस रूप में बनना है, वह अर्थ भी तो समझती हो। लेकिन **जब सर्विस पर हो, कर्तव्य पर हो, तो काली रूप चाहिए। काली रूप होगी, तो काली भी किस पर बलि नहीं चढेगी। लेकिन अनेकों को अपने ऊपर बलि चढायेंगी। कोई पर भी स्वयं बलि नहीं चढ़ना।** लेकिन उसको अपने ऊपर, अर्थात् जिसके (शिव बाबा के) ऊपर आप सभी बलि चढ़ी हो, उन पर ही सभी को बलि चढ़ाना है। ऐसी काली अगर बन गई, तो फिर अनेकों की समस्याओं को हल कर सकेंगी। **बहुत कड़ा रूप चाहिए। माया का कोई विघ्न, सामने आने का साहस न रख सके। जब कुमारियाँ काली रूप बन जाये, तब सर्विस की सफ़लता हो।**

AV, Original 02.07.1970
आपकी यादगार में विशेष क्या देखते हैं? शक्तियों की मूर्त में मुख्य विशेषता क्या होती है? स्वयं शक्तियाँ हो, और अपनी विशेषता मालूम नहीं है? **शक्तियों की विशेषता यह होती है कि जितना ही प्रेममूर्त, उतना ही संहारीमूर्त होती है। शक्तियों के नयन सदैव प्रेममूर्त होते हैं, लेकिन जितना ही प्रेममूर्त, उतना ही विकराल रूप भी होते हैं। एक सेकंड में किसको भी प्रेममूर्त भी बना सकती, तो एक सेकंड में किसका विनाश भी कर सकती हैं।**

AV, Original 11.07.1970
अब तो काली रूप चाहिए। विकराल संहारी रूप चाहिए। अब लास्ट समय है। अब तक अगर विकराल रूपधारी नहीं बनेंगे, तो अपने विकर्मों, और विकर्मियों का सामना नहीं कर सकेंगे। अभी समाने की बात नहीं। विकर्मों, व्यर्थ संकल्पों को, वा विकर्मियों के विकर्मी चलन को, अब समाना नहीं है, लेकिन संहार करना है। अब स्नेह को समाना है। शक्तिरूप को प्रत्यक्ष करना है। **शक्तियों को एक ही समय तीन बातें धारण करनी हैं। एक तो मस्तक में मातृ-स्नेहीपने का गुण, रूप में रूहानियत, और वाणी में वज्र (power)।** एक-एक बोल विकर्मों और विकर्मियों को ख़त्म करने वाला हो।

AV, Original 04.03.1972
इतनी कड़ी दृष्टि, कड़ी वृत्ति, कड़ी स्मृति स्वरूप बनना चाहिए। पतित आत्मा मुझ शस्त्रधारी शक्ति के आगे, एक सेकेण्ड में भस्म हो जाए। कोई व्यक्ति भस्म नहीं होगा, लेकिन उनके पतित संस्कार नाश हो जायेंगे। आसुरी संस्कारों को नाश करने की आवश्यकता है। मैं पतित-पावनी, आसुरी-पतित संस्कार संहारी हूँ। जो स्वयं संहारी हैं, वह कब किसका शिकार नहीं बन सकते। **इतना प्रैक्टिकल प्रभाव होना चाहिए जो कोई भी आपके सामने संकल्प करे, और उनका संकल्प मूर्छित हो जाए। ऐसा काली रूप बनना है। एक सेकेण्ड में पतित संकल्प की बलि ले लेवें।**

AV, Original 08.10.1975
अन्तिम स्वरूप है ही महाकाली का अर्थात् आसुरी संस्कारों को समाप्त करने वाला। इस लिये आपको सदा स्मृति में रखना है कि मैं महाकाली स्वरूप हूँ - इस लिये आप में अब कोई भी आसुरी संस्कार नहीं रहना चाहिए।

AV, Original 26.10.1975

कोई भी देहधारी में संकल्प से व कर्म से फंसना, इस विकारी देह रूपी साँप को टच करना अर्थात् अपनी की हुई अब तक की कमाई को खत्म करना है। चाहे कितना भी ज्ञान का अनुभव हो, या याद द्वारा शक्तियों की प्राप्ति का अनुभव किया हो, या तन-मन-धन से सेवा की हो, लेकिन सर्व प्राप्तियाँ इस देह रूपी साँप को टच करने से, इस साँप के विष के कारण, जैसे विष मनुष्य को खत्म कर देता है, **वैसे ही यह साँप भी अर्थात् देह में फँसने का विष सारी कमाई को खत्म कर देता है।** पहले की हुई कमाई के रजिस्टर पर काला दाग पड़ जाता है, जिसको मिटाना बहुत मुश्किल है। जैसे योग-अग्नि पिछले पापों को भस्म करती है, वैसे यह विकारी भोग भोगने की अग्नि पिछले पुण्य को भस्म कर देती है। **इसको साधारण बात नहीं समझना। यह पाँचवीं मंज़िल से गिरने की बात है।**

याद की विधि – SM – Part 1

71] अभी (संगम युग में) तुमको अपने को निराकार आत्मा समझ, निराकार शिव बाप को ऊपर परमधाम, स्वीट-होम, घर में ही याद करना है; शिव बाप कहते हैं - मुझे वहाँ याद करो, बुद्धि-योग वहाँ (परमधाम में) लगाओ - रास्ता बरोबर पकड़ना चाहिए!

SM, Revised 01.08.2020
बाप की याद के साथ-साथ, घर की भी याद जरूर चाहिए क्योंकि अब वापिस घर जाना है। घर में ही बाप को याद करना है। भल तुम जानते हो, बाबा इस तन में आकर हमको सुना रहे हैं, परन्तु बुद्धि परमधाम, स्वीट-होम (sweet Home) से टूटनी नहीं चाहिए। **टीचर घर छोड़कर आते हैं, तुमको पढ़ाने। पढ़ाकर फिर बहुत दूर चले जाते हैं। सेकण्ड में कहाँ भी जा सकते हैं।**

SM, Revised 06.07.2020
बाबा कहते हैं – बच्चे, मैं इस बैल (रथ) पर सदैव सवारी करूँ, इसमें मुझे सुख नहीं भासता है। मैं तो तुम बच्चों को पढ़ाने आता हूँ। **ऐसे नहीं, बैल पर सवारी कर बैठे ही हैं। रात-दिन बैल पर सवारी होती है क्या? उनका तो सेकण्ड (second) में आना-जाना होता है। सदैव बैठने का कायदा ही नहीं।** बाबा कितना दूर (परमधाम) से आते हैं पढ़ाने के लिए, घर तो उनका वह (मूल वतन) है ना। सारा दिन शरीर में थोड़ेही बैठेगा, उनको सुख ही नहीं आयेगा। जैसे पिंजड़े में तोता फँस जाता है।

SM, Revised 31.01.2020
मित्र-सम्बन्धियों, बच्चों, आदि को देखते हुए भी बुद्धि बाप की याद में लटकी रहे। **तुम बच्चे जैसे याद की फाँसी पर लटके हुए हो। आत्मा को अपने बाप परमात्मा को ही याद करना है। बुद्धि ऊपर लटकी रहे। बाप का घर भी ऊपर है ना।** मूलवतन, सूक्ष्मवतन और यह है स्थूलवतन।

SM, Revised 22.06.2019
बहुत बच्चे इस बात में भी मूंझते हैं कि हम अपने को आत्मा निश्चय तो करें, लेकिन **बाप को कहाँ याद करें? यह तो जानते हो बाप परमधाम निवासी है। बाप ने अपना परिचय दिया हुआ है। कहाँ भी चलते-फिरते, बाप को याद करो। बाप रहते हैं परमधाम में। तुम्हारी आत्मा भी वहाँ रहने वाली है**, फिर यहाँ पार्ट बजाने आती है। यह भी ज्ञान अभी मिला है।

SM, Revised 17.06.2019
आत्मा ही बाप को याद करती है। भल आगे (भक्ति मार्ग में) भी कहते थे, 'हम भगवान् को याद करता हूँ'। परन्तु अपने को साकार समझ, निराकार को याद करते थे। अपने को निराकार समझ, निराकार को याद कभी नहीं करते थे। **अभी (संगम युग में) तुमको अपने को निराकार आत्मा समझ, निराकार बाप को याद करना है। यह बड़ी विचार सागर मंथन करने की बात है।**

SM, Revised 22.10.2018
इस मम्मा-बाबा को याद नहीं करना है। इनको याद करने से जमा नहीं होगा। इनमें (ब्रह्मा में) शिवबाबा आते हैं, तो याद शिवबाबा को करना है। ऐसे नहीं कि इनमें शिवबाबा है, इसलिए इनकी याद रहे। नहीं! **शिवबाबा को वहाँ याद करना है। शिवबाबा और स्वीट-होम (sweet Home) को याद करना है। जिन्न मुआफिक बुद्धि में याद रखना है - शिवबाबा वहाँ रहते हैं, शिवबाबा यहाँ आकर सुनाते हैं, परन्तु हमको याद वहाँ करना है, यहाँ नहीं। बुद्धि दूर जानी चाहिए, यहाँ नहीं। यह शिवबाबा तो चला जायेगा।**

SM, Revised 22.10.2018 (continued)
शिवबाबा इस एक में ही आते हैं। मम्मा में उनको देख न सकें। तुम जानते हो यह बाबा का रथ है, परन्तु इनके चेहरे को नहीं देखना है। **बुद्धि वहाँ लटकी रहे। यहाँ बुद्धि रहने से इतना मजा नहीं आयेगा। यह कोई यात्रा नहीं हुई। यात्रा की हद तुम्हारी वहाँ है।** ऐसे नहीं कि

बाबा को ही देखते रहो क्योंकि इनमें शिव है। फिर ऊपर जाने की आदत छूट जाती है। **बाप कहते हैं, मुझे वहाँ याद करो, बुद्धि-योग वहाँ लगाओ।**

SM, Revised 22.10.2018 (continued)
कई बुद्धू समझते हैं कि (ब्रह्मा) बाबा को ही बैठ देखें। **अरे, बुद्धि को स्वीट होम (परमधाम) में लगाना है। शिवबाबा तो सदैव रथ पर रह न सके।** यहाँ आकर सिर्फ सर्विस करेंगे। सवारी ले सर्विस कर, फिर उतर जायेंगे। **बैल पर सदैव सवारी हो नहीं सकती। तो बुद्धि वहाँ रहनी चाहिए।** बाबा आते हैं, मुरली चलाकर चले जाते हैं। इनकी (ब्रह्मा की) बुद्धि भी वहाँ रहती है। **रास्ता बरोबर पकड़ना चाहिए। नहीं तो घड़ी-घड़ी पट्टी से गिर पड़ते हैं।** यह तो थोड़ा समय है। इनमें शिवबाबा ही नहीं होगा तो याद क्यों करेंगे? मुरली तो यह भी सुना सकते हैं, इनमें कभी है, कभी नहीं है। कभी रेस्ट लेते हैं। **तुम याद वहाँ करो।**

SM, Revised 07.07.2018
तुम्हारी बुद्धि परमधाम, स्वीट होम तरफ लगी हुई है। भल पढ़ाते तो यहाँ ही हैं, मात-पिता सम्मुख बैठे हैं, तो भी बुद्धियोग अथवा याद निर्वाणधाम तरफ ही है। हमको बाप के साथ घर जाना है। फिर विष्णु के घर आयेंगे। वह भी घर है, यह भी घर है। कृष्णपुरी ससुरघर जाना है। पहले तो बाप जो लायक बनाते हैं, उनको याद करना है।

SM, Revised 27.04.2018
यह ब्रह्माकुमारी संस्था, बीजरूप बाप ने स्वयं रची है, जो बीजरूप परमपिता परमात्मा ऊपर में रहते हैं। **ऐसे नहीं सभी टाल टालियों का बीजरूप ऊपर में हैं। यह बड़ी महीन बातें हैं। परमपिता परमात्मा को हमेशा ऊपर में याद किया जाता है।**

SM, Revised 14.06.2017
बाप कहते हैं जो भी आकारी, साकारी वा निराकारी चित्र हैं - उन्हें तुम्हें याद नहीं करना है। तुमको तो लक्ष्य दिया जाता है। मनुष्य तो चित्र देख याद करते हैं। बाबा तो कहते हैं, चित्रों को देखना अब बंद करो। यह है भक्ति मार्ग। …
बाप कहते हैं, मामेकम् याद करो, बुद्धियोग ऊपर में लटकाओ। जहाँ जाना है, उनको ही याद करना है। एक बाप, दूसरा न कोई। वही सच्चा पातशाह है, सच सुनाने वाला। तो कोई भी चित्र का सिमरण नहीं करना है। **यह जो शिव का चित्र है, उनका भी ध्यान नहीं करना है, क्योंकि शिव तो ऐसा है नहीं।**

SM, Revised 12.05.2017
इस समय मैं बहुरूपी हूँ। बहुरूपी अक्षर से भी मनुष्यों ने समझा है - सब रूप उनके हैं। **माया उल्टा लटका देती है, फिर बाप सुल्टा बनाते हैं।** तुम बच्चे अभी मुक्तिधाम में जाने का पुरूषार्थ करते हो। **तुम्हारी बुद्धि है मुक्तिधाम तरफ। ऐसा कोई मनुष्य पुरूषार्थ करा न सके, जो तुमको बाप करा रहे हैं। अब अपना बुद्धियोग वहाँ लगाओ।** जीते जी इस शरीर को भूलते जाओ।

याद की विधि – AV – Part 2

72] साकार वा आकार में निराकार को देखना - यह प्रैक्टिकल और नेचरल स्वरूप हो ही जाना चाहिए; मिलने के समय इस देह के भान को छोड़ना पड़े - जो बाप की ड्रेस, वह आप की ड्रेस होनी चाहिए - समान होना चाहिए; निराकारी आत्म स्थिति से, निराकारी बाप स्वत: ही याद आता है!

AV, Original 28.07.1971
अभी आकार को देखते, निराकार को देखते हो? बातचीत किस से करते हो? -(निराकार से)। आकार में, निराकार देखने आये - इसमें अन्त तक भी अगर अभ्यासी रहेंगे, तो देही-अभिमानी का, अथवा अपने असली स्वरूप का जो आनन्द वा सुख है, वह संगमयुग पर नहीं करेंगे। संगमयुग का वर्सा कब प्राप्त होता है? संगमयुग का वर्सा कौनसा है? -(अतीन्द्रिय सुख)। यह अन्त में मिलेगा क्या - जब जाने वाले होंगे? आत्मिक-स्वरूप हो चलना, वा देही हो चलना - यह अभ्यास नहीं है? अभी साकार को वा आकार को देखते, आकर्षण इस तरफ जाती है - वा आत्मा तरफ जाती है? **आत्मा को देखते हो ना? आकार में निराकार को देखना - यह प्रैक्टिकल (practical) और नेचरल (natural) स्वरूप हो ही जाना चाहिए।**

AV, Original 12.11.1972
जैसे जब युद्ध प्रारम्भ होता है, तो अचानक आर्डर (order) निकलते हैं - अभी-अभी, सभी घर छोड़ बाहर चले जाओ। फिर क्या करना पड़ता है? ज़रूर करना पड़े। तो बापदादा भी अचानक डायरेक्शन (direction) दें कि इस शरीर रूपी घर को छोड़, इस देह-अभिमानी की स्थिति को छोड़, देही-अभिमानी बन जाओ, **इस दुनिया से परे अपने स्वीट-होम (sweet Home) में चले जाओ - तो कर सकेंगे? युद्धस्थल में रूक तो नहीं जावेंगे? युद्ध करते-करते ही समय तो नहीं बिता देंगे कि – 'जावें, न जावें? जाना ठीक होगा, वा नहीं? यह ले जावें, वा छोड़ जावें?' इस सोच में समय गंवा देते हैं।**

AV, Original 23.01.1973
अब अव्यक्त मिलन का अनुभव किया? जिस समय चाहो, या जिस परिस्थिति में चाहो, उस समय, उस रूप से मिलन मिलाने का अनुभव कर सकते हो? क्या यह प्रैक्टिस हो गयी? जब थोडी-सी प्रैक्टिस की है, तो उसको बढ़ा सकते हो ना? तरीका तो सभी को आ गया है? यह तो बहुत सहज तरीका है। **जिससे, जिस देश में, जिस रूप में मिलना चाहते हो, वैसा अपना वेश बना लो। अगर अपना वेश बना लिया, तो उस वेश में, और उस देश में पहुँच ही जायेंगे, और उस देश के वासी बाप से, अनेक रूप से मिलन मना सकेंगे। सिर्फ उस देश के समान वेश धारण करो।** अर्थात् स्थूल वेश और स्थूल शरीर की स्मृति से परे, सूक्ष्म शरीर अर्थात् सूक्ष्म देश के वेशधारी बनो। क्या बहुरूपी नहीं हो? क्या वेश धारण करना नहीं आता? जैसे आजकल की दुनिया में, जैसा कर्त्तव्य वैसा वेश धारण कर लेते हैं, वैसे आप भी बहुरूपी हो? तो जिस समय, जैसा कर्म करना चाहते हो क्या वैसा वेश धारण नहीं कर सकते? **अभी-अभी साकारी और अभी-अभी आकारी, जैसे स्थूल वस्त्र सहज बदल सकते हो, तो क्या अपनी बुद्धि द्वारा अपने सूक्ष्म शरीर को धारण नहीं कर सकते हो? सिर्फ बहुरूपी बन जाओ।**

AV, Original 28.11.1979
बाप तो एक सेकेण्ड में आप को उड़ाकर वतन में ले जावेंगे, **बाप (निराकार) वतन से आकार में आते हैं, आप साकार से आकार में आओ। मिलने के स्थान पर तो पहुंचो।** स्थान भी तो ऐसा बढ़िया चाहिए ना! सूक्ष्म वतन, आकारी वतन, मिलने का स्थान है। समय भी फिक्स (fix) है, अपॉइंटमेंट (appointment) भी है, स्थान भी फिक्स है, **फिर क्यों नहीं मिलन होता? सिर्फ गलती क्या करते हो कि मिट्टी के साथ वहाँ आना चाहते हो। यह देह मिट्टी है। जब मिट्टी का काम करना है, तब करो। लेकिन मिलने के समय इस देह के भान को छोड़ना पड़े। जो बाप की ड्रेस, वह आप की ड्रेस होनी चाहिए। समान होना चाहिए ना!** जैसे बाप निराकार से आकारी वस्त्र धारण करते हैं - आकारी और निराकारी, 'बाप-दादा' बन जाते हैं - आप भी आकारी फरिश्ता ड्रेस पहन कर आओ। चमकीली ड्रेस पहन कर आओ, तब मिलन होगा।

AV, Original 29.03.1981
अमृतवेले की याद पावरफुल (powerful) बनाने के लिए पहले अपने स्वरूप को पावरफुल बनाओ। **चाहे बिन्दु रूप हो बैठो, चाहे फरिश्ता स्वरूप हो बैठो। कारण क्या होता है - स्वयं अपना रूप चेन्ज (change) नहीं करते। सिर्फ बाप को उस स्वरूप में देखते हो। बाप को बिन्दु रूप में, या फरिश्ते रूप में देखने की कोशिश करते, लेकिन जब तक खुद नहीं बने हैं, तब तक मिलन मना नहीं सकते।** सिर्फ बाप को उस रूप में देखने की कोशिश करना, यह तो भक्ति मार्ग समान हो जाता - जैसे वह देवताओं को उस रूप में देखते, और खुद वैसे के वैसे होते। उसी समय वायुमण्डल खुशी का होता। थोड़े समय का प्रभाव पड़ता, लेकिन वह अनुभूति नहीं होती। **इसलिए पहले स्व स्वरूप को चेन्ज करने का अभ्यास करो। फिर बहुत पावरफुल स्टेज का अनुभव होगा।**

AV, Original 19.12.1985
बापदादा भी विधि और युक्ति पूर्वक ही काम चला रहे हैं। मिलने का वायदा तो है - लेकिन विधि, समय प्रमाण परिवर्तन होती रहेगी।

AV, Original 04.12.1991
सभी मिलन मनाने आये हैं। तो बापदादा भी मिलन मनाने के लिए, आप जैसे, व्यक्त शरीर में आते हैं। **समान बनना पड़ता है ना। आप साकार में हो, तो बाप को भी साकार तन का आधार लेना पड़ता है। वैसे, आपको व्यक्त से अव्यक्त बनना है, या अव्यक्त को व्यक्त बनना है? कायदा क्या कहता है? अव्यक्त बनना है ना? तो फिर अव्यक्त को व्यक्त में क्यों लाते हो?** जब आपको भी अव्यक्त ही बनना है, तो अव्यक्त को तो अव्यक्त ही रहने दो ना। **अव्यक्त मिलन के अनुभव को बढ़ाते चलो।** अव्यक्त भी, ड्रामा अनुसार, व्यक्त में आने के लिए बांधे हुए हैं, लेकिन समय प्रमाण, सरकमस्टांस प्रमाण, अव्यक्त मिलन का अनुभव बहुत काम में आने वाला है। **इसलिए इस अनुभव को इतना स्पष्ट और सहज करते जाओ, जो समय पर यह अव्यक्त मिलन, साकार समान ही अनुभव हो। समझा?** उस समय ऐसे नहीं कहना कि हमको तो अव्यक्त से व्यक्त में मिलने की आदत है। जैसा समय, वैसे मिलन मना सकते हो। समझा?

AV, Original 19.01.1995
चाहे बच्चे साकार में हैं, और बापदादा आकार निराकार हैं, लेकिन अलग हैं क्या? नहीं है ना? तो दूर हो, या समीप हो? ये दिल की समीपता, साकार में भी समीपता अनुभव कराती है। **चाहे किसी भी देश में हैं, लेकिन दिल की समीपता, साथ का अनुभव कराती है। अलग हो नहीं सकते, असम्भव है। 'परमात्म वायदा' कभी टल नहीं सकता।** 'परमात्म वायदा' भावी बन जाता है, तो भावी टाली नहीं टले। इसलिये सदा समीप हैं, सदा साथी हैं - और साथी बन हाथ में हाथ, साथ लेते हुए, कितने मौज से चल रहे हैं।

AV, Original 18.01.2002
जो ब्रह्मा बाप ने आज के दिन तीन शब्दों में शिक्षा दी (निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी), इन तीन शब्दों के शिक्षा स्वरूप बनो। मनसा में निराकारी, वाचा में निरहंकारी, कर्मणा में निर्विकारी। **सेकण्ड में साकार स्वरूप में आओ, सेकण्ड में निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ। यह अभ्यास सारे दिन में बार-बार करो। ऐसे नहीं सिर्फ याद में बैठने के टाइम (time) निराकारी स्टेज में स्थित रहो - लेकिन बीच-बीच में समय निकाल, इस देहभान से न्यारे, निराकारी आत्मा स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करो। कोई भी कार्य करो, कार्य करते भी, यह अभ्यास करो कि मैं निराकार आत्मा, इस साकार कर्मेन्द्रियों के आधार से कर्म करा रही हूँ।** निराकारी स्थिति करावनहार स्थिति है। कर्मेन्द्रियां करनहार हैं, आत्मा करावनहार है। **तो निराकारी आत्म स्थिति से, निराकारी बाप स्वत: ही याद आता है। जैसे बाप करावनहार है, ऐसे मैं आत्मा भी करावनहार हूँ।** इसलिए कर्म के बन्धन में बंधेंगे नहीं, न्यारे रहेंगे क्योंकि कर्म के बन्धन में फंसने से ही समस्यायें आती हैं। सारे दिन में चेक करो - करावनहार आत्मा बन कर्म करा रही हूँ? अच्छा। अभी मुक्ति दिलाने की मशीनरी तीव्र करो।

<u>मनुष्य सृष्टि का बीजरूप</u>

73] निराकार परमपिता परमात्मा शिव, नई मनुष्य सृष्टि, प्रजापिता ब्रह्मा (लेखराज की आत्मा) द्वारा स्थापना करते हैं – तो निराकार शिव, जो निराकार आत्माओं का बीजरूप है, वह (साकारी) मनुष्य सृष्टि का (निराकारी) बीजरूप भी हो जाता है – और प्रजापिता ब्रह्मा मनुष्य सृष्टि का (साकारी) बीजरूप हो जाता है!

SM, Revised 02.07.2020
मैं सुप्रीम आत्मा हूँ। मेरी महिमा अलग है। हर एक की महिमा अपनी-अपनी है ना। गायन भी है ना - **परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। वह ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। वह सत है, चैतन्य है, आनन्द, सुख-शान्ति का सागर है।**

SM, Revised 25.06.2020
वृक्षपति, अथवा इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का जो बीजरूप है, चैतन्य (sentient) है, वही इस झाड़ के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं; और जो भी वृक्ष (के बीज) हैं, वह सब जड़ (insentient) होते हैं।

SM, Revised 20.12.2019 (Original 07.12.1968)
बाप ही ज्ञान का सागर है। वही कहते हैं, **मैं इस मनुष्य सृष्टि का चैतन्य बीज हूँ। मैं आदि, मध्य, अन्त को जानता हूँ। मैं सत हूँ, मैं चैतन्य बीजरूप हूँ, इस सृष्टि रूपी झाड़ की मेरे में नॉलेज है।**

SM, Revised 15.10.2019 (Original 11.11.1968)
बाप मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है; फिर वह सत है, चैतन्य है, नॉलेजफुल है, उनको इस सारे झाड़ की नॉलेज है। और कोई को भी इस झाड़ की नॉलेज है नहीं। **इनका बीज है बाप, जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है।**

SM, Revised 02.10.2019 (Original 26.10.1968)
बाप ही सब कुछ जानते हैं, 'जानी-जाननहार' अर्थात् नॉलेजफुल है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। उनसे ही हमको वर्सा मिलना है। बाप, नॉलेज में आप समान बनाते हैं।

SM, Revised 21.09.2019 (Original 20.09.1968)
इस झाड़ का बीजरूप ऊपर में है। झाड़ का बीज है बाप; फिर जैसा बीज वैसा फल अर्थात् पत्ते निकलते हैं। यह भी वन्डर है ना। ... इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ को कोई नहीं जानता, इसको कहा जाता है कल्प वृक्ष, इसका बस गीता में ही वर्णन है।

SM, Revised 19.09.2019 (Original 15.10.1968)
यह वैराइटी मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। बीजरूप है भगवान। वही रचना रचते हैं। पहले-पहले रचते हैं देवी-देवताओं को। फिर वृद्धि को पाते-पाते इतने धर्म हो जाते हैं। ... **पढ़ाने वाला एक शिवबाबा है। वह है ज्ञान का सागर, सुख का सागर।**

SM, Revised 02.09.2019 (Original 16.09.1968)
मनुष्य को देवता बनाने वाला है बाप। बाप अपना और रचना का भी परिचय देते हैं। **तुम जानते हो हम बीजरूप बाप के बीजरूप बच्चे हैं। जैसे बाप इस उल्टे वृक्ष को जानते हैं, वैसे हम भी जान गये हैं।** मनुष्य, मनुष्य को कभी यह समझा न सके। परन्तु तुमको बाप ने समझाया है।

SM, Revised 25.07.2019
शिवबाबा तो कोई शास्त्र पढ़ा हुआ नहीं है। यह रथ पढ़ा हुआ है। शिवबाबा को तो 'ज्ञान का सागर' कहा जाता है। **यह तुम समझते हो कि शिवबाबा कोई पुस्तक नहीं उठाता। मैं तो नॉलेजफुल हूँ, बीजरूप हूँ। यह सृष्टि रूपी झाड़ है, उसका रचयिता है बाप, बीज।** बाबा समझाते हैं, मेरा निवास स्थान मूलवतन में है। अभी मैं इस शरीर में विराजमान हूँ - **और कोई कह न सके कि मैं इस मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ। 'मैं परमपिता परमात्मा हूँ' - कोई कह नहीं सकेगा।**

SM, Revised 11.07.2019
अभी तुम बच्चे जानते हो कि इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का बीजरूप है बाप, और वह अकाल मूर्त्त है। अकाल मूर्त्त बाप के अकालमूर्त्त बच्चे। ... बाप है वृक्षपति। वृक्ष से पहले-पहले ब्राह्मण निकले। बाप कहते हैं, मैं वृक्षपति सत-चित-आनन्द स्वरूप हूँ।

SM, Revised 29.11.2018
परमपिता को कहा जाता है 'बीलव्ड मोस्ट गॉड फादर', 'ओशन ऑफ नॉलेज'। तो जरूर नॉलेज देते होंगे ना। सृष्टि का चैतन्य बीजरूप है। सुप्रीम सोल है, अर्थात् ऊंच से ऊंच भगवान् है।

SM, Revised 03.11.2018
शिवबाबा है ऊंच ते ऊंच भगवान्, निराकारी वतन में रहने वाला। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी। अच्छा, **मनुष्य सृष्टि कैसे रची? तो कहते हैं, ड्रामा अनुसार मैं ब्रह्मा के साधारण तन में प्रवेश कर, इनको प्रजापिता बनाता हूँ। मुझे प्रवेश ही इनमें करना है, जिसको ब्रह्मा नाम दिया है।**

SM, Revised 03.11.2018 (continued)
बाप समझाते हैं, तुम आत्मा बिन्दी समान हो। **मैं शिव भी बिन्दी समान हूँ। परन्तु मैं सुप्रीम, क्रियेटर, डायरेक्टर हूँ। ज्ञान सागर हूँ।** मेरे में सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान है। … **बाप समझाते हैं, मैं इस सृष्टि रूपी झाड़ का बीजरूप हूँ। ... मनुष्य सृष्टि झाड़ का बीज परमपिता परमात्मा है।**

SM, Revised 28.07.2018
पहले-पहले है ऊंच ते ऊंच परमपिता परमात्मा, जिसको मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का चैतन्य बीजरूप कहा जाता है। वह सत-चित-आनंद स्वरूप है। ... (सूक्ष्म वतन वासी) **ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को 'ज्ञान सागर', 'मनुष्य सृष्टि का बीजरूप' नहीं कहा जाता।**

SM, Revised 16.04.2018
पारलौकिक बाप एक ही है। उनको कहा जाता है रचता। बाप कहते हैं, मैं हूँ मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। मेरी महिमा भी करते हैं। सत-चित-आनंद स्वरूप।

SM, Revised 03.04.2018
झाड़ का एक ही बीज होता है। **तो मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का भी वह एक बीज है, जिससे फिर मनुष्य सृष्टि रची जाती है क्योंकि बाप हो गया ना। बाकी सब हुए उनके बच्चे।** भक्तों का भगवान बाप एक है। … वह पतित-पावन मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, सत्य है, चैतन्य है। … **परमपिता परमात्मा एक ही है। वह है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप।**

SM, Revised 23.02.2018
मैं हूँ निराकार परमपिता परमात्मा। मैं तुम सर्व आत्माओं का बाप, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ। मुझे ही वृक्षपति कहा जाता है। श्रीकृष्ण को वृक्षपति नहीं कहेंगे। **परमपिता परमात्मा ही मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, क्रियेटर है।**

SM, Revised 05.11.2016

वह परमात्मा, सर्व आत्माओं का बाप, बीजरूप है। वह है (निराकार) आत्माओं का बीजरूप, और यह प्रजापिता ब्रह्मा है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। वह निराकार बाप इसमें प्रवेश कर मनुष्यों को समझाते हैं, मनुष्य द्वारा। उनको मनुष्य सृष्टि का (साकारी) बीजरूप नहीं कहेंगे। **वह है (निराकार) आत्माओं का पिता, और यह ब्रह्मा है मनुष्य सृष्टि का प्रजापिता, जिस द्वारा बाप आकर ज्ञान देते हैं।**

79] <u>5 मुखी ब्रह्मा - 5 स्वरूप</u>

AV, Original 30.03.2000

बापदादा आज सभी बच्चों के पाँच स्वरूप देख रहे हैं - जानते हो पांच स्वरूप कौन से हैं? जानते हो ना? **5 मुखी ब्रह्मा का भी पूजन होता है। तो बापदादा सभी बच्चों के 5 स्वरूप देख रहे हैं।**

पहला - अनादि **ज्योति-बिन्दु स्वरूप**। याद है ना अपना स्वरूप? भूल तो नहीं जाते?

दूसरा है - आदि **देवता स्वरूप**। पहुँच गये देवता स्वरूप में?

तीसरा - मध्य में **पूज्य स्वरूप**, वह भी याद है? आप सबकी पूजा होती है, या भारतवासियों की होती है? आपकी पूजा होती है? कुमार सुनाओ - आपकी पूजा होती है? तो तीसरा है पूज्य स्वरूप।

चौथा है - संगमयुगी **ब्राह्मण स्वरूप**,

और **लास्ट** में है **फरिश्ता स्वरूप**।

तो 5 ही रूप याद आ गये? अच्छा एक सेकण्ड में यह 5 ही रूपों में अपने को अनुभव कर सकते हो?

AV, Original 17.10.2003

अनादि रूप में भी देखो - जब आप आत्मायें परमधाम में रहती, तो कितनी चमकती हुई आत्मायें दिखाई देती हो। उस चमक की रॉयल्टी, पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है। दिखाई देती है? और बाप के साथ-साथ - आत्मा रूप में भी रहते हो, समीप रहते हो। जैसे आकाश में कोई-कोई सितारे बहुत ज्यादा चमकने वाले होते हैं ना! ऐसे आप आत्मायें भी विशेष बाप के साथ - और विशेष चमकते हुए सितारे होते हो। परमधाम में भी आप बाप के समीप हो …

आदि (रूप) सतयुग में भी आप देव आत्माओं की पर्सनैलिटी, रॉयल्टी कितनी ऊंची है। सारे कल्प में चक्कर लगाओ - धर्म आत्मा हो गये, महात्मा हो गये, धर्म पितायें हो गये, नेतायें हो गये, अभिनेतायें हो गये - ऐसी पर्सनैलिटी कोई की है, जो आप देव आत्माओं की सतयुग में है? अपना देव स्वरूप सामने आ रहा है ना? आ रहा है - या पता नहीं हम बनेंगे या नहीं? पक्का है ना! अपना देव रूप सामने लाओ और देखो, पर्सनैलिटी सामने आ गई? कितनी रॉयल्टी है, प्रकृति भी पर्सनैलिटी वाली हो जाती है। पंछी, वृक्ष, फल, फूल सब पर्सनैलिटी वाले, रॉयल। …

अपना **पूज्य रूप** देखा है? आपकी पूजा होती है! डबल फारेनर्स पूज्य बनेंगे कि इन्डिया वाले बनेंगे? आप लोग देवियां, देवतायें बने हो? सूंढ वाला नहीं, पूंछ वाला नहीं। देवियां भी वह काली रूप नहीं - लेकिन देवताओं के मन्दिर में देखो, आपके पूज्य स्वरूप की कितनी रॉयल्टी है, कितनी पर्सनैलिटी है? मूर्ति होगी, 4 फुट, 5 फुट की - और मन्दिर कितना बड़ा बनाते हैं। यह रॉयल्टी और पर्सनैलिटी है। आजकल के चाहे प्राइम-मिनिस्टर हो, चाहे राजा हो - लेकिन धूप में बिचारे का बुत (statue) बनाके रख देंगे, क्या भी होता रहे। और आपके पूज्य स्वरूप की पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है। है ना बढ़िया! कुमारियां बैठी हैं ना! रॉयल्टी है ना आपकी? …

ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी कितनी बड़ी है! डायरेक्ट (direct) भगवान ने आपके ब्राह्मण जीवन में पर्सनैलिटी और रॉयल्टी भरी है। ब्राह्मण जीवन का चित्रकार कौन? स्वयं बाप। ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी, रॉयल्टी कौन सी है? प्युरिटी। प्युरिटी ही रॉयल्टी है। है ना! ब्राह्मण आत्मायें सभी जो भी बैठे हो - तो प्युरिटी की रॉयल्टी है ना! …

फरिश्ता रूप दिखाई दे। चाहे वह फरिश्ता नहीं बना है - लेकिन मेरी दृष्टि में फरिश्ता रूप और आत्मिक रूप ही हो - और कृति अर्थात् सम्पर्क सम्बन्ध में, कर्म में आना, उसमें सदा ही सर्व प्रति स्नेह देना, सुख देना। चाहे दूसरा स्नेह दे, नहीं दे, लेकिन मेरा कर्तव्य है स्नेह देकर स्नेही बनाना। सुख देना। स्लोगन है ना – 'ना दु:ख दो, ना दु:ख लो'। देना भी नहीं है, लेना भी नहीं है। देने वाले आपको कभी दु:ख भी दे दें, लेकिन आप उसको सुख की स्मृति से देखो। गिरे हुए को गिराया नहीं जाता है, गिरे हुए को सदा ऊंचा उठाया जाता है। वह परवश होके दु:ख दे रहा है। गिर गया ना! तो उसको गिराना नहीं है - और भी उस बिचारे को एक लात लगा लो, ऐसे नहीं। उसको स्नेह से ऊंचा उठाओ। उसमें भी फर्स्ट (first) 'चैरिटी बिगन्स एट होम'। पहले तो 'चैरिटी बिगन्स एट होम' ('charity begins at home') है ना - अपने सर्व साथी, सेवा के साथी, ब्राह्मण परिवार के साथी हर एक को ऊंचा उठाओ।

90] **फरूखाबाद**

SM, Original 11.04.1968 (Pg 3)
फरूखाबाद तरफ मालिक को मानते हैं। घर का मालिक तो बाप ही होता है। बच्चों को, बच्चे ही कहेंगे। जब वह भी बड़े होते हैं, बच्चे पैदा करते हैं, तब फिर मालिक बनते हैं। यह सभी राज़ समझने की हैं।

SM, Revised 04.09.2019 (Original 26.09.1968)
यह (ब्रह्मा बाबा) ऐसे थोड़ेही कहते हैं कि मैं भगवान हूँ। तुम बच्चे भी जानते हो पढ़ाने वाला इनकारपोरियल शिवबाबा है। उनको अपना शरीर नहीं है। **कहते हैं, मैं इस रथ का लोन लेता हूँ। भागीरथ भी क्यों कहते हैं? क्योंकि बहुत-बहुत भाग्यशाली रथ है। यही फिर विश्व का मालिक बनते हैं, तो भागीरथ ठहरा ना।**

SM, Revised 01.10.2019 (Original 24.10.1968)
भगवान एक ही रथ लेते हैं, जिसको भाग्यशाली रथ कहा जाता है, जिसमें बाप की प्रवेशता होती है, पदमापदम भाग्यशाली बनाने। बिल्कुल नजदीक का दाना है। ब्रह्मा सो विष्णु बनते हैं। शिव-बाबा इनको भी बनाते हैं, तुमको भी इन द्वारा विश्व का मालिक बनाते हैं।

SM, Revised 27.12.2019 (Original 31.12.1968)
सतयुग में है देवताओं की सृष्टि, तो जरूर मनुष्यों की सृष्टि कलियुग में होगी। अब मनुष्य से देवता बनना है, तो जरूर पुरूषोत्तम संगमयुग भी होगा। वह हैं देवतायें, यह हैं मनुष्य। देवतायें हैं समझदार। बाप ने ही ऐसा समझदार बनाया है। **बाप जो विश्व का मालिक है, भल मालिक बनता नहीं है, परन्तु गाया तो जाता है ना। बेहद का बाप, बेहद का सुख देने वाला है।**

SM, Revised 13.02.2019
बाप का फ़र्ज है, बच्चों को ऊंचा उठाना। बाप सबको विश्व का मालिक बनाते हैं। बाप कहते हैं, मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूँ।

SM, Revised 29.11.2018
बाप ही आकर बेहद का वर्सा देते हैं, अर्थात् विश्व का मालिक बनाते हैं। **कहते हैं, मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूँ। अगर मालिक बनूँ तो फिर माया से हार भी खानी पड़े।**

SM, Revised 03.09.2018
तो बिगड़ी को बनाने वाला बाप है। उनको ही वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी कहा जाता है। **वही वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी राज्य स्थापन करते हैं। खुद तो निराकार है, उनको महाराजा, या विश्व का मालिक, विश्व पर राज्य करने वाला नहीं कहेंगे। वह तो करनकरावनहार है।** देवी-देवताओं की राजधानी स्थापन कराते हैं। खुद राजाई करते नहीं हैं।

SM, Revised 31.08.2018
तुम ब्रह्माण्ड के मालिक हो, तो फिर विश्व के भी मालिक हो। मैं तो सिर्फ ब्रह्माण्ड का ही मालिक हूँ। मुझे इस पुराने तन में आना पड़ता है, जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं।

SM, Revised 11.01.2018
वो लोग कहते हैं, परमात्मा विश्व का मालिक है। मनुष्य उस मालिक को याद करते हैं, परन्तु वास्तव में विश्व का अथवा सृष्टि का मालिक तो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। निराकार शिवबाबा तो विश्व का मालिक बनता नहीं। तो उन्हों से पूछना पड़े कि वह मालिक निराकार है, या साकार? निराकार तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके। वह है ब्रह्माण्ड का मालिक। **वही आकर पतित दुनिया को**

पावन बनाते हैं। खुद पावन दुनिया का मालिक नहीं बनते। उनका मालिक तो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं, और बनाने वाला है बाप। यह बड़ी गुह्य बातें हैं, समझने की।

SM, Revised 05.01.2018
मनुष्य कहते हैं कि विश्व का मालिक तो शिवबाबा है। परन्तु नहीं, विश्व का मालिक मनुष्य ही बनते हैं। बाप बैठ, बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं।

SM, Revised 14.06.2017
बाप कहते हैं - मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूँ। तुमको बनाता हूँ। फिर रावण आकर तुमसे राज्य छीनते हैं। अभी हैं सब तमोप्रधान, पत्थरबुद्धि। संगमयुग में तुम पारसबुद्धि बनते हो। बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो, बुद्धियोग ऊपर में लटकाओ। जहाँ जाना है, उनको ही याद करना है। एक बाप, दूसरा न कोई। वही सच्चा पातशाह है, सच सुनाने वाला। तो कोई भी चित्र का सिमरण नहीं करना है। यह जो शिव का चित्र है, उनका भी ध्यान नहीं करना है, क्योंकि शिव तो ऐसा है नहीं।

SM, Revised 12.06.2017
तुम ब्रह्माण्ड के मालिक थे। बाप भी ब्रह्माण्ड का मालिक है ना! जैसे आत्मा निराकार है, वैसे परमात्मा भी निराकार है। नाम ही है परमपिता परमात्मा अर्थात् परे ते परे रहने वाली आत्मा। परम आत्मा का अर्थ है परमात्मा।

SM, Revised 28.06.2002 / 10.06.2017
कई लोग परमात्मा को मालिक कहकर याद करते हैं। कहते हैं उस मालिक का नाम नहीं है। अच्छा, भला वह मालिक कहाँ है? क्या वह विश्व का, सारी सृष्टि का मालिक है? **परमपिता परमात्मा तो सृष्टि का मालिक नहीं बनता है, सृष्टि का मालिक तो देवी-देवता बनते हैं। परमपिता परमात्मा तो ब्रह्माण्ड का मालिक है।**

SM, Revised 09.06.2017
यह तुम जानते हो परमपिता परमात्मा त्रिकालदर्शी हैं। आदि-मध्य-अन्त तीनों कालों को और त्रिलोक को जानते हैं। लक्ष्मी-नारायण को वैकुण्ठनाथ कह सकते हैं - त्रिलोकीनाथ नहीं। वे हेविन वा स्वर्ग के मालिक हैं। **बाप को पैराडाइज का मालिक नहीं कह सकते। तो यह भी समझने की बातें हैं। परमात्मा जैसा, कोई मनुष्य नहीं हो सकता।**

91] निराकार शिव बाप है सदैव पूज्य

SM, Original 16.12.1968 (Page 2)
तुम ही पूज्य देवी-देवता थे, फिर तुम ही पुजारी बने हो। 'आपेही पूज्य, आपेही पुजारी' - तुम ही पूज्य से फिर पुजारी बन जाते हो। **बाप कोई पुजारी नहीं बनते हैं; परन्तु पुजारी दुनिया में तो आते हैं ना। बाप तो एवर पूज्य है। वह कब पुजारी होता नहीं। उनका धंघा है, तुमको पुजारी से पूज्य बनाना। रावण का काम है, तुमको पुजारी बनाना।** यह दुनिया में किसको भी पता नहीं है।

SM, Revised 08.10.2020
अभी तुम पुजारी हो फिर पूज्य बनते हो। तुम्हारी आत्मा भी पूज्य, तो शरीर भी पूज्य बनता है। तुम्हारी आत्मा की भी पूजा होती है, फिर देवता बनते हो, तो भी पूजा होती है। **बाप तो है ही निराकार। वह सदैव पूज्य है। वह कभी पुजारी नहीं बनते हैं। तुम बच्चों के लिए कहा जाता है, 'आपेही पूज्य, आपेही पुजारी'। बाप तो एवर पूज्य है, यहाँ आकर बाप सच्ची सेवा करते हैं। सबको सद्गति देते हैं।** बाप कहते हैं - अब मामेकम् याद करो। दूसरे कोई देहधारी को याद नहीं करना है।

SM, Revised 10.08.2020
बुद्धि में आया है - पहले-पहले हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के पूज्य थे, फिर हम ही पुजारी बने हैं। **'आपेही पूज्य, आपेही पुजारी' - यह भी गायन है। मनुष्य फिर भगवान के लिए समझते हैं कि 'आपेही पूज्य, आपेही पुजारी' बनते हैं। आपके ही यह सब रूप हैं। अनेक मत-मतान्तर हैं ना।**

SM, Revised 15.05.2020
बाप समझाते हैं - सब पुजारी हैं। पूज्य होते ही हैं सतयुग में। पुजारी होते हैं कलियुग में। **मनुष्य फिर समझते, 'भगवान ही पूज्य, भगवान ही पुजारी बनते हैं'। 'आप ही भगवान हो, आप ही यह सब खेल करते हो। तुम भी भगवान, हम भी भगवान'। कुछ भी समझते नहीं हैं, यह है ही रावण राज्य।**

SM, Revised 13.04.2020
अपने को आत्मा समझ, और बाप को याद करना है। वह है सबसे बड़ा बाप। बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। **'हम सो पूज्य, हम सो पुजारी', यह मंत्र है बहुत अच्छा। उन्होंने फिर 'आत्मा सो परमात्मा' कह दिया है; जो कुछ बोलते हैं, बिल्कुल रांग।**

SM, Revised 14.07.2018
गाते भी हैं – 'आपेही पूज्य, आपेही पुजारी'। परन्तु वह समझते हैं कि परमात्मा बाप खुद ही पूज्य-पुजारी बनते हैं। यह तो रांग है। बाप आकर बच्चों को ऊंच महिमा लायक बनाते हैं।

SM, Revised 29.06.2018
तुम ब्राह्मण ही पूज्य थे, फिर पुजारी बने हो। ... सतयुग-त्रेता में पुजारीपन नहीं था। आधा कल्प है ज्ञान, आधा कल्प है भक्ति। **गाया भी जाता है, 'आप-ही पूज्य, और आप-ही पुजारी'। फिर कहते हैं, सब भगवान हैं। समझते हैं, 'भगवान ही पूज्य था, भगवान ही पुजारी बनता है' - इसको उल्टी गंगा कहा जाता है।**

SM, Revised 18.04.2018
परमात्मा को 'आपेही पूज्य, आपेही पुजारी' नहीं कह सकते। वह तो है ही परमपूज्य, सबको पूज्य बनाने वाला। उनको कहा जाता है, 'परम पूज्य परमपिता परमात्मा'। ...
निराकार गॉड को ही सब 'गॉड फादर' कहते हैं। है वह भी आत्मा, परन्तु परम है, इसलिए उनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है।

SM, Revised 23.11.2017

ऐसे भी नहीं परमात्मा बैठ अपनी पूजा करेंगे। परमात्मा सदैव पूज्य है, वह कभी पुजारी नहीं बनता। ऊपर से जो भी आते हैं, वह पूज्य से पुजारी बनते हैं।

SM, Revised 14.12.2017

जगन्नाथपुरी के मन्दिर में बाहर देवताओं के गन्दे चित्र बनाये हैं। ताज तख्त आदि वही है, सिर्फ चित्र विकारी दिखाते हैं। जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो फिर धरती की उथल-पाथल भी होती है। सोने-हीरे के महल सब नीचे चले जाते हैं। पूजा के लिए कितना भारी मन्दिर बनाया है, भक्ति मार्ग में। 'आपे ही पूज्य, आपेही पुजारी'। **बाप समझाते हैं - मैं तो पुजारी नहीं बनता हूँ। अगर मैं बनूँ तो मुझे फिर पूज्य कौन बनायेगा? मैं न पतित बनता हूँ, न बनाता हूँ। पतित तुमको रावण बनाते हैं, जिसको जलाते आते हैं।**

SM, Revised 09.06.2017

तुम्हारी बुद्धि में सारी नॉलेज आ गई है। तुम ही त्रिकालदर्शी बनते हो। तीनों लोकों की भी नॉलेज मिली है। **तुम कहेंगे हम पूज्य वैकुण्ठ नाथ थे, अब पुजारी नर्क के नाथ बने हैं। 'हम सो' का यथार्थ अर्थ न जानने के कारण, 'हम आत्मा सो परमात्मा' कह देते हैं। कितना फर्क कर दिया है।**

SM, Revised 10.09.2016

बाप तो कभी पुजारी नहीं बनते। अच्छा, फिर सेकेण्ड नम्बर में कहेंगे शंकर भी एवर पूज्य है। वह भी पुजारी नहीं बनते, उनका पार्ट ही यहाँ नहीं है। इस स्टेज पर पार्ट है ब्रह्मा और विष्णु का। ब्रह्मा और विष्णु का क्या-क्या पार्ट है, यह दुनिया में किसको भी पता नहीं है।

SM, Revised 09.09.2016

बाप कहते हैं - मैं तो सदैव पूज्य हूँ। तुमको आकर पुजारी से पूज्य बनाता हूँ। कहते हैं, हे राम, आकर हमको पावन बनाओ। सब भगत पुकारते हैं। आत्मा पुकारती है ना – 'हे पतित-पावन'। अभी तुम समझते हो कि गीता कोई कृष्ण ने नहीं सुनाई है, पावन बनाने वाला एक ही परमपिता परमात्मा है - एक ही राम।

92] <u>निराकार शिव, ब्रह्मा (लेखराज) के साधारण तन में आते हैं</u>

SM, Revised 10.10.2020
बाप खुद कहते हैं - मैं कैसे साधारण पतित तन में, बहुत जन्मों के अन्त में आता हूँ। इनके (ब्रह्मा के) ही बहुत जन्म हैं। यह अब मेरा बना है, तो इस रथ द्वारा तुमको समझाता हूँ। यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। **भागीरथ यह है, इनके भी वानप्रस्थ अवस्था में मैं आता हूँ।**

SM, Revised 11.09.2020
गाया हुआ है, 'भाग्यशाली रथ पर आते हैं'। बाप खुद कहते हैं - मैं इस साधारण रथ में प्रवेश करता हूँ। यह (ब्रह्मा बाबा) अपने जन्मों को नहीं जानते हैं, तुम अभी जानते हो। **इनके बहुत जन्मों के अन्त में जब वानप्रस्थ अवस्था होती है, तब मैं प्रवेश करता हूँ।**

SM, Revised 26.08.2020
अब भगवान किसको कहा जाए? कृष्ण तो शरीरधारी है। **भगवान तो निराकार परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। खुद कहते हैं - मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ।**

SM, Revised 05.08.2020
पतित-पावन वह परमपिता परमात्मा ही है। कृष्ण को पतित-पावन नहीं कहेंगे; उनका तो जन्म होता है; उनके तो माँ-बाप भी दिखाते हैं। **एक शिव का ही अलौकिक जन्म है। वह खुद ही अपना परिचय देते हैं कि मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ।**

SM, Revised 29.07.2020
ऐसे नहीं शिवबाबा आकर फिर कृष्ण, वा नारायण बनते हैं, 84 जन्मों में आते हैं – नहीं! तुम्हारी बुद्धि सारी यह बातें समझाने में लगी रहनी चाहिए। मुख्य है ही गीता। भगवानुवाच है, तो जरूर भगवान का मुख चाहिए ना। **भगवान तो है निराकार। आत्मा मुख बिगर बोले कैसे? तब कहते हैं - मैं साधारण तन का आधार लेता हूँ। जो पहले लक्ष्मी-नारायण बनते हैं, वही 84 जन्म लेते-लेते पिछाड़ी में आते हैं, तो फिर उनके ही तन में आते हैं। कृष्ण के बहुत जन्मों के अन्त में आते हैं।**

SM, Revised 22.07.2020
बाप कहते हैं - मैं साधारण तन में आता हूँ। प्रजापिता ब्रह्मा भी जरूर यहाँ चाहिए। उन बिगर काम कैसे चल सकता? और जरूर बुजुर्ग ही चाहिए क्योंकि एडाप्टेड हैं ना। तो बुजुर्ग चाहिए। कृष्ण तो 'बच्चे-बच्चे' बोल न सके; बुजुर्ग शोभता है। बच्चे को थोड़ेही कोई 'बाबा' कहेंगे।

SM, Revised 26.05.2020
तुम जानते हो हम सब उस बाप के बच्चे हैं, उनको सभी 'गॉड फादर' कहते हैं। **अब फादर कहते हैं - मैं इस साधारण तन में तुमको पढ़ाने आता हूँ।** तुम जानते हो बाबा इनमें आये हैं, हम उनके बने हैं। बाबा ही आकर पतित से पावन होने का रास्ता बताते हैं।

SM, Revised 04.05.2020
यह खांसी आदि होती है, यह कर्मभोग है - यह पुरानी जुत्ती है। नई तो यहाँ मिलनी नहीं है। **मैं पुनर्जन्म तो लेता नहीं हूँ। न कोई गर्भ में जाता हूँ। मैं तो साधारण तन में प्रवेश करता हूँ।**

SM, Revised 04.04.2020
बाप तो है निराकार। वह अपना तख्त कहाँ से लाये। **बाप कहते हैं - मेरा भी यह तख्त है। मैं आकर इस तख्त का लोन लेता हूँ। ब्रह्मा के साधारण बूढ़े तन में अकाल तख्त पर आकर बैठता हूँ।**

SM, Revised 06.08.2019
गीता भी शिवबाबा ने ही गाई थी, उसने ही कहा है, मामेकम् याद करो। मैं इस साधारण तन में आता हूँ। कृष्ण साधारण थोड़ेही है। वह तो जन्म लेते हैं, तो जैसे बिजली चमक जाती है। बहुत प्रभाव पड़ता है, इसलिए श्रीकृष्ण का अब तक भी गायन करते हैं।

SM, Revised 09.02.2019
शिवबाबा कहते हैं, मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। यह साधारण तन है। झाड़ के अन्त में खड़ा है। पतित दुनिया में खड़ा है, और फिर नीचे तपस्या कर रहे हैं। इनको भी तपस्या शिवबाबा सिखला रहे हैं। राजयोग शिवबाबा सिखाते हैं। **नीचे आदि देव, ऊपर में आदि नाथ।**

SM, Revised 28.01.2019
देह-धारी की महिमा नहीं गाई जाती है। **विदेही ऊंचे ते ऊंचा भगवान है, वह कभी अपनी देह नहीं लेते। खुद ने बताया है कि मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ।** यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं।

SM, Revised 03.11.2018
शिवबाबा है ऊंच ते ऊंच भगवान्, निराकारी वतन में रहने वाला। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी। अच्छा, मनुष्य सृष्टि कैसे रची? तो कहते हैं, **ड्रामा अनुसार मैं ब्रह्मा के साधारण तन में प्रवेश कर, इनको प्रजापिता बनाता हूँ। मुझे प्रवेश ही इनमें करना है, जिसको ब्रह्मा नाम दिया है।** एडाप्ट करने बाद नाम बदल जाता है।

SM, Revised 27.06.2018
पहले-पहले ब्रह्मा को कैसे रचते हैं? वह भी बताते हैं। साधारण तन में, वानप्रस्थ अवस्था में, प्रवेश करता हूँ। तो यह आदि देव हुआ ना। प्रजापिता ब्रह्मा, जिसको महावीर कहते हैं - वह किसका बच्चा है? बाप बैठ समझाते हैं कि मैं इस ब्रह्मा तन में प्रवेश करता हूँ। मेरा नाम है शिव।

SM, Revised 26.06.2018
परमात्मा कभी पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। तुम तो सदा पुनर्जन्म लेते हो। मेरा जन्म दिव्य अलौकिक है। मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। नहीं तो ब्राह्मण कहाँ से आयें? प्रजापिता ब्रह्मा भी बुजुर्ग चाहिए। छोटा बच्चा तो नहीं चाहिए। कृष्ण तो छोटा बच्चा है।

SM, Revised 08.03.2018
अभी तुम बच्चे जानते हो परमपिता परमात्मा को प्रजापिता ब्रह्मा के तन में ही आना है। प्रजापिता तो जरूर यहाँ ही होना चाहिए ना, इसलिए उनका नाम ब्रह्मा रख, कहते हैं - **मैं इस साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। यह 84 जन्म भोग अभी अन्तिम जन्म में है, और वानप्रस्थ अवस्था में पूरा अनुभवी रथ है।**

SM, Revised 28.02.2018
अब बहुत करके गरीब, साधारण ही ज्ञान लेते हैं। **बाप भी साधारण तन में आता है, गरीब में नहीं। अगर यह भी गरीब होता, तो कुछ कर नहीं सकता। गरीब इतनों की सम्भाल कैसे करते? तो युक्ति देखो कैसी रखी है! साधारण ही हो जो बलि भी चढ़े, और इतने सबकी परवरिश भी होती रहे।**

SM, Revised 21.02.2018
परमात्मा कहते हैं, मैं जिस साधारण तन में आता हूँ, उसका नाम ब्रह्मा पड़ता है। वह सूक्ष्म ब्रह्मा है, तो दो ब्रह्मा हो गये। **इनका ब्रह्मा नाम रखा गया है क्योंकि कहते हैं साधारण तन में आता हूँ। ब्रह्मा के मुख कंवल से ब्राह्मण रचता हूँ। आदि देव से ह्युमिनिटी रची गई, यह हुआ ह्युमिनिटी का पहला बाबा।**

SM, Revised 27.12.2017
यह है भगवान का रथ। भागीरथ कहते हैं। पानी की बात नहीं, यह है सारी ज्ञान की बात। **बाप समझाते हैं, मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ, इनका नाम ब्रह्मा रखा है।** इनको एडाप्ट नहीं करता हूँ। इनमें प्रवेश करता हूँ फिर तुमको एडाप्ट करता हूँ।

SM, Revised 06.12.2017
एक परमपिता परमात्मा, निराकार को कहते हैं। अब बाप कहते हैं, देखो, मैं निराकार तुमको कैसे पढ़ाता हूँ। बैल पर कोई सवारी थोड़ेही होती है! हमारी सवारी बैल पर क्यों दिखाई है? **मैं तो साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करके आता हूँ। इनके 84 जन्मों की कहानी बैठ तुमको सुनाता हूँ। तुम भी ब्रह्मा मुख वंशावली आकर बने हो। इनका नाम है भागीरथ अर्थात् भाग्यशाली रथ क्योंकि पहले-पहले यह सुनते हैं, और यही सौभाग्यशाली हैं।**

SM, Revised 14.09.2017
बाप कहते हैं - न मैं मनुष्य हूँ, न मैं देवता हूँ। मैं तो ऊंच ते ऊंच निराकार परमात्मा हूँ। मैं कल्प-कल्प इस साधारण तन में पढ़ाने आता हूँ।

SM, Revised 19.08.2017
यह भी बहुत शास्त्र पढ़ा हुआ है। इनको भी बाप कहते हैं, तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। मैं तुम्हारे बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में प्रवेश करता हूँ। **'कृष्ण' तो है ही सतयुग का पहला जन्म। स्वयंवर के बाद फिर लक्ष्मी-नारायण बन जाते हैं। तो जो श्री नारायण था, वह बहुत जन्मों के अन्त में अब साधारण है। फिर जरूर उनके ही तन में आना पड़े।**

SM, Revised 05.08.2017
बाप कहते हैं, मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुग पर साधारण वृद्ध तन में प्रवेश करता हूँ जिसका नाम फिर ब्रह्मा रखता हूँ। जो फिर ज्ञान को धारण करके अव्यक्त सम्पूर्ण ब्रह्मा बनते हैं। है वही, दूसरी बात नहीं है।

93] **‘गांवड़े का छोरा’**

SM, Revised 29.08.2019

(ब्रह्मा) बाबा अनुभवी है ना। शरीर भी पुराना अनुभवी लिया है। इन जैसा अनुभवी कोई होगा नहीं। बड़े-बड़े वाइसराय, किंग्स आदि से भी मुलाकात करने का अनुभव था। जवार, बाजरा भी बेचते थे। बस 4-6 आना कमाया तो खुश हो जाते थे, बचपन में। अब तो देखो कहाँ चले गये। **‘गांवड़े का छोरा’, फिर क्या बनते हैं! बाप भी कहते हैं, मैं साधारण तन में आता हूँ। यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। कैसे 84 जन्म ले, पिछाड़ी में छोरा बना, यह बाप बैठ समझाते हैं।**

SM, Revised 12.08.2019

यह (ब्रह्मा बाबा) कोई ईश्वर थोड़ेही है। यह (ब्रह्मा बाबा) तो बहुत जन्मों के अन्त में है। **मैं प्रवेश ही उनमें करता हूँ, जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं - ‘गांवड़े का छोरा’ था, फिर ‘श्याम-सुन्दर’ बनते हैं। यह (ब्रह्मा बाबा) तो पूरा ‘गांवड़े का छोरा’ था। फिर जब कुछ साधारण बना, तो (शिव)बाबा ने प्रवेश किया क्योंकि इतनी भट्ठी बननी थी।** इन्हों को खिलायेंगे कौन? तो जरूर साधारण भी चाहिए ना। यह सब समझने की बातें हैं। **बाप खुद कहते हैं, मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश करता हूँ; जो सबसे पतित बना है, फिर पावन भी वही बनेंगे। 84 जन्म इसने (ब्रह्मा बाबा ने) लिए हैं, ततत्वम्।** एक तो नहीं, बहुत हैं ना। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनने वाले ही यहाँ आते हैं, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। बाकी ठहर नहीं सकेंगे। देरी से आने वाले ज्ञान भी थोड़ा सुनेंगे। फिर देरी से ही आयेंगे।

SM, Revised 21.06.2019

बाप ने झाड़ का राज़ भी बताया है। बाप के सिवाए तो कोई सिखला न सके। तुमको कहेंगे, यह चित्र आदि कैसे बनायें? किसने सिखाया? बोलो, ‘बाबा ने हमें ध्यान में दिखाया, फिर हम यहाँ बनाते हैं’। फिर उनको बाप ही, इस रथ में आकर करेक्ट करते हैं कि ऐसे-ऐसे बनाओ। खुद ही करेक्ट करते हैं। **कृष्ण को ‘श्याम-सुन्दर’ कहते हैं, परन्तु मनुष्य तो समझ नहीं सकते कि क्यों कहा जाता है? यह वैकुण्ठ का मालिक था तो गोरा था, फिर ‘गांवड़े का छोरा’ सांवरा बना, इसलिए उनको ही ‘श्याम-सुन्दर’ कहते हैं। यही पहले आते हैं। ततत्वम्।**

SM, Revised 10.07.2018

साधारण बच्चों को देख बाबा भी खुश होते हैं। कृष्ण को ‘गांवड़े का छोरा’ कहते हैं ना। कृष्ण तो ‘गांवड़े का छोरा’ बन न सके। वह तो स्वर्ग का मालिक है। इनकी (ब्रह्मा बाबा की) और कृष्ण की बातें मिक्स कर दी हैं। **गांवड़े का पूरा अनुभव इनको (ब्रह्मा को) है। तो शिवबाबा वा कृष्ण ‘गांवड़े का छोरा’ बन न सके। हाँ, यह (दादा) छोटेपन में था। ‘पला ही गांवड़े में हूँ’। तो इस साधारण तन में, फिर बाप ने आकर प्रवेश किया है।**

SM, Revised 06.07.2017

(ब्रह्मा) बाबा तो अनुभवी है। (शिव) बाबा ने रथ भी अनुभवी लिया है। ‘गांवड़े का छोरा’ कहते हैं। कृष्ण तो विश्व का मालिक था। उनको थोड़ेही ‘गांवड़े का छोरा’ कहेंगे। वह तो गोरा था, वैकुण्ठ का मालिक था। जब सांवरा बनता है, तब गांव में रहता है। तो कृष्ण ही अन्तिम जन्म में गांव का छोरा कैसे बना है, यह तुम जानते हो। (ब्रह्मा) बाबा खुद भी वन्डर खाते हैं, हम क्या थे। अभी बाबा को मालूम पड़ा है श्रीमत द्वारा - तुमको भी मालूम पड़ा है। वन्डर है ना। कितना बड़ा मालिक, और फिर कितना नीचे आ जाते हैं। काम चिता पर चढ़ने के बाद, फिर गिरते आये हैं। **अभी तुम समझते हो कि कृष्ण को ‘गांवड़े का छोरा’ क्यों कहते हैं। खुद बाबा बतलाते हैं, पहले क्या थे, अब क्या बने हैं, ततत्वम्।** अब तुम समझते हो कहाँ की बात कहाँ ले गये हैं। ‘श्याम-सुन्दर’ का अर्थ भी अब समझा है। हम भी ऐसे थे। हमने भी 84 जन्मों का चक्र लगाया है।

94] कृष्ण और राधे, दोनों अलग-अलग राजधानी के हैं

SM, Revised 13.10.2020

भारतवासियों को यह पता नहीं है कि राधे-कृष्ण आपस में क्या लगते थे। दोनों ही अलग-अलग राजाई के थे। फिर स्वयंवर बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। यह सब बातें बाप ही आकर समझाते हैं। अब तुम पढ़ते ही हो स्वर्ग का प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने के लिए। **प्रिन्स-प्रिन्सेज का जब स्वयंवर होता है, तब फिर नाम बदलता है।**

SM, Revised 23.08.2019

'राधे-कृष्ण' का किसको भी पता नहीं है। वह फिर कहाँ चले जाते हैं? 'राधे-कृष्ण' ही स्वयंवर के बाद फिर 'लक्ष्मी-नारायण' बनते हैं। दोनों अलग-अलग महाराजाओं के बच्चे हैं।

SM, Revised 21.08.2019

विष्णु के दो रूप यह लक्ष्मी-नारायण हैं। छोटेपन में राधे-कृष्ण हैं। यह कोई भाई-बहन नहीं, अलग-अलग राजाओं के बच्चे थे। वह महाराजकुमार, वह महाराजकुमारी, जिनको स्वयंवर के बाद 'लक्ष्मी-नारायण' कहा जाता है।

SM, Revised 09.08.2019

स्वर्ग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। **अगर राधे-कृष्ण का राज्य कहते हैं, तो यह भूल करते हैं। राधे-कृष्ण का राज्य तो होता नहीं क्योंकि दोनों अलग-अलग राजाई के प्रिन्स-प्रिन्सेज थे, राजाई के मालिक तो फिर स्वयंवर के बाद बनेंगे।**

SM, Revised 06.11.2018

अब यह तो किसको पता नहीं, राधे और कृष्ण अलग-अलग थे। वह एक राजाई का प्रिन्स था, वह दूसरी राजाई की प्रिन्सेज थी। यह अभी तुम जानते हो। जो अच्छे-अच्छे बच्चे हैं, उन्हों की बुद्धि में अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स धारण रहती हैं।

SM, Revised 30.10.2018

मनुष्यों को तो यह पता नहीं है कि लक्ष्मी-नारायण और राधे-कृष्ण का क्या कनेक्शन है? **वह राजकुमारी, वह राजकुमार, अलग-अलग राज्य के हैं। ऐसे नहीं कि दोनों ही आपस में भाई-बहिन हैं। वह अलग अपनी राजधानी में थी, कृष्ण अपनी राजधानी का राजकुमार था। उन्हों का स्वयंवर होता है, तो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं।**

SM, Revised 20.03.2018

कृष्ण तो था स्वर्ग का नम्बरवन प्रिन्स। इतनी ऊंच प्रालब्ध किसने प्राप्त कराई? **ऊंच ते ऊंच प्रालब्ध है, राधे कृष्ण अथवा लक्ष्मी-नारायण की। यह बात कोई भी समझ नहीं सकते हैं। राधे कृष्ण स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं।** उन्हों को यह ऊंच पद किसने दिया? कृष्ण कौन था, नारायण कौन था? **यह बातें तुम ही जानो।**

SM, Revised 01.02.2018

तुम जानते हो कृष्ण और राधे दोनों अलग-अलग राजाई के थे। प्रिन्स-प्रिन्सेज थे। पीछे स्वयंवर बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं, तो फिर उन्हों की डिनायस्टी गाई जाती है। संवत भी उनसे (लक्ष्मी-नारायण से) कहा जायेगा।

SM, Revised 27.09.2017

जैसे सतयुग में ऊंच ते ऊंच डिनायस्टी है लक्ष्मी-नारायण की। **राधे-कृष्ण प्रिन्स-प्रिन्सेज स्वयंवर बाद लक्ष्मी-नारायण बने हैं। लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी कहेंगे। राधे-कृष्ण की डिनायस्टी नहीं कहेंगे। राजाओं का नाम लिया जाता है।**

SM, Revised 30.08.2017
कृष्ण एक राजधानी का, राधे दूसरे राजधानी की। फिर उनकी सगाई हो जाती है। स्वयंवर के बाद फिर नाम बदल जाता है। विष्णु के दो रूप, लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। दीपमाला पर 'महालक्ष्मी' को बुलाते हैं ना। वह है युगल (लक्ष्मी-नारायण)।

SM, Revised 14.08.2017
लक्ष्मी-नारायण को महाराजा-महारानी कहा जाता है। बचपन में वह महाराजकुमार श्रीकृष्ण और महाराजकुमारी राधे थी। ...
राधे और कृष्ण तो दोनों अलग-अलग घर के हैं। ...
तुम अब समझते हो कृष्ण का जन्म सतयुग आदि में हुआ था। राधे का भी सतयुग आदि में कहेंगे। **करके 2-4 वर्ष का अन्तर होगा।**

SM, Revised 30.05.2017
मनुष्यों को यह मालूम नहीं है - राधे-कृष्ण ही लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। कोई भी इस बात को नहीं जानते हैं। **अब तुम जानते हो कि राधे कृष्ण अलग-अलग राजधानी के थे, फिर स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बने।**

SM, Revised 11.03.2017
तुम यह पढ़ाई पढ़कर इतने ऊंचे बने हो। **राधे-कृष्ण अलग-अलग राजधानी के थे। स्वयंवर के बाद नाम लक्ष्मी-नारायण पड़ा। लक्ष्मी-नारायण का कोई बचपन का चित्र नहीं दिखाते हैं।**

SM, Revised 07.02.2017
ऐसे नहीं राधे-कृष्ण राज्य करते हैं – नहीं! **राधे दूसरी राजधानी की थी, कृष्ण दूसरी राजधानी के थे। दोनों का फिर स्वयंवर हुआ। स्वयंवर के बाद फिर यही लक्ष्मी-नारायण बनते हैं, फिर इस परिस्तान में, जमुना के कण्ठे पर राज्य करते हैं।**

SM, Revised 26.11.2016
राधे-कृष्ण अलग-अलग राजाई के थे। जो अच्छे बच्चे हैं, उनकी बुद्धि में बहुत अच्छी प्वाइंट्स की धारणा रहती है।

SM, Revised 24.10.2016
मनुष्य तो यह भी नहीं जानते कि राधे कृष्ण का आपस में क्या सम्बन्ध है। **दोनों अलग-अलग राजधानी के थे, फिर स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बनें।**

SM, Revised 30.09.2016
राधे-कृष्ण तो अलग-अलग राजाई के बच्चे हैं। उन्हों की आपस में सगाई होती है, शादी के बाद नाम बदलता है, इसलिए चित्र में भी लक्ष्मी-नारायण के नीचे राधे-कृष्ण को दिखाया है।

SM, Revised 07.07.2016
बाप समझाते हैं – ***यह लक्ष्मी-नारायण ही अन्त में आकर ब्रह्मा सरस्वती, जगत-अम्बा, जगत-पिता बनते हैं, जो दोनों फिर विष्णु अर्थात् लक्ष्मी-नारायण बनते हैं।*** ...
राधे-कृष्ण का ही स्वयंवर के बाद नाम लक्ष्मी-नारायण पड़ता है। यह भी भारतवासी नहीं जानते हैं। कितना अज्ञान अन्धियारा है।

SM, Revised 02.02.2016
कृष्ण और राधे की आयु में 2-3 वर्ष का फ़र्क होगा। सतयुग में जरूर पहले कृष्ण ने जन्म लिया होगा, फिर राधे ने। परन्तु सतयुग कब था, यह किसको पता नहीं है। **तुमको भी समझने में बहुत वर्ष लगे हैं, तो दो दिन में कोई कहाँ तक समझेंगे।**

95] साइंस का हुनर, ब्राह्मण बच्चे ही, यहाँ ही सीखकर, सतयुग में काम में लगाते हैं

SM, Revised 08.09.2020

यह नहीं समझते स्वर्ग कहा ही जाता है नई दुनिया को। **यहाँ सब कुछ सीखना है। साइंस का हुनर भी फिर वहाँ काम में आता है।** यह साइंस भी वहाँ सुख देती है। यहाँ तो इन सबसे है अल्पकाल का सुख। वहाँ तुम बच्चों के लिए यह स्थाई सुख हो जायेगा। **यहाँ सब सीखना है - जो फिर संस्कार ले जायेंगे। कोई नई आत्मायें नहीं आयेंगी, जो सीखेंगी। यहाँ के बच्चे ही साइंस सीखकर वहाँ चलते हैं। बहुत होशियार हो जायेंगे। सब संस्कार ले जायेंगे - फिर वहाँ काम में आयेंगे।**

SM, Revised 03.09.2020

यहाँ तो देखो हीरे-जवाहरात आदि कुछ भी नहीं हैं। सतयुग में फिर कहाँ से आते हैं? **खानियाँ जो अब खाली हो गई हैं, वह सब, फिर से, अब भरतू हो जाती हैं।** खानियों से खोद कर ले आते हैं। विचार करो - सब नई चीजें होंगी ना! लाइट (electricity) आदि भी जैसे नैचुरल रहती है; **साइंस से यहाँ सीखते रहते हैं, वहाँ यह भी काम में आती हैं।** हेलीकाप्टर खड़े होंगे, बटन दबाया यह चला। कोई तकलीफ नहीं। वहाँ सब फुलप्रूफ होते हैं, कभी मशीन आदि खराब हो न सके। घर में बैठे सेकण्ड में स्कूल में, वा घूमने-फिरने पहुँचते हैं।

SM, Revised 02.07.2020

यह साइंस भी तो तुम बच्चों को सीखनी है ना। बुद्धि में यह सब साइंस के संस्कार ले जायेंगे, जो फिर वहाँ काम में आयेंगे। दुनिया कोई एकदम तो खत्म नहीं हो जाती। संस्कार ले जाकर फिर जन्म लेते हैं। विमान आदि भी बनाते हैं। जो-जो काम की चीजें वहाँ के लायक हैं, वह बनती हैं।

SM, Revised 08.02.2020

आजकल तो नई-नई इन्वेन्शन भी निकालते रहते हैं। मकान बनाने की साइन्स का भी ज़ोर है, सब कुछ तैयार मिलता है, झट फ्लैट (flat – apartment) तैयार। बहुत जल्दी-जल्दी बनते हैं, **तो यह सब वहाँ काम में तो आते हैं ना। यह सब साथ चलने हैं। संस्कार तो रहते हैं ना। यह साइंस के संस्कार भी चलेंगे।**

SM, Revised 07.08.2019

स्वर्ग में तो बहुत विशाल बुद्धि सतोप्रधान होते हैं। साइंस की बुद्धि तीखी होती है। झट बनाते जायेंगे, मकानों में जड़ित भी लगती जायेगी। आजकल इमीटेशन देखो कितना जल्दी बनाते रहते हैं। वह तो फिर रीयल से भी जास्ती चमकता है। और आजकल की मशीनरी से झट बना लेते हैं। **वहाँ मकान बनने में देरी नहीं लगती ..**

SM, Revised 29.07.2019

साइंस में जो अपने काम की चीजें हैं, वह वहाँ भी होंगी। वह बनाने वाले वहाँ भी जायेंगे - राजा तो नहीं बनेंगे। **यह लोग पिछाड़ी में तुम्हारे पास आयेंगे, फिर औरों को भी सिखायेंगे।** ... **वहाँ भी साइंस तो चाहिए ना। टाइम पड़ा है, सीखकर होशियार हो जायेंगे।** बाप की पहचान मिल गई, फिर स्वर्ग में आकर नौकर-चाकर बनेंगे। वहाँ सब सुख की बातें होती हैं।

SM, Revised 03.07.2019

साइंस वाले भी कितने होशियार होते जाते हैं। इन्वेन्शन निकालते रहते हैं। भारतवासी हर बात का अक्ल वहाँ (विदेश) से सीखकर आते हैं। **वह भी पिछाड़ी में आयेंगे, तो इतना ज्ञान उठायेंगे नहीं। फिर वहाँ भी आकर यही इन्जीनियरिंग (engineering) आदि का काम करेंगे।** राजा-रानी तो बन न सके, राजा-रानी के आगे सर्विस में रहेंगे। ऐसी-ऐसी इन्वेन्शन निकालते रहेंगे।

SM, Revised 28.02.2019

विनाश होने में साइन्स मदद करती है। **फिर वो ही साइंस तुमको नई दुनिया बनाने में भी मदद देगी।** यह ड्रामा बड़ा वन्डरफुल बना हुआ है।

SM, Revised 03.01.2019

वो लोग साइंस में कितना डीप जाते हैं। क्या-क्या बनाते रहते हैं। **वह भी संस्कार तो चाहिए ना, जो फिर वहाँ भी जाकर यह चीज़ें बनायेंगे।** सिर्फ यह दुनिया बदली होनी है।

SM, Revised 13.10.2018

जो सर्विसएबुल बच्चे हैं, वह आगे चल बहुत रौनक देखेंगे। यहाँ बैठे-बैठे चक्र लगाते रहेंगे स्वर्ग में। **फिर वहाँ जाकर महल बनायेंगे।** मकान की काम्पीटीशन होती है ना। अभी 100 वर्ष में कितना बनाया है। भारत को जैसे बहिश्त बना दिया है। **तो वहाँ 100 वर्ष में समझते हो क्या नहीं होगा! साइंस सारी तुमको वहाँ काम में आती है। साइंस का सुख ही वहाँ है।**

SM, Revised 03.10.2018

सोने के महल आदि बनाने में वहाँ कोई देर नहीं लगती है। मशीनरी पर झट गलाकर टाइल्स बनाते हैं। तुम बच्चे जानते हो यह जो साइंस है, जिससे विनाश होता है, **वही फिर तुमको वहाँ काम में आयेगी।** ... तो तुम विचार करो, जब विनाश होगा, फिर नई दुनिया में कितने थोड़े समय में सब चीज़े बन जायेंगी। **वहाँ तो झट सोने के महल बन जाते हैं।**

SM, Revised 03.04.2017

यहाँ भी देखो साइन्स से क्या-क्या बनता रहता है। एरोप्लेन, मोटरें, महल आदि कैसे बन जाते हैं। **वहाँ भी साइंस सारी काम में आती है।** ऐसे नहीं जमीन से कोई बैकुण्ठ निकल आयेगा।

SM, Revised 28.03.2017

इस समय एक है भक्ति का पाम्प, दूसरा है माया का पाम्प। साइंस से देखो क्या-क्या बना दिया है। मनुष्य समझते हैं हम स्वर्ग में बैठे हैं। बाप कहते हैं, यह साइंस का पाम्प है। यह सब गये कि गये। यह इतने सब बड़े-बड़े मकान आदि सब गिरेंगे, **फिर यह साइंस सतयुग में तुमको सुख के काम में आयेगी। इस साइन्स से ही विनाश होगा। फिर इसी से ही बहुत सुख भोगेंगे। यह खेल है।**

SM, Revised 08.02.2017

इस साइंस से जो भी विमान आदि निकले हैं, अभी 100 वर्ष के अन्दर - यह किसलिए? यह ट्रायल हो रही है। **यह सब चीजें फिर भविष्य में काम आने वाली हैं। इन्हों के द्वारा अभी सब कुछ विनाश हो जायेगा। फिर यह सुख के काम आयेंगे।**

SM, Revised 08.12.2016

यह साइंस जिससे अभी इतना सुख मिलता है, वह हुनर भी वहाँ रहता है। सीखी हुई चीजें दूसरे जन्म में भी काम आती हैं। ...
वहाँ, नई दुनिया में, विमान आदि बनाने वाले भी होंगे। सृष्टि तो चलती ही रहती है। यह बनाने वाले फिर भी आयेंगे। अन्त मती सो गति होगी।

SM, Revised 02.12.2016

विलायत में बत्तियां ऐसी हैं, जो रोशनी होती है, बत्तियां नहीं दिखाई पड़ती हैं। **वहाँ भी ऐसे रोशनी होती है। विमान आदि तो वहाँ भी होते हैं।** साइंस घमण्डी भी यहाँ आयेंगे। **फिर वहाँ भी यह एरोप्लेन आदि सब बनेंगे।** ...
सतयुग में जमुना का कण्ठा होगा। **वहाँ सब मीठे पानी के ऊपर महल होंगे।**

SM, Revised 11.11.2016

एक मास में भी मकान बना सकते हैं। कारीगर, सामान आदि सब तैयार हो, फिर बनने में देरी थोड़ेही लगेगी। विलायत में मकान कैसे बनते हैं - मिनट मोटर। **तो स्वर्ग में कितना जल्दी बनते होंगे। सोना, चाँदी बहुत तुम्हारे को मिल जाते हैं। खानियों से सोना, चाँदी, हीरे आदि ले आते हैं। हुनर तो सब सीख रहे हैं।** साइंस का कितना घमण्ड है। **यही साइंस फिर वहाँ भी काम आयेगी।** यहाँ सीखने वाले वहाँ दूसरा जन्म ले काम में आयेंगे।

SM, Revised 25.10.2016

तुम बच्चों को यह भी साक्षात्कार हुआ है। कैसे गुफाओं, खानियों से जाकर सोने, हीरे आदि ले आते हैं। **यह साइंस तुम्हारे सुख के लिए होगी। यहाँ है दु:ख के लिए, वहाँ एरोप्लेन भी फुलप्रूफ होंगे।**

SM, Revised 20.10.2016

साइंस सुख के लिए भी है तो दु:ख के लिए भी है। **वहाँ एरोप्लेन कभी गिरेंगे नहीं।** दु:ख की बात नहीं। यहाँ तो दु:ख ही दु:ख है। चोर लूट जाते, आग जला देती। **वहाँ मकान बहुत बड़े होते। सारे आबू जितनी जमीन एक-एक राजा की होगी।**

SM, Revised 20.02.2016

रामराज्य तो सतयुग में था। वहाँ यह विमान आदि सब थे फिर यह सब गुम हो गये। फिर इस समय यह सब निकले हैं। **अभी यह सब सीख रहे हैं, जो सीखने वाले हैं वह संस्कार ले जायेंगे। वहाँ आकर फिर बनायेंगे। यह भविष्य में तुमको सुख देने वाली चीजें हैं। यह साइंस फिर तुमको काम आयेगी।** अभी यह साइंस दु:ख के लिए है फिर वहाँ सुख के लिए होगी।

96] <u>माया के ईश्वरीय रूप</u>

AV Original 09.04.1971
कोई ईश्वरीय रूप से माया अपना साथी बनाने की कोशिश करे तो? ... **ईश्वरीय रूप से माया ऐसा सामने आयेगी, जो उनको परखने की बहुत आवश्यकता पड़ेगी।**

AV Original 23.05.1974
इसलिए बापदादा सभी बच्चों को वर्तमान समय की, माया के रॉयल स्वरूप की सावधानी, पहले से ही दे रहे हैं। ऐसे संग से, सदा सावधान रहना, और होशियार रहना। माया भी वर्तमान समय, ऐसे रॉयल पुरूषार्थियों की माला बनाने में लगी हुई है। अपने मणके बहुत अच्छी तरह से, और तीव्र पुरूषार्थ से ढूँढ रही है। इसलिये माया के मणके की माला नहीं बनना। अगर ऐसे माया के मणके के प्रभाव में आ गये, तो विजयमाला के मणकों से किनारे हो जायेंगे। **क्योंकि आजकल दोनों ही मालाएँ - एक माया की, और दूसरी विजयमाला बाप की, इन दोनों की सिलेक्शन बहुत तेज़ी से हो रही है। ऐसे समय में हर सेकेण्ड, चारों ओर अटेन्शन चाहिये। समझा?**

AV Original 13.11.1981
परमार्थ बच्चों के सामने माया भी रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके आती है। जिसको परखने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए, और एकाग्रता की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही प्राप्त होती है।

AV Original 13.11.1981 (continued)
वर्तमान समय ब्राह्मण आत्माओं में तीव्रगति का परिवर्तन कम है, क्योंकि माया के रॉयल ईश्वरीय रोल्ड गोल्ड को रीयल गोल्ड समझ लेते हैं। जिस कारण, वर्तमान न परखने के कारण, बोल क्या बोलते हैं? 'मैंने जो किया वा कहा - वह ठीक बोला'। 'मैं किसमें रांग हूँ'? 'ऐसे ही तो चलना पड़ेगा'! **रांग (wrong) होते भी अपने को रांग नहीं समझेंगे। कारण? परखने की शक्ति की कमी। माया के रॉयल रूप को रीयल समझ लेते।** परखने की शक्ति न होने के कारण यथार्थ निर्णय भी नहीं कर सकते। स्व-परिवर्तन करना है, वा पर-परिवर्तन होना है, यह निर्णय नहीं कर सकते - इसलिए परिवर्तन की गति तीव्र चाहिए।

AV Original 22.11.1987
ऐसे ही मायाजीत बनने के लिए (बाप की पद्मगुणा मदद का अधिकार बच्चों को प्राप्त होता है) - चाहे कितने भी भिन्न-भिन्न रूप से माया वार करने के लिए, आदि से अब तक आती रहती है - **कभी रॉयल रूप से आती, कभी प्रख्यात रूप में आती, कभी गुप्त रूप में आती, और कभी आर्टिफिशल ईश्वरीय रूप में आती।**

SM, Revised 31.12.2019 (Original 10.01.1969)
सारा मदार कर्मो पर है। यह माया रावण अवगुणी बनाता है। बाप आकर सर्वगुण सम्पन्न बनाते हैं। **राम वंशी और रावण वंशी की युद्ध चलती है। तुम राम के बच्चे हो; कितने अच्छे-अच्छे बच्चे माया से हार खा लेते हैं।** बाबा नाम नहीं बतलाते हैं, फिर भी उम्मीद रखते हैं।

SM, Revised 28.11.2019 (Original 18.12.1968)
अभी तो अच्छे-अच्छे बच्चे भी ब्राह्मण से फिर शूद्र बन जाते हैं। इसको कहा जाता है माया से हार खाना। बाबा की गोद से हारकर, रावण की गोद में चले जाते हैं। कहाँ बाप की श्रेष्ठ बनने की गोद, कहाँ भ्रष्ट बनने की गोद। सेकण्ड में जीवनमुक्ति। सेकण्ड में पूरी दुर्दशा हो जाती है। ब्राह्मण बच्चे अच्छी रीति जानते हैं - कैसे दुर्दशा हो जाती है। आज बाप के बनते, कल फिर माया के पंजे में आकर रावण के बन जाते हैं। फिर तुम बचाने की कोशिश करते हो, तो कोई-कोई बच भी जाते हैं। तुम देखते हो डूबते हैं, तो बचाने की कोशिश करते रहो।

SM, Revised 21.11.2019 (Original 27.11.1968)
बाप समझाते हैं, तुमको जंगल तरफ ले जाने वाला है रावण। तुम माया से हार खाते हो। रास्ता भूल जाते हो, तो फिर उस जंगल के कांटे बन जाते हो। वह फिर स्वर्ग में देरी से आयेंगे। यहाँ तुम आये ही हो स्वर्ग में जाने का पुरूषार्थ करने। त्रेता को भी स्वर्ग नहीं कहेंगे। 25 परसेन्ट कम हुआ ना। वह फेल गिना जाता है। तुम यहाँ आये ही हो पुरानी दुनिया छोड़, नई दुनिया में जाने। त्रेता को नई दुनिया नहीं कहेंगे। नापास वहाँ चले जाते हैं क्योंकि रास्ता ठीक पकड़ते नहीं। नीचे-ऊपर होते रहते हैं। तुम महसूस करते हो, जो याद होनी चाहिए वह नहीं रहती। स्वर्गवासी जो बनते हैं उनको कहेंगे अच्छे पास। त्रेता वाले नापास गिने जाते हैं।

SM, Revised 20.11.2019 (Original 03.12.1968)
माया से बचना है, तो बाप को जरूर याद करना पड़े। **बहुत अच्छे बच्चे हैं जो बाप का बनकर फिर माया के बन जाते हैं, बात मत पूछो, पक्के ट्रेटर बन जाते हैं। माया एकदम नाक से पकड़ लेती है।** अक्षर भी है ना – 'गज को ग्राह ने खाया'। परन्तु उसका अर्थ कोई नहीं समझते हैं। बाप हर बात अच्छी रीति समझाते हैं। कई बच्चे समझते भी हैं, परन्तु नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। कोई को तो ज़रा भी धारणा नहीं होती।

SM, Revised 28.06.2019
माया बड़ी तीखी है। जैसे चूहा काटता है, जो मालूम ही नहीं पड़ता है। **माया भी बड़ी मीठी-मीठी फूंक दे, और काट लेती है। पता भी नहीं पड़ता है।** आपस में रूसना आदि आसुरी सम्प्रदाय का काम है। बहुत सेन्टर्स में लूनपानी होकर रहते हैं।

SM, Revised 28.08.2018
आजकल बहुत मनुष्य वेष बदलकर कृष्ण का रूप धारण करते हैं। पैसे कमाते हैं। सब माया के मुरीद बन गये हैं। अभी तुम ईश्वर के मुरीद बनते हो। कोई तो 100 प्रतिशत ईश्वर के मुरीद बने हैं, उनकी शरण ली है। बाकी सब माया रावण की शरण में फँसे हुए हैं।

SM, Revised 30.07.2018
बाप का बनकर फिर हाथ छोड़ा, तो गोया मर गया। है तो भल इस दुनिया में, परन्तु जीते जी यहाँ से निकलकर, आसुरी दुनिया में चला गया। कोई कारण तो बनता है ना। भल कहेंगे ड्रामा! परन्तु श्रीमत पर न चलने से, माया से हार खा लेते हैं। तकदीर पर लकीर लग जाती है। ईश्वर का बनने से, फिर होती है माया से लड़ाई। बाकी देवताओं और असुरों की लड़ाई नहीं होती है। माया असुर है, जो जीत पा लेती है।

SM, Revised 27.07.2018
बाप की याद नहीं रहती है, तो माया ग्राह हप कर लेता है। **अच्छे-अच्छे महारथियों को भी माया ग्राह खा लेती है।** इसमें बड़ी गम्भीरता चाहिए और अभिमान नहीं आना चाहिए - 'मैं यह करता हूँ'। **जितना हो सके, हर बात में माताओं को आगे रखना है। माता का रिगॉर्ड रखना है।** सब चाबी माता के हाथ में होनी चाहिए। माता द्वारा समाचार आना चाहिए।

SM, Revised 14.07.2018
आत्मा याद करती है – 'ओ, गॉड फादर'। खुद ही परमात्मा होते, तो फिर पुकारते किसके लिए? बहुत थोड़ी समझने की बात है। परन्तु माया ऐसा बना देती है, जो समझते ही नहीं। जो बात मुख से कहते, उस पर फिर विश्वास नहीं करते। माया संशयबुद्धि बना देती है। **पुकारते भी हैं – 'ओ, गॉड फादर'; फिर कह देते हम ही फादर हैं, तब पुकारते क्यों हैं? 'फादर' अक्षर तो बच्चा ही कहेगा। याद एक को ही करना है।**

SM, Revised 11.05.2018
सर्वशक्तिमान बाप चाहिए ना क्योंकि माया भी कम नहीं है। वह भी सर्वशक्तिमान है। माया सर्व में व्यापक है। बाप सर्व में व्यापक नहीं है, वह तो पुनर्जन्म रहित है। परमपिता परमात्मा पुनर्जन्म नहीं लेता, मनुष्य लेते हैं।

SM, Revised 09.04.2018
माया कोई कम नहीं है। भल कोई कितना भी कहे, मैं बच्चा हूँ। भल स्थूल वा सूक्ष्म सर्विस भी करता रहे, लेकिन बाप से योग लगाना नहीं जानते, तो उसे सपूत बच्चा नहीं कहेंगे।

SM, Revised 19.02.2018
बाप है सत्य, वह सब सत्य सुनाकर सच्चा सोना बना देते हैं। **फिर माया असत्य बनाती है। माया की प्रवेशता के कारण मनुष्य जो कुछ कहेंगे वह असत्य ही कहेंगे, जिसको आसुरी मत कहा जाता है। बाप की है ईश्वरीय मत। आसुरी मत वाले झूठ ही बतायेंगे।**

SM, Revised 29.01.2018
माया ने सबको पत्थरबुद्धि बना दिया है। **अच्छे-अच्छे बच्चों को भी माया ऐसे घेरती है, जो उन्हों को पता नहीं पड़ता कि हमारा कदम पीछे कैसे जा रहा है।** फिर संजीवनी बूटी सुंघाकर होश में लाते हैं। ... **कितना भी समझाओ, समझते नहीं हैं।** अभी अपने को बहुत होशियार समझते हैं। पीछे बहुत पछताना पड़ेगा। ...
बाप की एम रहती है कि बच्चा ऊंच चढ़े, तो कुल का नाम निकलेगा। परन्तु बच्चा न बाप की मानें, न दादा की मानें, तो गोया बड़ी माँ की भी नहीं माना। उसका क्या हाल होगा? बात मत पूछो!

SM, Revised 19.12.2017
अभी तुम जीते जी बाप के बने हो। **कोई-कोई को फिर माया रावण अपनी तरफ खींच लेती है। उसे कहेंगे रावण रूपी काल खा गया। ईश्वरीय गोद में आकर, फिर बदलकर आसुरी गोद में चले जाते हैं। काल ने नहीं खाया, परन्तु जीते जी ईश्वर के बने, फिर जीते जी रावण के बन पड़ते हैं।** यहाँ धर्मात्मा बने, फिर वहाँ जाकर अधर्मी बन जाते हैं।

98] देलवाड़ा मन्दिर

SM, Original 01.09.1968

बच्चों ने देलवाड़ा मंदिर देखा है। मनुष्य समझते हैं - स्वर्ग कोई ऊपर में है। बाप समझाते हैं - स्वर्ग तो यहाँ होता है। **देलवाड़ा मंदिर भी पूरा यादगार है। नीचे तपस्या कर रहे हैं। फिर स्वर्ग कहाँ दिखावे। तो वह फिर छत्त में रख दिया है। कारीगरों ने भी समझ कर बनाया होगा ना। नीचे राजयोग की तपस्या कर रहे हैं। और ऊपर राजयोग पद खड़ा है। कितना अच्छा मंदिर है।** ऊपर फिर है अचल घर। वहाँ सोने की रखी हैं। उनसे ऊपर फिर है गुरुशिखर। गुरु सभी से ऊपर बैठा है। ऊँच ते ऊँच है सद्गुरु। फिर बीच में दिखाया है स्वर्ग। ऊपर सोना ही सोना। नीचे काला ही काला। उनको स्वर्ग का मालिक बनाते कौन? गुरु शिखर। गाते भी हैं, 'हे पतित पावन आओ। आकर पावन बनाओ'। फिर कह देते सर्वव्यापी है। ठिक्कर भित्तर में है। कितने बेसमझ मूर्ख बुद्धि बन, सभी पैसे ही खलास कर देते हैं। भारत कंगाल बन पड़ा है ना। भारत पर जितना कर्जा है उतना और कोई पर नहीं। 40-50 वर्ष लिए लेते हैं क्या उनको मिलेगा? यह लेन-देन का हिसाब पूरा होता है। **तो यह देलवाड़ा मंदिर तुम्हारा यादगार है। राजयोग तुम सीखते हो - फिर स्वर्ग भी यहाँ ही होगा।**

SM, Original 18.12.1968

तुम बच्चे हो महावीर-महावीरणियाँ। तुम्हारा ही (देलवाड़ा) मंदिर में यादगार है। राजयोग है ना। यह तो बहुत सहज है। **नीचे योग तपस्या में बैठे हैं, ऊपर में राजाई का चित्र है। राजयोग का एक्युरेट मंदिर है। फिर कोई ने क्या नाम रख दिया है, कोई ने क्या नाम रख दिया है। यादगार है बिल्कुल एक्युरेट।** बुद्धि से काम ले, ठीक बनाया है। फिर जिसने जो कहा, वह नाम रख दिया है। यह मॉडल रूप में बनाया है। स्वर्ग और राजयोग संगम का बनाया हुआ है। स्वर्ग तो मनुष्यों को इन आँखों से देखने में नहीं आता है, तो देवी-देवताओं को छतों में दिखाया है। तुम आदि-मध्य-अंत को जानते हो। आदि को भी तुमने देखा है, आदि संगमयुग कहो या सतयुग कहो। संगमयुग की ही सीन नीचे दिखाई है। फिर राजाई ऊपर में दिखाई है। आदि, फिर मध्य में है द्वापर। अन्त को तो तुम देखते हो, यह भी खत्म हो जाना है। पूरी यादगार बनी हुई है। **देवी-देवताएँ ही फिर वाम मार्ग में जाते हैं। द्वापर से वाम मार्ग शुरू होता है। तो यादगार पूरा एक्युरेट है।**

SM, Revised 20.10.2020

मुख्य तो है यह देलवाड़ा मन्दिर। हूबहू तुम्हारा यादगार है। मॉडल्स तो हमेशा छोटा बनाते हैं ना। **यह बिल्कुल एक्यूरेट मॉडल्स हैं। शिवबाबा भी है, आदि देव भी है, ऊपर में बैकुण्ठ दिखाया है।** शिव-बाबा होगा तो जरूर रथ भी होगा। आदि देव बैठा है, यह भी किसको पता नहीं है। यह शिवबाबा का रथ है। महावीर ही राजाई प्राप्त करते हैं। आत्मा में ताकत कैसे आती है, यह भी तुम अभी समझते हो। घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझो।

SM, Revised 05.02.2020

वह है जड़ देलवाड़ा मन्दिर, और यह है चैतन्य देलवाड़ा। यह भी वण्डर है ना। जहाँ जड़ यादगार है, वहाँ तुम चैतन्य आकर बैठे हो। परन्तु मनुष्य कुछ समझते थोड़ेही हैं। आगे चलकर समझेंगे कि बरोबर यह गॉड फादरली युनिवर्सिटी है, यहाँ भगवान पढ़ाते हैं। इससे बड़ी युनिवर्सिटी और कोई हो न सके। और यह भी समझेंगे कि यह तो बरोबर चैतन्य देलवाड़ा मन्दिर है। **यह देलवाड़ा मन्दिर तुम्हारा एक्यूरेट यादगार है। ऊपर छत में सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी हैं, नीचे आदि देव आदि देवी और बच्चे बैठे हैं। इनका नाम है ब्रह्मा, फिर सरस्वती है ब्रह्मा की बेटी। प्रजापिता ब्रह्मा है, तो जरूर गोप-गोपियाँ भी होंगे ना।**

SM, Revised 24.09.2019 (Original 06.10.1968)

यह जरूर सबको मालूम होना चाहिए कि भारत बड़े ते बड़ा तीर्थ है, जहाँ बेहद का बाप आते हैं। ऐसे नहीं, सारे भारत में विराजमान हुआ। **शास्त्रों में मगध देश लिखा है, परन्तु नॉलेज कहाँ सिखाई? आबू में कैसे आये? देलवाड़ा मन्दिर भी यहाँ पूरा यादगार है। जिन्होंने भी बनाया, उन्हों की बुद्धि में आया, और बैठकर बनवाया। एक्यूरेट मॉडल तो बना न सकें। बाप यहाँ ही आकर सर्व की सद्गति करते हैं, मगध देश में नहीं।** वह तो पाकिस्तान हो गया। यह है नापाक स्थान। वास्तव में पाक स्थान तो स्वर्ग को कहा जाता है। पाक और नापाक का ये सारा ड्रामा बना हुआ है।

SM, Revised 03.09.2019 (Original 24.09.1968)
कैसे यह देलवाड़ा मन्दिर है, आदि देव भी है, और ऊपर में विश्व में शान्ति का नज़ारा भी है। ... इन लक्ष्मी-नारायण के राज्य में विश्व में शान्ति थी। वह तो देलवाड़ा मन्दिर में पूरा यादगार है। ...
मन्दिर बनाने वाले खुद नहीं जानते हैं, जिन्होंने ही बैठ यह यादगार बनाया है, जिसका देलवाड़ा मन्दिर नाम रख दिया है। आदि देव को भी बिठाया है, ऊपर में स्वर्ग भी दिखाया है। जैसे वह जड़ है, वैसे तुम हो चैतन्य। इनको चैतन्य देलवाड़ा नाम रख सकते हैं। ...
समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। बहुत बच्चे भी नहीं समझते हैं। भल दर पर, पास में, बैठे हैं - समझते कुछ भी नहीं।

SM, Revised 31.10.2018
बाप कहते हैं, मेरा जन्म भी भारत में है। शिव जयन्ती भी मनाते हो। मेरे नाम तो ढेर रख दिये हैं। कहते हैं, 'हर-हर महादेव'; सबके दु:ख काटने वाला, वह भी मैं ही हूँ, शंकर नहीं है। ब्रह्मा सर्विस पर हाज़िर है। और फिर जो स्थापना करते हैं, वही विष्णु के दो रूप से पालना करेंगे। **मुझे प्रजापिता ब्रह्मा जरूर चाहिए। आदि देव का बरोबर मन्दिर भी है। आदि देव किसका बच्चा है? कोई बताये। इस देलवाड़ा मन्दिर के जो ट्रस्टी लोग हैं, वह भी यह नहीं जानते कि आदि देव है कौन? उनका बाप कौन था? आदि देव प्रजापिता ब्रह्मा है, उनका बाप है शिव। यह जगतपिता, जगत अम्बा का यादगार मन्दिर है।**

SM, Revised 18.10.2018
जगत अम्बा और जगत पिता बैठे हैं, राजयोग सीख रहे हैं। ...
यह देलवाड़ा मन्दिर तुम्हारा अभी का यादगार बना हुआ है। तुम राजयोगी हो। अधरकुमार, कुमार कुमारियां, सब यहाँ बैठे हो, उनका यादगार फिर भक्ति में बनता है। ...
यह आदि देव और आदि देवी भी राजयोग सीख रहे हैं। यह भी याद करेंगे उस निराकार परमपिता परमात्मा को। वह है ऊंच ते ऊंच ज्ञान सागर। इस आदि देव के शरीर में बैठ सब बच्चों को समझाते हैं।

SM, Revised 09.08.2018
तुम समझते हो, शिवबाबा ब्रह्मा तन से आकर पढ़ाते हैं। शिवबाबा की ही इतनी भारी महिमा है। ब्रह्मा द्वारा राजयोग सिखाकर हमको बैकुण्ठ का मालिक बनाते हैं। जरूर ब्रह्मा-सरस्वती पहले-पहले जाकर लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। **जगत अम्बा और जगत पिता बैठे हैं। वही विश्व के मालिक बनेंगे। उनके साथ कुमार-कुमारियां भी हैं। यह देलवाड़ा मन्दिर कितना अच्छा बना हुआ है। यह मन्दिर आदि तो पहले के बने हुए हैं। अभी हम भेंट करते हैं। हमारे ही यादगार का पूरा यह मन्दिर है।**

SM, Revised 20.07.2018
अभी तो हम ऊंच ते ऊंच हैं। नामाचार ही सारा इस समय का है। **देलवाड़ा मन्दिर भी इस समय का है। सारी सृष्टि के आत्माओं की दिल लेने वाला है बाप। दिलवाला मन्दिर सभी के लिये है।**

SM, Revised 11.07.2018
हम अपने को भगवान् कहला नहीं सकते। आत्मायें तो पुनर्जन्म लेती हैं। ऐसे नहीं, बाप भी पुनर्जन्म लेते हैं। अभी तुम तीनों लोकों को जानते हो, इसलिए तुम्हारा त्रिलोकीनाथ नाम है। जानने वाले ही नाथ हुए। तुमको अब त्रिलोकी का ज्ञान है। तुम ब्राह्मण ही जानते हो, और कोई भी जान न सके। कृष्ण भी त्रिलोकीनाथ नहीं है। वहाँ यह ज्ञान ही नहीं रहता। यह सिर्फ तुमको मिलता है, इसलिए तुम्हारा नाम बाला है। **देलवाड़ा मन्दिर में शिव, आदि देव, आदि देवी, और तुम बच्चे हो क्योंकि तुम अभी सर्विस करते हो!**

SM, Revised 26.08.2017
जगत अम्बा को शिव शक्ति कहते हैं ना! उनके मन्दिर भी बने हुए हैं। देलवाड़ा मन्दिर भी है। दिल लेने वाला तो एक शिवबाबा ही हुआ ना। ब्रह्मा भी है, फिर जगत अम्बा और तुम कुमारियां भी हो। महारथी भी हैं। हूबहू तुम प्रैक्टिकल में हो।

SM, Revised 02.01.2017

तुम्हारा यादगार मन्दिर देलवाड़ा है। आदि देव बैठा है। बापदादा है ना। इनके ही शरीर में बाबा विराजमान होता है। तुम जानते हो यह बाप-दादा दोनों बैठे हैं। **तुम बच्चे देलवाड़ा मन्दिर में जाते हो तो फिर इस ख्याल से जाओ, यह बापदादा है। इस समय तुम बच्चे जो राजयोग सीख रहे हो, उनकी निशानी है। महारथी घोड़ेसवार भी हैं। इस दादा में बाबा प्रवेश करते हैं। तो वह है जड़, यह है चैतन्य।**

99] जगन्नाथ मन्दिर

SM, Original 03.10.1965

सतयुग में तुम यहाँ की प्रालब्ध भोगते हो। वहाँ कोई विकर्म होता नहीं - क्योंकि वहाँ माया है नहीं। **विकर्म तब शुरू होते हैं, जब वाम मार्ग में जाते हैं। उनकी निशानी देखनी हो, तो जाओ जगन्नाथ पुरी में। जगन्नाथ तो वास्तव में लक्ष्मी-नारायण को कहा जाता। तो मंदिर में, अंदर देवताओं की ताज वाली मूर्ति है, और बाहर गंदे चित्र दिखाये हैं। वो सन्यासी फिर कहते हैं - देवताएँ भी विकारी थे। जाकर देखो मंदिर के ऊपर। तो भारतवासियों ने खुद को खुद चमाट मारी है।** बाबा कहते हैं - मैं भी ड्रामा के बंधन में बाँधा हुआ हूँ। जैसे कल्प पहले आया था, वैसे ही आऊँगा।

SM, Original 24.03.1968

देवताएँ जब वाम मार्ग में चले जाते हैं, तो फिर आसुरी गुण आ जाते हैं। मुख्य है ही काम। पुरी में चित्र दिखाते हैं, ड्रेस देवताओं की, और फिर चित्र बहुत गंदे लगे हुए हैं। नीचे पवित्र - और ऊपर फिर दिखाते हैं देवताएँ कैसे वाम मार्ग में गिरे। कब गिरे यह नहीं जानते। देवताओं के चित्र बहुत विषयी दिखाते हैं। यह भी बाप समझाते हैं – वाम मार्ग में ऐसे गिरे, फिर बैठ मंदिर बनाई। निशानियाँ तो रह जाती हैं ना। अभी बाप समझाते हैं - मूल बात है बाप से वर्सा लेना। तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। **मानव मत न चलो। यहाँ तो बहुत संस्थाएँ हैं जो है मानव मत की। दिन-प्रतिदिन मनुष्य उतरते ही जाते हैं। ऊपर चढ़ ही नहीं सकते हैं।** सभी की उतरती कला है। चढ़ती कला है नई दुनिया। उतरती कला पुरानी दुनिया। सभी की कला उतरती ही जाती है। चढ़ती किसकी भी नहीं, क्योंकि मनुष्य मत है।

SM, Original 28.04.1968

यह भी बच्चों को समझाया - द्वापर से ही रावण राज्य शुरू होता है, **जब वाम मार्ग में जाते हैं। वही निर्विकारी, सो फिर भी विकारी बनते हैं। देवताएं ही फिर विकार में जाते हैं। उनकी निशानियां भी जगन्नाथ मन्दिर में हैं।** वह वाम मार्ग के चित्र हैं। उनको देख पतित मनुष्य कहते हैं – 'देवताएं तो विकार में जाते हैं ना?' निशानियां हैं भल, पर इसका अर्थ नहीं समझते हैं। वही देवताएं वाम मार्ग में जाने से विकारी बनते हैं। ऐसे बहुत जगह छी-छी चित्र रखे हैं।

SM, Original 05.05.1968

हिन्दुओं ने अपना धर्म आपे ही बदला है - क्योंकि कर्म भ्रष्ट होने से, धर्म भ्रष्ट भी हो जाते हैं। कर्म भ्रष्ट हो गये हैं ना। वाम मार्ग में चले गये। जगन्नाथ के मन्दिर में भल गये होंगे - परन्तु कोई का ख्याल नहीं आता। खुद विकारी हैं, तो उन्हों को भी विकारी दिखाते हैं। यह नहीं समझते हैं कि देवताएं फिर वाम मार्ग में गये हैं। उन्हों के यह चित्र हैं। देवी-देवता नाम तो बहुत अच्छा है। 'हिन्दु' तो हिन्दुस्तान का नाम है। यह फिर अपन को 'हिन्दु' कह देते हैं। कितनी भूल है; इसलिए **बाप कहते हैं, 'यदा यदा हि धर्मस्य ...'; बाप भारत में ही आते हैं। ऐसे तो नहीं कहते हैं कि मैं हिन्दुस्तान में आता हूँ। यह है ही भारत। हिन्दुस्तान वा हिन्दु धर्म है नहीं। मुसलमानों ने हिन्दुस्तान नाम रखा है। यह भी ड्रामा की नूँध है। अच्छी रीति समझाना चाहिए। यह भी नॉलेज है ना - पुनर्जन्म लेते-लेते वाम मार्ग में आते-आते भ्रष्टाचारी विकारी बन गये हैं।** फिर उन्हों के आगे कहते हैं, 'आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो, हम विकारी पापी हैं'। और कोई खण्ड वाले ऐसे नहीं कहेंगे कि 'आप सम्पूर्ण निर्विकारी, हम विकारी हैं'।

SM, Original 26.06.1968

देवी-देवताएं जो थे वे फिर वाम मार्ग में चले जाते हैं। है तो वह भी तुम्हारे जैसे मनुष्य। बाकी जैसे चित्र दिखाई है ऐसे है नहीं। जगन्नाथ के मंदिर में तुम देखेंगे काले चित्र हैं। बाप कहते हैं, 'माया जीते, जगत जीत बनो' - तो उन्होंने फिर 'जगत नाथ' नाम रख दिया है। ऊपर में सभी गंदे चित्र दिखाये हैं। देवताएं वाम मार्ग में गये तो काले बन पड़े। उनकी भी पूजा करते रहते हैं। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है कि कब हम पूज्य थे।

SM, Original 26.06.1968 (continued)

अभी तुम बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं। ज्ञान-चिता पर बैठ, गोरे बनते हो। **काम-चिता पर बैठ, काले बन जाते हो। देवताएं वाम-मार्ग में जाकर विकारी बन पड़ते। फिर उनका नाम तो देवता रख नहीं सकते। वाम-मार्ग में जाने से काले बन पड़े हैं। यह निशानी दिखाई है।** कृष्ण काला, राम भी काला। शिव को भी काला बना देते हैं। सभी काले - शिव का लिंग भी काला बना देते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो **शिवबाबा तो काला बनता ही नहीं है। वह तो हीरा है, जो तुमको भी हीरा जैसा बनाते हैं। वह तो कब काला बनता नहीं। उनको फिर काला क्यों बना दिया है? कोई काला होगा, उसने बैठ काला बना दिया है। शिवबाबा कहते हैं, हमने क्या दोष किया है, जो मुझे भी काला बना दिया है? मैं तो आता ही हूँ सभी को गोरा बनाने। मैं तो सदैव ही गोरा हूँ। फिर काला क्यों? मनुष्य की ऐसी पत्थर बुद्धि बन पड़ी है, जो कुछ भी समझ नहीं।** शिवबाबा तो है हसीन। सभी को हसीन बनाने आते हैं। मैं तो एवर गोरा मुसाफिर हूँ। मैंने क्या किया जो मुझे काला बनाया है? अभी तुमको भी गोरा बनना है। ऊँच पद कैसे पाना है, वह तो बाप ने समझाया है 'फॉलो फादर' (follow Father)।

100] पवित्र प्रवृत्ति मार्ग – Part 1

SM, Original 01.09.1962 (Page 3)
अपना चार्ट (chart) रखो, अपनी कचहरी करो। सारे दिन में कितने पाप इन कर्मइन्द्रियों से किये? **मंसा में तो बहुत संकल्प आवेंगे - परंतु कर्मइन्द्रियों से विकर्म न करना है। कम्पैनियन (companion) भल रखो उन्नति के लिए, विकार में न गिरना।** पॉइज़िन (poison) की लेन-देन से ही मनुष्य रोगी-भोगी बनते हैं। योगी निरोगी होते हैं। भोगी हैं, तो रोगी हैं।

SM, Original 19.03.1963 (Page 2)
बड़े-बड़े आदमियों लिए पवित्र बनना तो बड़ा मुश्किल है। समझते हैं, बड़े-बड़े ऋषि-मुनि पवित्र न रह सके; तब तो वो भी घर छोड़ भागते हैं - स्त्री नर्क का द्वार है, उसके साथ रह नहीं सकते। **यहाँ तो दोनों को इकट्ठा रह स्कॉलरशिप लेनी है। गंधर्वी विवाह का नाम भी यहाँ का है। यह रसम ब्राह्मणों में चलती है। इकट्ठा रह बहादुरी दिखानी है। दोनों इकट्ठे रहे और आग न लगे। माया पर जीत पहननी है ना!** जैसे हनुमान का मिसाल है, उनको रावण हिलाए न सका। यह बहुत अच्छा मिसाल है। हम सभी हनुमान हैं। कुछ भी हो, हम हिल नहीं सकते, नहीं तो अपनी राजाई गँवाए देंगे। **उन्होंने तो शास्त्रों में क्या-क्या बातें लिख दी हैं; परन्तु यहाँ यह बहादुरी दिखानी है, भल इकट्ठे एक पलंग पर सोए, परन्तु बीच में ज्ञान तलवार हो। समझाना है, यह (शिवबाबा) हमको पवित्रता सिखाने वाला है। वो कहते हैं, यह अन्तिम जन्म विष न पीना।** 63 जन्म तो विष खाए, दुखी हुए, अब तुमको अमरलोक ले चलता हूँ; इसलिए मेरी राय पर चलो। माया तो खूब चक्करी में लाएगी; परन्तु बहादुरी चाहिए। नम्बरवार तो हैं ही। भल माया चोट लगाती है, फिर भी पुरुषार्थ तो करना है। ठहर गए तो ऊँच पद कैसे पाएँगे? **लड़ाई का मैदान है, इसमें हार-जीत होती है। हाँ, घड़ी-घड़ी हार खाने से रजिस्टर खराब होता है।** लड़ाई में भी जखमी होते हैं तो दुख ज़रूर सहन करना पड़ता है। अगर कन्या ज्ञान में है तो माँ-बाप को समझाए सकती है कि हम शादी न करेगी।

SM, Original 20.05.1964 (Page 2)
गोवर्धन पर्वत पर जावेंगे तो वहाँ अंगुली दिखाते हैं। पर्वत की कितनी पूजा होती है! भारत जो गोल्डन एज्ड बन जाता, तो पूजा होती नहीं। तो यह अंगुली है तुम्हारी निशानी। **पवित्रता की प्रतिज्ञा करना, यह जैसे अंगुली देना है - भारत को सैलवेज (salvage) करने लिए। पवित्रता है, तो पीस-प्रॉसपेरिटी भी है।** पवित्रता न है, तो भारत का हाल देखो क्या है! मेहनत है ना! सन्यासी कहते, आग और कपूस इकट्ठे रह न सकते, शास्त्रों में ऐसा है; परन्तु वो तो है भक्ति की सामग्री। यह भी भावी है शास्त्र लिखने की। **तुम सन्यासियों को कह सकते हो – 'तुम कहते हो, आग-कपूस इकट्ठे न रह सकते; परन्तु तुमको श्रीमत थोड़े ही मिलती है; हम तो अब बाप की श्रीमत पर चलते हैं'। उनको मिलती है शंकराचार्य की मत, यह है शिव आचार्य की मत।**

SM, Original 10.05.1965 (Page 2)
एक बाप के बच्चे तुम तो आपस में भाई-बहन हो गए। सब प्रजापिता ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ ठहरे। अगर विकार में जावेंगे तो रसातल में चले जावेंगे। रसातल में तो हैं। बाप का फिर बन गिरे, तो और ही पापात्मा बन पड़ेंगे। यह ईश्वरीय गवर्मेन्ट है। अगर मेरी मत पर चल पवित्र न बने, तो धर्मराज द्वारा बड़ी कड़ी सजा मिलेगी। जन्म-जन्मांतर के पाप किए हुए हैं ना। इन सबकी सजाएँ खानी पड़ेंगी। हिसाब चुक्तू करना होगा। **या तो श्रीमत पर चल विकर्मों को भस्म करना है, नहीं तो फिर सजा खानी पड़ेगी। कितने ढेर ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ हैं। सब पवित्र रहते हैं। भारत को ही स्वर्ग बनाते।** तुम हो शिक-शक्ति पांडव सेना। गोप-गोपियाँ दोनों इसमें आते हैं।

SM, Original 20.05.1965 (Page 2)
आग-कपूस की परीक्षा कैसे हो? बाबा खुद लिखते हैं कायर मत बनो। अपनी परीक्षा लो - काम की आग तो नहीं लगती है? बहादूर बनना चाहिए। भल कोई पवित्र भी रहते हैं - फिर ज्ञान की धमक भी चाहिए। धारणा चाहिए। जितना वारिस और प्रजा बनावेंगे, काँटों को फूल बनाना है। कितनी मेहनत करनी पड़ती है। ऐसे बहुत विलायत में भी रहते हैं। कम्पैनियन हो रहे, पवित्र रहते हैं।

SM, Original 08.10.1965 (Page 1)
जब ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ बहन-भाई हैं - तो विकार में जा न सके। नहीं तो क्रिमिनल एसाल्ट हो जाए। तो पवित्र तो बनना पड़े ना। बाबा कितनी अच्छी रीति समझाते हैं। पवित्र बनने की कितनी युक्ति बताते हैं। स्त्री भी कहे 'बाबा', पुरुष भी कहे 'बाबा', तो स्त्री-पुरुष का भान टूट जाएगा। उस अवस्था आने में भी टाइम लगता है। अभी जो मन्सा में संकल्प भी आते हैं, धीरे-धीरे वह सभी बंद हो जाएँगे। किसी को भी समझा सकते हो कि परमात्मा के बच्चे भाई-भाई तो हो ही, और फिर कहते हो आदम-बीबी द्वारा सृष्टि की स्थापना हुई, तो सब उनकी सन्तान ठहरे तो भाई-बहन ठहरे ना। **कुमारी और कुमार के लिए इतनी मेहनत नहीं है। जो सीढ़ी चढ़ गया, तो उतरना पड़े ना। उतरने में मेहनत है। ऐसे नहीं कि दोनों को अलग-अलग रहना है – नहीं! साथ में रहते, अपनी जाँच करो कि आग तो नहीं लगती? नग्न न होना है, फिर तो कम्पेनियन हो जाय।**

SM, Revised 08.01.2020
यह बाप कहते हैं, मैं तुमको ज्ञान रत्नों से श्रृंगारता हूँ, फिर तुम यह लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। ऐसे और कोई कह न सके। **बाप ही आकर पवित्र प्रवृत्ति मार्ग की स्थापना करते हैं, इसलिए विष्णु को भी 4 भुजा दिखाते हैं।** शंकर के साथ पार्वती, ब्रह्मा के साथ सरस्वती दिखाई है। **अब ब्रह्मा की कोई स्त्री तो है नहीं। यह तो बाप का बन गया। कैसी वन्डरफुल बातें हैं। मात-पिता तो यह है ना। यह प्रजापिता भी है, फिर इन द्वारा बाप रचते हैं, तो 'माँ' भी ठहरी।** सरस्वती ब्रह्मा की बेटी गाई जाती है। यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं।

SM, Revised 23.08.2019
सजायें तो नम्बरवार भोगते हैं जरूर। जो पूरा पुरूषार्थ कर विजय माला का दाना बनते हैं, वह सजाओं से छूट जाते हैं। **माला एक की तो नहीं होती। जिसने उन्हों को ऐसा बनाया, वह (शिव) है फूल। फिर है मेरू (ब्रह्मा-सरस्वती), प्रवृत्ति मार्ग है ना। तो जोड़ी की माला है। सिंगल की माला नहीं होती।**

SM, Revised 30.08.2018
लक्ष्मी-नारायण के पास तो कितना अथाह धन था! कितनी उन्हों की पूजा होती है! **पूजा सिर्फ लक्ष्मी की थोड़ेही करते हैं, चतुर्भुज की करते हैं। उसमें दोनों आ जाते हैं। लक्ष्मी के साथ नारायण तो जरूर चाहिए। इसलिए दोनों की पूजा करते हैं। जोड़ी बिगर काम कैसे चलेगा? प्रवृत्ति मार्ग है ना।** तुम विश्व के मालिक बनते हो।

SM, Revised 07.08.2017
मदर (Mother) भी एडाप्टेड है। सरस्वती को भी परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट किया, और फिर इसमें प्रवेश किया है। यह एडाप्शन और प्रकार की है, श्रू तो कोई चाहिए ना। कहते हैं, इन द्वारा मैं नॉलेज सुनाता हूँ, इन द्वारा बच्चे एडाप्ट करता हूँ। **तो यह माता भी सिद्ध होती है। प्रवृत्ति मार्ग है ना। परन्तु है तो मेल, इसलिए मुख्य सरस्वती को माता के पद पर रखा जाता है। यह बड़े गुह्य राज समझने के हैं।** प्रजापिता है ना, प्रजा को रचने वाला। इन द्वारा वह रचते हैं, ऐसे नहीं कि सरस्वती द्वारा कोई एडाप्ट करते हैं - नहीं! यह तो बड़ी समझ की बात है।

SM, Revised 20.04.2017
बाप जो ज्ञान का सागर है, वह तुम बच्चों को पढ़ाते हैं, मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं। और कोई भी साधू-सन्त, सन्यासी, मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता नहीं बता सकते। तो उनको गुरू कैसे कह सकते? ड्रामा में उनका पार्ट है, भारत को पवित्रता पर थमाना है। भल पवित्र तो रहते हैं, परन्तु ज्ञान-योग से नहीं पवित्र बनते। दवाई खाकर इन्द्रियों को मुर्दा बना देते हैं, इसमें कोई ताकत नहीं। **ताकत तो तब मिले जब गृहस्थ व्यवहार में रहते, वा स्त्री पुरूष दोनों स्वयंवर रच शादी कर, फिर पवित्र रहें। उसको कहा जाता है बाल ब्रह्मचारी युगल। यहाँ भी बाप से बल मिलता है। परमपिता परमात्मा ही आकर पवित्र मार्ग स्थापना करते हैं।** सतयुग में देवी देवता पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले थे। उनको पवित्र रहते भी बच्चे थे। **मनुष्य यह नहीं जानते कि परमपिता परमात्मा कैसे बैठ उन्हों को ताकत देते हैं, जो घर गृहस्थ में रहते भी नग्न नहीं होते।**

SM, Revised 12.05.2016
यह राजयोग है प्रवृत्ति मार्ग वालों के लिए। **भारत पवित्र प्रवृत्ति मार्ग में था, अब कलियुग में पतित प्रवृत्ति मार्ग वाले हो गये हो।** भगवानुवाच - मामेकम् याद करो। पुरानी दुनिया अथवा देह के सम्बन्धों से दिल लगायेंगे तो तकदीर फूट जायेगी। बहुतों की तकदीर फूट जाती है।

SM, Revised 23.02.2016
सतयुग में था ही एक धर्म। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक, महाराजा-महारानी थे। यह भी तुम जानते हो, यह माला किसकी बनी हुई है। **ऊपर में है फूल, शिवबाबा; फिर है युगल दाना, ब्रह्मा-सरस्वती। उन्हों की यह माला है जो विश्व को नर्क से स्वर्ग, पतित से पावन बनाते हैं। जो सर्विस करके जाते हैं, उन्हों की ही याद रहती है। तो बाप समझाते हैं – यह सतयुग में पवित्र थे ना। प्रवृत्ति मार्ग पवित्र था।**

101] पवित्र प्रवृत्ति मार्ग – Part 2

SM, Original 27.10.1966 (Night Class)
गृहस्थ-व्यवहार में रहते हुये कमल फूल समान पवित्र रहना है - ट्रायल करके देखो इकट्ठे सोने से आग तो नहीं लगती है? कोई भी हालत में नग्न नहीं होना है। काम के तूफान को हटाते ही जाओ। अपनी सम्भाल करनी है। योगबल से विकारी ख्यालात से हट जाना है; पुरुष क्रोध करे तो उनको फूल या ठण्डा पानी डाल, शांत करानी चाहिए। बहुत मीठा बनना चाहिए। **इस रुहानी कमाई पर अटेंशन जास्ती होना चाहिए - पैसे पीछे जास्ती लोभ भी नहीं रखना चाहिए। आजकल पैसे वालों के पीछे बहुत झंझट है। जो योग में रहने नहीं देता।**

SM, Original 18.04.1967 (Night Class)
स्त्री को, पुरुष का भान; पुरुष को, स्त्री का भान मिट जावे - इसमें है मेहनत। गंधर्व विवाह तो इसीलिए करते हैं कि हम पवित्र रहकर दिखावेंगे। आदत पड़ी नहीं है, परंतु जो इकट्ठे रहते आये हैं स्त्री-पुरुष उनको जास्ती मेहनत लगती है। अगर वो पवित्र रहते रहे, तो सर्विसेबुल भी तीखे हो जावें, तो उंच पद पा सकत हैं। उनको आफरीन है। कुमार-कुमारी तो रह सकते हैं। भल कहेंगे कि कुमार-कुमारी भी खराब हो जाते हैं। इस अवस्था में अगर अडोल साक्षी होकर ड्रामा की ढाल पर चलें, शरीर निर्वाह भी करें, सर्विस भी करते रहें, तो पद बहुत उंचा पा सकते हैं।

SM, Original 31.05.1967 (Page 1)
प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा तुम भाई-बहन बनते हो। हर एक ब्रह्मा कुमार-कुमारी है। **यह बुद्धि में रहने पर फिर स्त्री-पुरुष का भान निकल जाता है। मनुष्य तुम पर हंसी करते हैं। यह नहीं समझते हैं कि हम भी भाई-भाई हैं। फिर बाबा रचना रचते हैं, तो भाई-बहन हो जाते हैं। क्रिमिनल दृष्टि निकल जाती है। इसलिए ही गंधर्व विवाह भी गाया हुआ है। यहां की ही बात है।** बच्चे शादी नहीं करते हैं, तो माँ-बाप की कितनी मार पड़ती है। कोई लखपति-करोड़पति हो, तो भी बच्चे को शादी के लिए बहुत तंग करते हैं। **कुमारियों को भी बहुत तंग करते हैं। इसलिए ही उनको बचाने लिए यह युक्ति रची हुई है। दोनों प्रण करते हैं कि बाबा हम पवित्र बनकर आपका नाम रोशन करेंगे। हम उनको भी बचावेंगे। सन्यासी तो कहते हैं कि आग-कपूस इकट्ठे नहीं रह सकते। तुम फिर रहकर दिखाओ। पुरुष में ताकत रहती है। चाहे तो, पत्नी को पवित्र रख सकते हैं।**

SM, Original 17.06.1967 (Page 2)
एक ही घर में एक हंस तो दूसरा बगुला। कोई तो फिर बड़े फर्स्ट क्लास भी होते हैं। अभी एक जोड़ी का स्वयंवर हुआ। बाबा ने तो पहली बार ही ऐसा देखा। **आपस में भाकी भी नहीं पहनी। जैसे बाजू में कोई सोते हैं। या तो कहते थे अलग जाकर सोवें।** शुरू से लेकर ही कितनी हिम्मत दिखाई है। कमाल है ना? ऐसे ही चलते रहें तो कितना ऊंचा पद पावेंगे। ऐसे भी बच्चे तो हैं ना? कोई तो देखो विकार के लिए कितना मारते, झगड़ा करते हैं। **अवस्था तो वह होनी चाहिए। भाई-बहन हैं ना, तो इकट्ठे सोना ही क्यों चाहिए? बाप हर प्रकार से राय देते रहते हैं।**

SM, Original 13.07.1967 (Page 1)
वास्तव में जो अंधे सूरदास हों, वो ज्ञान को अच्छी तरह उठा सकेंगे - क्योंकि उनके पास तो धोखा देने वाली आँखें नहीं हैं। भल वो और कुछ काम कर नहीं सकेंगे। **स्त्री को भी नहीं देखेंगे। दूसरे को देखेंगे तो उनकी बुद्धि जावेंगी - कि इनको छूवें, यह करें। मगर आँखें ही नहीं हैं तो देखेंगे ही कैसे? तो बाबा कितना समझाते हैं कि कर्मेंद्रियों को पक्का करना है। स्त्री को देखते हैं, तो दिल हो आती है कि इनको हाथ लगावें, यह करें, छूवें, ऐसा करें। तो यह सब नहीं होना चाहिए। यही है शत्रु। कोई-कोई तो बिल्कुल ही हाथ भी लगाने नहीं देते हैं। उस क्रिमिनल अर्थात् बुरी दृष्टि से बहन को नहीं देखना है।** भल भाई अपनी बहन को भाकी पहनते हैं - परंतु बहन के ही खयाल से। तुम भी तो बहन-भाई हो ना? बुरी दृष्टि का खयाल ना हो - जरा सा भी। भल आजकल तो कलियुग है। **भाई-बहन की भी बुरी नजर हो जाती है। वो भी खराब हो जाते हैं; परंतु लॉ मुआफिक भाई-बहनों की बुरी खयालात हो नहीं सकती है। हम बाप के बच्चे हैं। बाप डायरैक्शन देते हैं कि तुम ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ हो, तो यह ज्ञान हो जाता है कि तुम भाइ-बहन हो।**

SM, Original 19.11.1967 (Page 3)
अभी तुम समझते हो कि माया कितनी प्रबल है। कोई को भी ऐसे हरा लेती है - तो जो कि एकदम ही पट में पड़ जाते हैं। इसमें कम्पैनियन आदि की भी कोई बात नहीं है। हमको तो देह सहित ही सभी कुछ भूलना है। कुछ भी याद नहीं रहे - सिवाय एक बाप के। कम्पैनियन बनाया तो उसकी भी याद बैठ जावेगी। भूल नहीं सकेंगे। यहां पर तो बाप कहते हैं कि सब कुछ भूलते ही जाओ। पिछाड़ी में तो सहेली, कोई की भी याद नहीं रहे तो ही प्राण तन में से निकले। ईतनी उंची मंजिल है। **जरा भी याद आई तो रामचंद्र की तरह फेल हुआ।** बाप युक्तियां तो बहुत बताते हैं परंतु अमल में अभी नहीं लाते हैं।

SM, Original 20.11.1967 (Page 1)
सब ब्रहमा कुमार-कुमारियां भाई-बहन हैं। हम भगवान के सन्तान हैं, तो भाई-भाई हो गए। फिर प्रजापिता ब्रहमा के एडाप्टेड बच्चे भाई-बहन हुए। तुम्हारा सिर्फ यह एक ही सम्बंध है। बस। **भाई-बहन हो गए, तो कुदृष्टि वा क्रिमिनल आई रखना, क्रिमिनल एसॉल्ट (assault) हो जाता है। हम भाई-बहन हैं यह पक्का-पक्का याद रहे। इसमें ही मेहनत है। इस क्रिमिनल दृष्टि पर जो जीत पाते हैं वही स्कॉलरशिप (scholarship) पाते हैं;** विजय माला के दाने बनते हैं। यह डीटी किंगडम स्थापन हो रही है।

SM, Original 05.03.1968 (Page 2)
यह तो दिखाया है प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश करता हूँ तो ज़रूर एडॉप्शन चाहिए ना। तो ब्राह्मण तो हैं विकारी। निर्विकारी बनने में भी कितना सितम सहन करनी पड़ती है। **विष न मिलने से अपन को मारने लग पड़ते हैं कि विष दो, नहीं तो हम कूदते हैं। आँखों से यह नाम-रूप देखने से बहुतों को विकल्प आते हैं। भाई-बहन के सम्बन्ध में भी गिर पड़ते हैं। लिखते हैं – 'बाबा हमने काला मुंह कर दिया है'। भाई-बहन हो और काला मुँह कर दे, उनको तो जेल में डालना चाहिए। बाप ने कहा भाई-बहन हो रहो। तुमने यह ख़राब काम किया। इसकी बड़ी भारी सज़ा मिल जाती है। वैसे कोई दूसरे को ख़राब करते हैं, तो उनको जेल में डाल देते हैं।**

SM, Original 30.03.1968 (Page 1)
बाप कहते हैं - तुम काम विकार को अपना मित्र समझते हो। वह तो बड़ा भारी दुश्मन है। **बहुत हैं जो उनको मित्र समझते, बड़े ही धूम-धाम से कटारी चलाते हैं। उनका भी एक ऐसा चित्र बनाना चाहिए। कुमार और कुमारी दोनों के हाथ में काम कटारी देना चाहिए। वह उनके गले में, वह उनके गले में लगाते हैं।** फिर तुम समझाओ - बाप कहते हैं काम महाशत्रु है, और फिर तुम काम कटारी चलाते हो। **बाप ऑर्डीनेन्स निकालते हैं - उन पर जीत पहनो।** यह भी ड्रामा में नूँध है। बिचारों को पता ही नहीं है कि फैमली प्लैनिंग कैसे हो रहा है।

SM, Original 31.03.1968 (Page 3)
पहलवानों को पहलवान ही जानते हैं। यहां भी ऐसे ही हैं। महावीर बच्चियां भी हैं, बच्चे भी हैं। उनमें फिर भी नम्बरवार हैं। अच्छे महारथियों को फिर माया भी अच्छी तरह तूफान में लाती है। अनेक प्रकार के स्वप्न आदि तूफान आते हैं - जिसकी कोई कनैक्शन नहीं, वह भी बुद्धि में आ जावेगा। **बाबा समझाते हैं - भल माया कितना हैरान करे, तूफान लावे, तुम खबरदार रहना। कोई भी बात में हराना नहीं। मंसा में तूफान भल आवें, कर्मइन्द्रियों से न करना है। तूफान आते ही हैं गिराने लिए।** पहले-पहले तूफान तो इनको (ब्रह्मा को) ही आवेंगे। सबसे आगे है ना। ज़रूर इनको अनुभव होगा, तब तो औरों को समझा सकेंगे। लिखते हैं – 'बाबा यह होता है'। हां बच्चे, यह भिन्न-भिन्न प्रकार के तूफान आवेंगे। माया की खूब लड़ाई चलती है। लड़ाई न हो तो पहलवान कैसे बनेंगे? जब कोई कुस्ती लड़ी जाती है - बड़ों-बड़ों की होती है, तो बहुत मनुष्य देखने आते हैं। **माया की तूफान की परवाह नहीं करनी चाहिए; परन्तु चलते-चलते कर्मइन्द्रियों के वश हो झट गिर पड़ते हैं। फिर प्वाइन्ट तुम्हारे खाते बढ़ जाती है। बाप तो रोज समझाते हैं। कर्मइन्द्रियों से कोई विकर्म न करना; मुख से कुछ भी न करना। यहां तो बहुत बेकायदे चलन चलते हैं। समझाया जाता है - बेकायदे कर्तव्य करना छोड़ेंगे नहीं तो पाई-पैसे का पद पा लेंगे। अंदर में समझते हैं, हम नापास ही होंगे।**

SM, Original 07.09.1968 (Page 2)
माया बड़ी जबरदस्त है। बच्चे भी समझते हैं क्रिमनल आई बहुत धोखा देती है। **हम एक दो के सामने जाते हैं, तो भाई-बहन का वह जो डायरेक्शन मिला है, वह भी चल नहीं सकता। सिविल आई बदल कर क्रिमनल आई बन जाता है। जब क्रिमनल आई टूटकर पक्के सिविल आई बन जावेंगे, तब उसको कहा जाता है कर्मातीत अवस्था।** इतनी अपनी जांच करनी है। इकट्ठे रहते हुए, इकट्ठे सोते हुए, परन्तु विकार की दृष्टि न जाये। इस पर कहानी भी बनी हुई है। भल इकट्ठे सोये पड़े होंगे परन्तु बीच में ज्ञान तलवार होगी - हम भाई-बहन हैं। इस पर एक कहानी है। एक कुमारी मटका भरने जाती थी। वहाँ एक कुमार को कहा यह मटका हमारे सिर पर ऐसे रखो जो अंग, अंग से न मिले। हमारे अंग तुम्हारे अंग से न मिले। कहानी तो बहुत बनाई हैं, जो इस समय काम आती हैं। वह कहा, हम ऐसे ही मटका रखूँगा। अच्छा, फिर अनायास ही दोनों की सगाई हो गई। सगाई तो बिगर देखे ही कर लेते हैं। तो जब रात को एक दो को देखा तो कुमार ने कहा कुमारी तो वही - जिसने हमसे प्रण लिया था अंग, अंग से न मिले। बस वह प्रण याद आने से अलग-अलग ही सोये। प्रतिज्ञा की तलवार बीच में रखी। अंग न लगी। थोड़े दिन के बाद माँ-बाप ने पूछा। तो बोला, 'हमारा अंग, अंग से नहीं लगता है; क्योंकि हमारा ऐसे प्रण किया हुआ था'। ऐसी कुछ कहानी है। **यह भी ऐसे है ना। स्त्री-पुरुष इकट्ठे भी सोते हैं - परन्तु समझते हैं हमारी तो प्रतिज्ञा की हुई है अंग, अंग से न मिले। यहाँ तो बीच में ज्ञान तलवार है। वहाँ, उनकी थी प्रतिज्ञा की तलवार।**

SM, Original 07.09.1968 (Page 2 – continued)
यहाँ तुम भाई-बहन बनते हो। ज्ञान तलवार बीच में है। हमको तो पवित्र रहना है; परन्तु लिखते हैं - बाबा कशिश होती है। वह अवस्था अजन पक्की नहीं हुई है। कुछ न कुछ अंग लग जाता है। पुरुषार्थ करते रहते हैं - यह भी न हो। एकदम सिवील आई बन जाये, तब ही विजय पा सकते हैं। अवस्था ऐसी चाहिए जो कुछ भी संकल्प न उठे। उनको ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है।

103] **शिव बाप लिखवाते थे, ब्रह्मा बाबा लिखते थे**

SM, Original 24.05.1964 (Page 1) - Revised 23.05.2018
दिन-रात-दिन गुह्य से गुह्य सुनाते रहते हैं। नया कोई यह समझ न सके। **भल 25 वर्ष से रहते हैं - परन्तु बहुत हैं, इन गम्भीर बातों को समझते नहीं हैं।** रोज़ नया सुनाते रहते हैं। कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। **कराची से लेकर पहले बाबा मुरली चलाते नहीं थे, रात को 2 बजे उठकर 10-15 पेज लिखते थे, बाप लिखवाते थे। फिर उसकी कॉपियाँ निकलती थीं।** भक्तिमार्ग में तो शास्त्र आदि के कागज़ संभालते हैं। दिन-प्रतिदिन बड़े किताब बनाते जाते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं! वह फिर पढ़कर रखते हैं। **तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो, नहीं तो यह वर्शन्स (versions) रखने चाहिए हमेशा के लिए - परन्तु नहीं! जानते हैं, यह सब विनाश हो जाने हैं।** चित्र आदि भी - जो यह तुम बनाते हो, थोड़े समय के लिए हैं। फिर यह दब जावेंगे। वहाँ न शास्त्र, न चित्र आदि कब भी नहीं रहते। फिर यह जो कुछ चल रहा है, कल्प बाद भी होगा। शास्त्र आदि फिर द्वापर से शुरू होंगे, जिनके लिए बाप समझाते हैं - यह सब झूठे हैं।

SM, Revised 30.01.2020
भगवानुवाच - मैं तुम रूहानी बच्चों को राजयोग सिखा रहा हूँ। तो पूरी रीति सीखना चाहिए, धारणा करनी चाहिए। पूरी रीति पढ़ना चाहिए। पढ़ाई में नम्बरवार तो सदैव होते ही हैं। अपने को देखना चाहिए मैं उत्तम हूँ, मध्यम हूँ वा कनिष्ट हूँ? बाप कहते हैं अपने को देखो मैं ऊंच पद पाने के लायक हूँ? रूहानी सर्विस करता हूँ? क्योंकि बाप कहते हैं - बच्चे सर्विसएबुल बनो, फालो करो। **मैं आया ही हूँ सर्विस के लिए। रोज़ सर्विस करता हूँ इसलिए ही तो यह रथ लिया है। इनका रथ बीमार पड़ जाता है तो मैं इनमें बैठ मुरली लिखता हूँ। मुख से तो बोल नहीं सकते, तो मैं लिख देता हूँ। ताकि बच्चों के लिए मुरली मिस न हो - तो मैं भी सर्विस पर हूँ ना। यह है रूहानी सर्विस।**

105] गुप्त रूप में कामधेनु है ब्रह्मा बाबा - जो ब्रह्मा को नहीं मानते, वह हुआ शूद्र

SM, Original 12.03.1968 (Page 4)
ब्राह्मण बनने बिगर देवता कैसे बन सकते हैं? **बहुत हैं जो ब्रह्मा को ही नहीं मानते। डाइरेक्ट शिवबाबा से लेने चाहते हैं। मिलता कुछ भी नहीं।** बहुत हैं जो ब्रह्मा को नहीं मानते। कहते हैं हम तो शिवबाबा को ही याद करते हैं। छोड़ो ब्रह्मा को। **ऐसे भी हैं जो ब्रह्मा को नहीं मानते। वह हुआ शूद्र। शूद्र से तो संग भी नहीं, बात भी नहीं करनी चाहिए।** ईविल हैं ना? समझते हैं हमको डाइरेक्ट शिव से मिलता है। मिलेगा कुछ नहीं। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है ही ब्राह्मण कुल का। ब्राह्मण नहीं कहलायेंगे तो गोया शूद्र ही ठहरे। ब्राह्मण और शूद्र आपस में मिल न सकें। वह हंस, वह बगुला। **ब्राह्मण कुल में ही नहीं आया, तो हंस बन कैसे सकेंगे? कुछ भी समझते नहीं। भूले हुए हैं। देह अभिमानी हैं!**

SM, Revised 11.05.2020
जगत अम्बा नम्बरवन में जाती है (ब्रह्मा बाबा के साथ-साथ)। हम भी उनको फालो करेंगे। **जो बच्चे अभी मात-पिता (सरस्वती मम्मा और ब्रह्मा बाबा) के दिल पर चढ़ते हैं, वही भविष्य में तख्तनशीन बनेंगे।**

SM, Revised 27.04.2020
यह भी बच्चे जानते हैं, शिवबाबा तो है गुप्त। **इनका (ब्रह्मा बाबा का) भी किसको रिगार्ड थोड़ेही है। समझते हैं, हमारा तो शिवबाबा से कनेक्शन है। इतना भी समझते नहीं - शिवबाबा ही तो इन (ब्रह्मा बाबा) द्वारा समझाते हैं ना। माया नाक से पकड़ उल्टा काम कराती रहती है, छोड़ती ही नहीं।** राजधानी में तो सब चाहिए ना। यह सब पिछाड़ी में साक्षात्कार होंगे। सजाओं के भी साक्षात्कार होंगे।

SM, Revised 21.04.2020
ऊंच बनाने वालों का फिर रिगार्ड भी रखना होता है। देखो कुमारका है, वह सीनियर है, तो रिगार्ड रखना चाहिए। बाप बच्चों का ध्यान खिंचवाते हैं - जो बच्चे महारथी हैं, उनका रिगार्ड रखो। रिगार्ड नहीं रखते, तो अपने ऊपर पाप का बोझा चढ़ाते हैं। यह सब बातें बाप ध्यान में देते हैं। बड़ी खबरदारी चाहिए, नम्बरवार किसका रिगार्ड कैसे रखना चाहिए।

SM, Revised 17.01.2019
तो कितना मीठा बाबा है, जिसको अपने लिए कोई तमन्ना नहीं। ऐसे बाप को याद नहीं करते; **वा कोई कहे हम शिवबाबा को मानते हैं, ब्रह्मा बाबा को नहीं। परन्तु यह दोनों इकट्ठे हैं, बिगर दलाल सौदा हो न सके। बाबा का रथ है, इनका नाम ही है 'भाग्यशाली रथ'। यह भी जानते हो सबसे नम्बरवन ऊंचा है यह।** क्लास में मानीटर का भी मान होता है। रिगार्ड रखते हैं। नम्बरवन सिकीलधा बच्चा तो यह है ना। वहाँ भी सब राजाओं को इनका (श्री नारायण का) रिगार्ड रखना है। यह जब समझें तब रिगार्ड रखने का अक्ल आये। यहाँ जब रिगार्ड रखना सीखो, तब वहाँ भी रखो!

SM, Revised 25.05.2018
तुम बरोबर पाण्डव हो। शिवबाबा है रूहानी पण्डा। बच्चों को रूहानी यात्रा सिखलाने आया है। **इस ब्रह्मा तन से श्रीमत देते हैं। जैसे शिवबाबा की श्रीमत गाई हुई है, वैसे ब्रह्मा की भी गाई हुई है क्योंकि फिर भी शिवबाबा का एक ही मुरब्बी बच्चा है।** इस द्वारा कितने मुखवंशावली रचे जाते हैं।

SM, Revised 12.01.2018
तुम जानते हो हमारी सच्ची-सच्ची माता, कायदे अनुसार, यह ब्रह्मा है। यह भी समझना है। याद भी ऐसे करेंगे। **यह माता भी है, तो बाबा भी है। लिखते हैं, 'शिवबाबा, केयरआफ ब्रह्मा'। तो माता भी हो जाती है, तो पिता भी हो जाता। अब बच्चों को इस पिता की दिल पर चढ़ना है क्योंकि इनमें ही शिवबाबा प्रवेश होते हैं।** …

यह बड़ी गुह्य बात है, जो एक को ही 'माता-पिता' कहते हैं। यह बाप भी है, तो बड़ी माँ भी है। अब यह बाबा किसको माँ कहे? **यह माता (ब्रह्मा) अब किसको माँ कहे? इस माँ की तो माँ कोई हो नहीं सकती। जैसे शिवबाबा का कोई बाप नहीं, ऐसे इन्हें अपनी कोई माँ नहीं।** …
यह बड़ी माँ बैठी है, इनसे सर्टीफिकेट मिल सकता है। इस वन्डरफुल मम्मी को कोई मम्मी नहीं। जैसे उस (शिव) बाप को कोई बाप नहीं। फिर मम्मा (ओम राधे), फीमेल्स में, नम्बरवन है।

SM, Revised 17.10.2017
पहले ब्रह्मा को रचते हैं। ब्रह्मा का आक्यूपेशन अलग है। यह हर एक बात समझने की है। इनको 'त्वमेव माताश्च पिता..' कहा जाता है। तो वह निराकार है ना। तो साकार में मात-पिता चाहिए, तब पूछते हैं - मम्मा को माँ है? कहेंगे हाँ। **ब्रह्मा, मम्मा की भी माँ है। ब्रह्मा की कोई माँ नहीं। यह माँ (ब्रह्मा) फीमेल न होने कारण, सरस्वती को मम्मा कहते हैं।** …
तुम बच्चे ब्रह्मा का मर्तबा भी देख रहे हो कि यह सबसे जास्ती पढ़ता है। देखते हो, यह बरोबर नजदीक है। पहले किसके कान सुनते हैं? यह ब्रह्मा सबसे नजदीक है। तो कहेंगे कि मम्मा बाबा जास्ती पढ़ते हैं, फिर नम्बरवार सब बच्चे पढ़ते हैं।

SM, Revised 15.05.2017
जगत अम्बा कामधेनु का वर्णन तो है ही। **यह महिमा है जगत अम्बा की। वास्तव में, गुप्त रूप में, तो यह ब्रह्मपुत्रा नदी भी है। गाया भी जाता है, 'तुम मात पिता ..' - शिवबाबा ब्रह्मा के मुख कमल से बच्चे पैदा करते हैं। तो यह माता हो गई ना? यह हैं गुह्य बातें। यह बातें शास्त्रों में नहीं हैं।**